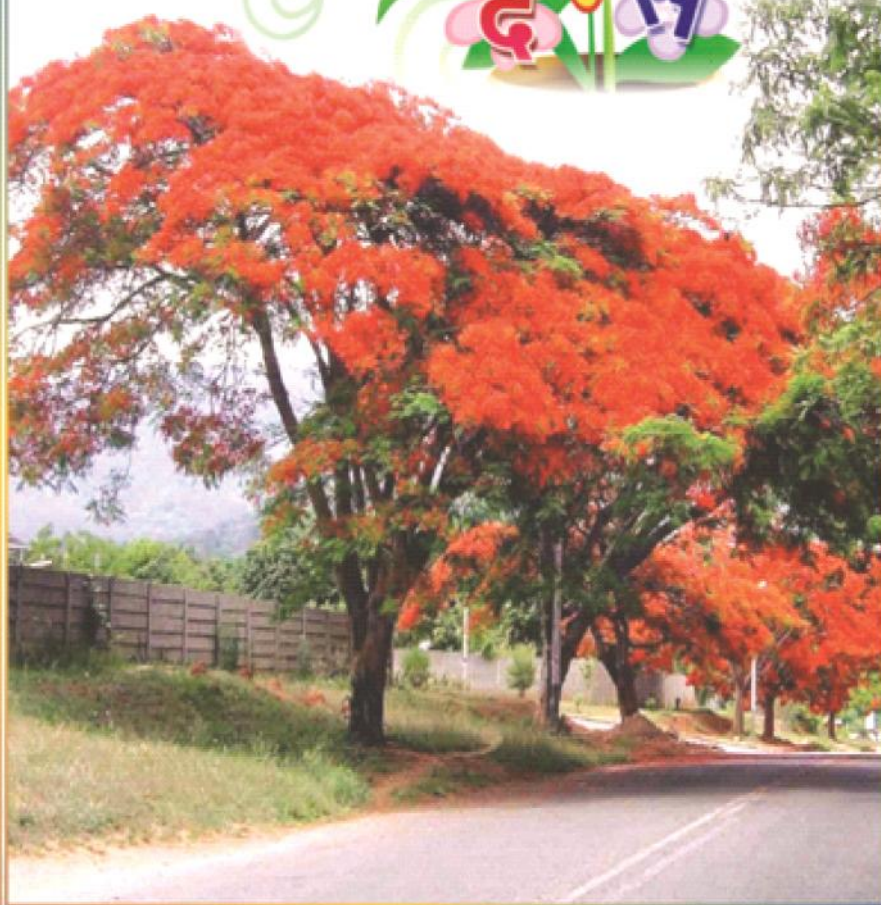


रेल रश्मि

अंक : 69, सितंबर 2015

हिंदी दिवस विशेषांक



पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका



23.07.15 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र साथ में मुराधि श्री ओ. पी. अग्रवाल व श्री पी.एन. राय, वरि. उपमहाप्र



21.07.15 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र साथ में मुराधि श्री ओ. पी. अग्रवाल व श्री अखिलेश कुमार सिंह, उपमुराधि



23.07.15 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में महाप्रबंधक महोदय से वर्ष 2014 में सर्वाधिक हिंदी प्रयोग के लिए इंजीनियरिंग विभाग के सामूहिक पुरस्कार प्राप्त करते श्री डी.के.सिंह, मुख्य सामान्य इंजीनियर



23.07.15 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में महाप्रबंधक महोदय से वर्ष 2014 में सर्वाधिक हिंदी प्रयोग के लिए लखनऊ मंडल के लिए सामूहिक पुरस्कार प्राप्त करते श्री सुरेश कुमार सपरा, अमीर व अपर मुराधि



23.07.15 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में महाप्रबंधक महोदय से वर्ष 2014 में सर्वाधिक हिंदी प्रयोग के लिए यात्रिक कारखाना/गोरखपुर के लिए सामूहिक पुरस्कार प्राप्त करते श्री सी.एम्. टी.डी.एल, उप मु.या.इंजी.



10.07.15 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते श्री ओ.पी.अग्रवाल, मुराधि साथ में श्री अखिलेश कुमार सिंह, उपमुराधि व श्री बी.दुर्गादत्त, वरिधि



मुख्य संपादक की कलम से....

हमारा समाज आज आत्मकेंद्रित होता जा रहा है जिसमें किताब-कॉपी साझा करके पढ़ने-लिखने की संस्कृति लुप्त हो रही है। किताब पढ़ने-पढ़ाने की संस्कृति को जिंदा रखने की नितांत आवश्यकता है। जीवन को समग्रता में बदलने का अभियान पुस्तकालय के रूप में ज्ञान का अलख जगाने का एक स्तुत्य प्रयास है। पढ़ने-लिखने की संस्कृति आंदोलित समाज में ही फलती-फूलती है। लेकिन आज जड़ होते समाज में इसका बीजारोपण भी जरूरी है।

साहित्य तो साहित्य होता है। न तो वह उर्दू होता है और न ही हिंदी या मराठी या गुजराती। इंसान जो ज़बान से बोलता है, वह साहित्य हो जाता है। जो इंसान जिंदगी जीता है, वही साहित्य है। जो ज़बान रोजी-रोटी से जुड़ती है, उसी ज़बान के मायने होते हैं। लोग एक-दूसरे पर रीब गाँठने के लिए अंग्रेजी का सहारा लेते हैं। वे यह दिखाते हैं कि उन्हें भी अंग्रेजी आती है। जबकि सत्य तो यह है कि मातृभाषा ही असली ज़बान है। हिंदी आम जनता की भाषा है और अपनी अपराजेय शक्ति के बल पर खड़ी है, आगे बढ़ रही है व विकास भी कर रही है। हिंदी की लड़ाई शब्दों के माध्यम से लड़ी जा रही है और यह सर्वविदित है कि शब्द केवल शब्द नहीं होते वे ब्रह्म होते हैं।

आइए, हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम राजभाषा हिंदी को पूरा सम्मान देंगे, क्योंकि हिंदी की उपेक्षा का अर्थ है स्वयं उपेक्षित रह जाना।

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ,

(ओ. पी. अग्रवाल)

मुख्य राजभाषा अधिकारी

रेल रश्मि

त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 69

सितंबर 2015

इस अंक में

संरक्षक:

राजीव मिश्र

महाप्रबंधक



मुख्य संपादक:

ओ. पी. अग्रवाल

मुख्य राजभाषा अधिकारी



उप मुख्य संपादक:

अखिलेश कुमार सिंह

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक:

वी. डुंगडुंग

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



सह संपादक:

ध्रुव कुमार श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी



उप संपादक व समस्त संपादन:

सुनील कुमार

वरिष्ठ अनुवादक



पता :

राजभाषा विभाग

मुकाबिले कार्यालय परिसर

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

टेलीफोन- 62852 एवं 62859 (रेलवे)

0551-2203396

ईमेल- senioroi9@gmail.com

विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
आपने लिखा है		3
भारत में राजभाषा की समस्या (आलेख)	राकेश त्रिपाठी	7
नई रचना की खेती का शहर (आलेख)	जगदीश नारायण श्रीवास्तव	14
कोठारी आयोग और मौजूदा भाषिक परिदृश्य (लेख)	डा. संजय कुमार सिंह	18
हिंदी वर्तनी की अशुद्धियाँ (लेख)	राजेंद्र कुमार	20
'कुरुक्षेत्र' की विचार-भूमि (आलेख)	डा. कृष्ण चंद्र लाल	23
राम के भरत (लेख)	कमल नयन पांडेय	26
राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की शक्ति एवं सीमा (लेख)	कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव	28
अपनों के बीच परायी हिंदी (लेख)	नीलम प्रभा श्रीवास्तव	32
देश को एकसूत्र में बाँधे हैं हिंदी (लेख)	राजीव शर्मा 'मासूम'	34
ब्राह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता (लेख)	सुनील कुमार	35
हिंदी टाइपिंग टूल: आईएमई (लेख)	श्याम बाबू शर्मा	38
यूनिकोड: एक परिचय (लेख)	सपना खरे	40
लघुकथाएँ	के. एल. पांडेय	43
दुर्घटना (तकनीकी)	नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव	44
स्टील चैनल स्लीपर का निरीक्षण (तकनीकी)	ए. के. सेनगुप्ता	46
पेपर लाइन क्लीयर टिकट वर्किंग (तकनीकी)	एन. के. सिन्हा	48
बत्तीस दाँतों की सेवा (चिकित्सा)	डा. प्रियंका यादव	50
औपचारिकता (कहानी)	सुनील श्रीवास्तव 'राज'	51
रहस्यमयी कड़ाही (कहानी)	श्रीरी निराजी	54
असली शेर (बाल कथा)	डा. जाकिर अली रजनीश	56
दूसरे कलाम की खोज (व्यंग्य)	रण विजय सिंह	58

कविता, गीत एवं ग़ज़ल

तीन कविताएँ	ई. गोविंद प्रसाद शुकल 'धुनी'	61
ग़ज़लें	प्रवीण कुमार सिंह	62
ग़ज़लें	सत्यनारायण त्रिपाठी	62
कविताएँ	अनिल कुमार दत्ता	63
कविताएँ	तारकेश्वर शर्मा 'विकास'	64
कविताएँ	दीनानाथ तिवारी	66
मुक्तक	चाँद 'शेरी'	67
कविताएँ	उमेश कुमार पटेल 'श्रीश'	68
गतिविधियाँ		69

निःशुल्क वितरण हेतु

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

◆ आपने लिखा है ◆

आम आदमी से जुड़े रचनाकार

‘रेल रश्मि’ पत्रिका का जून अंक देखने और पढ़ने का सुअवसर मिला। इस अंक में मुख्य संपादक श्री ओ.पी.अग्रवाल के विचारों की गहराई और संवेदनापूर्ण यह बातें पसंद आयीं कि रचनाकार को चाहिए कि वह आम आदमी की समस्याओं से गहराई के साथ जुड़े तथा रचनात्मक ऊर्जा का परिचय भी दे। इस दृष्टि से चंद्रशेखर गुप्त की कहानी ‘कबाड़ बीनने वाली’, सूर्या शेखर की नाटिका ‘बन गया काम’ सफल है। भूकंप से जुड़े लेख और रिपोर्टाज सामयिक हैं। रण विजय सिंह का व्यंग्य ‘उनका चाँद, मेरा चाँद’ पठनीय और पैना है। अन्य लेखों में ‘साँड़ बनिये’, ‘देवत्व’ और ‘मन की स्वच्छता’ पसंद आये। गोविंद प्रसाद शुक्ल, ए.के.दत्ता, यशवीर सिंह, ए.के.श्रीवास्तव, चंदेष्टवर की काव्य रचनाएँ भी अच्छी लगीं।

मोहम्मद इब्राहिम

सदस्य, उ.प्र.वालीबॉल एसो.

बढ़नी, सिद्धार्थ नगर

☎ संपर्क: 05543-66291

स्तुत्य प्रयास की बधाई

त्रैमासिक पत्रिका ‘रेल रश्मि’ के माध्यम से आप भारतीय संस्कृति, भारतीयता, राष्ट्रभाषा एवं समाज की जो सेवा कर रहे हैं, वह तो अत्यंत प्रशंसनीय है ही, हिंदी साहित्य को समृद्ध करने का एक स्तुत्य प्रयास भी है। एतदर्थ आपको, आपके सहयोगियों के सार्थक परिश्रम को बधाई।

जून अंक में प्रकाशित कई लेख अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं। ‘देवत्व: भावनात्मक उत्कृष्टता’ (सुनील कुमार) मनुष्य में देवत्व के संस्कार भरने में अनुषंगिक रूप से सहायक है तो पशुओं के द्वारा मनुष्य की प्राण रक्षा करने के उदाहरण प्रेरक। ‘अंबेडकर के मानवतावाद’ एवं ‘मन की स्वच्छता’, ‘पर्यावरण असंतुलन’ की समस्या से जागरुकता का संदेश मिलता है। हास्य नाटिका ‘बन गया काम’ (सूर्या शेखर) तथा व्यंग्य ‘उनका चाँद, मेरा चाँद’ (रण विजय सिंह) मनोरंजक होने के साथ ही सोद्देश्य और शिक्षाप्रद हैं। दीनानाथ तिवारी, चंदेष्टवर,

ए.के.श्रीवास्तव, ए.के.दत्ता, बाबूलाल शर्मा, यशवीर सिंह की रचनाओं का कथ्य और काव्य-सौंदर्य पसंद आया। इस बार का मुखपृष्ठ ‘सोबर’ है।

अरुण कुमार मिश्र

राजभाषा विभाग

भारतीय जीवन बीमा निगम

तारामंडल मार्ग, गोरखपुर (उ.प्र.)

वैविध्यपूर्ण एवं पठनीय सामग्री

आपकी त्रैमासिक पत्रिका ‘रेल रश्मि’ का जून 2015 अंक भी सदैव की भाँति रोचक, उद्देश्यपूर्ण और पारिवारिक मनोरंजन से भरपूर रहा। इस अंक में प्रकाशित लेखों में पर्याप्त विविधता है जिससे सामग्री चयन में आपकी दृष्टि का परिचय मिलता है। इस पत्रिका के माध्यम से आप राष्ट्रभाषा एवं हिंदी साहित्य जगत की समुचित सेवा कर रहे हैं। नवीनतम अंक में भाई रण विजय सिंह का पैना व्यंग्य ‘उनका चाँद, मेरा चाँद’ तथा सूर्या शेखर का एकांकी ‘बन गया काम’ बहुत खूब रहे। अन्य लेखों में ‘देवत्व’ (सुनील कुमार) ‘पर्यावरण असंतुलन’ (के.के.यादव), ‘कबाड़ बीनने वाली’ (चंद्रशेखर गुप्त), ‘साँड़ बनिये’ (शिवेंद्र मिश्र) पठनीय और रोचक हैं।

कविताओं में चंदेष्टवर शर्मा, दीनानाथ तिवारी, अनिल कुमार दत्ता, ए.के.शर्मा की रचनाएँ पसंद आयीं। इन दिनों आप हिंदी महोत्सव की सामग्री चयन में व्यस्त होंगे। इसकी शुभकामनाओं सहित

सुरेंद्र जायसवाल

भूतपूर्व उप सभापति

नगर निगम, गोरखपुर-273001

☎ संपर्क: 9839962734

उच्च कोटि के आलेख

आपके द्वारा प्रेषित ‘रेल रश्मि’ के तीनों अंक 66, 67 तथा 68 प्राप्त हुए। इन अंकों में छपी कविताएँ एवं समस्त आलेख उच्च कोटि के हैं जो जन-साधारण का भरपूर ज्ञानवर्द्धन तथा मनोरंजन करते हैं। मैं आपको इसके लिए बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसीतरह यह पत्रिका ज्ञानवर्द्धन करती

रहेगी। राष्ट्रभाषा हिंदी विशेषांक के लिए अमित बधाइयाँ स्वीकार करें।

एम. प्रसाद 'मधुप'

(अ.प्रा.)सहा.महाप्र.भारतीय स्टेट बैंक

31, स्टेट बैंक कालोनी

अधियारी बाग, गोरखपुर (उ.प्र.)

जानकारियों से भरपूर

'रेल रश्मि' के जून अंक में अनेक लेख सम-सामयिक और अत्यंत ही रोचक जानकारियों से भरपूर हैं। इनमें 'देवत्व' (सुनील कुमार), 'पर्यावरण असंतुलन' (के.के.यादव), 'जानवर भी करते हैं सेवा' (महेंद्र सिंह शोखावत), 'छोटी सी भूल' (सुशील कुमार) पठनीय हैं। इस अंक में हास्य झलकी 'बन गया काम' को आसानी से बच्चों के द्वारा मंचित किया जा सकता है। इसके लिए एकांकीकार सूर्या शोखर को बधाई। रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'उनका चाँद, मेरा चाँद' जमीन और आसमान (फर्छा से अर्छा तक) की दूरियाँ मापने में समर्थ हैं।

काव्य खंड में यशवीर सिंह, चंदेष्टवर शर्मा, बाबूलाल शर्मा, ए.के.दत्ता, शशि किरण की रचनाएँ अपनी रचनात्मक क्षमता को पुष्ट करने में सफल हैं।

आर.पी.सिंह

प्रभारी सिटी डेस्क

'आज' दैनिक, बैंक रोड

गोरखपुर-273001(उ.प्र.)

☎ संपर्क: 9451190209

नियमित, मनोरंजक, शिक्षाप्रद

पूर्वोत्तर रेलवे के राजभाषा विभाग की पत्रिका का नियमित प्रकाशन देखकर अतीव हार्दिक प्रसन्नता हुई। इसके माध्यम से आप लोग वास्तव में राष्ट्रभाषा एवं हिंदी साहित्य संसार की पर्याप्त सेवा कर रहे हैं जो विशेष रूप से सराहनीय है। आपके कर्मठ सहयोगियों को बधाई।

जून अंक में 'देवत्व एक भावनात्मक उत्कृष्टता' (सुनील कुमार), 'भूकंप से क्षति'(संतोष पासवान) एवं रिपोर्ताज 'सहायतार्थ रेलवे के कदम' (आलोक कुमार सिंह) समेत 'बन गया काम' (सूर्या शोखर) और रण विजय सिंह की पैनी व्यंग्य रचना 'उनका चाँद, मेरा

चाँद' मनोरंजक, शिक्षाप्रद और पठनीय रहे। गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी' की लंबी कविता 'आग से बचाव' समेत ए.के.दत्ता, बाबूलाल शर्मा, चंदेष्टवर शर्मा, ए.के.श्रीवास्तव की कविताएँ हृदय को छू गयीं।

अशोक गुप्ता

इंटरनेशनल कमेंटेटर एवं खेल समीक्षक

विधि सलाहकार ऑल इंडिया वालीबॉल टूर्नामेंट

बढ़नी, सिद्धार्थ नगर(उ.प्र.)

पाठकों के हित में परिश्रम

पूर्वोत्तर रेलवे मुख्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'रेल रश्मि' का 68वाँ पुष्प (जून/2015) देखने-पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस अंक के अवलोकन-अध्ययन-मनन से स्पष्ट हुआ कि आप राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा के लिए अपने सहयोगियों समेत पाठकों के हित में कितना परिश्रम कर रहे हैं।

पत्रिका के नवीनतम अंक में सूर्या शोखर की हास्य-नाटिका 'बन गया काम' तथा रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'उनका चाँद, मेरा चाँद' विशेषरूप से रोचक, पठनीय होने के साथ ही खूब हास्य-विनोद की छटा बिखरने में सफल हैं तो शिवेंद्र मिश्र की व्यंग्य रचना 'मलाई खाइये' भी पैनापन लिए है। अन्य लेखों में 'देवत्व: भावनात्मक उत्कृष्टता' (सुनील कुमार), 'पर्यावरण असंतुलन'(के.के.यादव), 'जानवर भी करते हैं सेवा' (महेंद्र सिंह शोखावत), 'माँ के दिल की आह'(एम.वाई. फारूकी) तथा 'भूकंप से क्षति' (संतोष पासवान) सामयिक और उपयोगी होने के साथ ही मनन करने योग्य हैं।

काव्य खंड में ए.के.दत्ता, दीनानाथ तिवारी, चंदेष्टवर शर्मा, ए.के.श्रीवास्तव, यशवीर सिंह, बाबूलाल शर्मा 'प्रेम' की रचनाएँ पसंद आयीं।

मुकेश प्रधान

कार्याधी, मु.परि.प्र.कार्यालय

गोरखपुर-273012 (उ.प्र.)

☎ संपर्क: 9336413985

मनोरंजक एवं मनन करने योग्य

'रेल रश्मि' पत्रिका का 68वाँ अंक (जून 2015) हस्तगत हुआ। इस अंक में मुख्य रूप से रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'उनका चाँद, मेरा चाँद'

तथा शिवेंद्र मिश्र का व्यंग्य 'मलाई खाइये' समेत सूर्या श्रोखर की हास्य नाटिका 'बन गया काम' बहुत ही मनोरंजक रहे। अन्य लेखों एवं कहानियों में गंभीरता और सम-सामयिकता की झलक मिली। इनमें भूकंप से संबंधित लेख विशेष ज्ञानवर्द्धक रहे। 'जरा सोचिये' (नीलम प्रभा), 'देवत्व' (सुनील कुमार), 'मन की स्वच्छता' (हरगोविंद लाल) मनन करने योग्य हैं।

काव्य खंड में गोविंद प्रसाद शुक्ल, यशवीर सिंह, ए.के.दत्ता, चंदेष्टवर शर्मा, ए.के.श्रीवास्तव की रचनाओं ने ध्यान आकृष्ट किया और मनोरंजन के उद्देश्य में सफल रहीं।

दुर्गेष्ट चंद्र ओझा

सी-117/127

जगन्नाथपुर, गोरखपुर

☎ संपर्क: 9415456003

सार्थक, कर्मठतापूर्ण प्रस्तुति

हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी अत्यंत ही सहज, बोधगम्य और सरल होने के साथ ही वैज्ञानिक भी है। वर्तनी के लिहाज से जो बोला जाता है, उच्चारण के अनुसार वही लिखा भी जाता है। ऐसी पारदर्शी व्यवस्था के साथ निरूपण करने वाली भाषा विश्व में कदाचित् ही कोई अन्य भाषा हो। आप अपनी पत्रिका 'रेल रश्मि' के माध्यम से अपने कर्मठ सहयोगियों के साथ राष्ट्रभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार में सतत् कार्य कर रहे हैं, यह भावना और सार्थक कर्मठतापूर्ण परिश्रम निष्ठचय ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका के जून अंक में भी हमेशा की तरह पूरे परिवार के सार्थक मनोरंजन का भरपूर ध्यान रखा गया है। कई उपयोगी जानकारियाँ देने वाले अच्छे और उद्देश्यपरक लेख भी हैं जिनमें 'देवत्व' (सुनील कुमार), 'पर्यावरण असंतुलन' (के.के.यादव) 'भूकंप से क्षति' (संतोष पासवान) एवं 'रेलवे द्वारा भूकंप पीड़ितों को मदद' पर रिपोर्ट सोद्देश्य एवं सामयिक हैं। सूर्या श्रोखर का एकांकी 'बन गया काम' और आदरणीय रण विजय सिंह का व्यंग्य 'उनका चाँद, मेरा चाँद' की विशेष प्रशंसा है। कविताएँ भी रोचक व पठनीय हैं।

रामाश्रय यादव

सी.टी.टी.आई.

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

☎ संपर्क: 9532520569

सार्थक सेवा

'रेल रश्मि' के मार्च एवं जून अंक को देखने-पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं कोई साहित्यकार अथवा साहित्य-सेवी तो नहीं, किंतु साहित्यानुरागी सामान्य पाठक अवश्य हूँ। आप 'रेल रश्मि' के माध्यम से राष्ट्रभाषा की अत्यंत ही महत्वपूर्ण और सार्थक सेवा कर रहे हैं। बधाई!

बहुत दिनों के बाद जून अंक में एकांकी पढ़कर बेहद अच्छा लगा। यह नाटिका 'बन गया काम' (सूर्या श्रोखर) मेरे पड़ोस के प्राथमिक विद्यालय में बच्चों ने प्रस्तुत करके मंचन का भरपूर आनंद प्राप्त किया। रण विजय सिंह का व्यंग्य 'उनका चाँद, मेरा चाँद' (जून अंक) एवं 'अवतार बनने की संभावना' (मार्च अंक) खूब धारदार रहे। अन्य लेखों में 'देवत्व: एक उत्कृष्टता' (सुनील कुमार), 'अंबेडकर का मानववाद' (राजेश हजेला), स्वच्छता, पर्यावरण असंतुलन और कहानियाँ पसंद आयीं। दोनों अंकों की कई कविताएँ पठनीय और रोचक हैं। विशेष रूप से चंदेष्टवर शर्मा, बाबूलाल शर्मा, ए.के.दत्ता, दीनानाथ तिवारी, ओमप्रकाश पांडेय इत्यादि। इन दिनों तो आप अपने सहयोगियों समेत हिंदी विशेषांक के लिए व्यस्त होंगे। एतदर्थ शुभकामनाओं सहित

मोरार जी श्रीवास्तव

मंडल सचिव, पंजाब नेशनल

बैंक आफिसर्स एसोसिएशन

गोरखपुर-273001 (उ.प्र.)

☎ संपर्क: 9450882600

भारत माता के केसरिया एवं स्वच्छ ललाट की शोभा है राष्ट्रभाषा हिंदी। बिंदु तक की महत्ता को स्वीकारने वाले हिंदी की बिंदी भारत माता के मस्तक पर सदैव सुशोभित रहेगी। इसके व्यापक प्रचार-प्रसार में पूर्वोत्तर रेलवे अपने राजभाषा विभाग की पत्रिका 'रेल रश्मि' के माध्यम से इसी तरह से सार्थक योगदान जो करती रहती है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे राजभाषा को मजबूती मिलने के साथ ही साहित्य भी समृद्ध होता है।

'रेल रश्मि' के जून अंक में रूटीन टाइप लेखों के बीच एकांकी नाटिका 'बन गया काम' (सूर्या श्रोखर) व्यंग्य 'उनका चाँद, मेरा चाँद' (रण विजय सिंह), 'मलाई खाइए' (शिवेंद्र मिश्र) प्रशंसनीय हैं तो 'देवत्व की उत्कृष्टता' (सुनील कुमार), 'मन की स्वच्छता'

(हरगोविंद लाल), 'जरा सोचिये' (नीलम प्रभा) पठनीय और प्रेरक। इसी अंक में बाबूलाल शर्मा, यशवीर सिंह, सुजष्टा कुमार शर्मा, ए.के.दत्ता, चंदेष्टवर शर्मा की रचनाएँ भी रोचक लगेंगी।

कपिलदेव मणि त्रिपाठी
सेवानिवृत्त फार्मासिस्ट
सूर्यविहार कालोनी, गोरखपुर
☎ संपर्क: 9984075636

रचनाकारों को करना होगा सार्थक परिश्रम

वर्तमान में मुख्य संकट अभिव्यक्ति का है। रचनाकार अपने-आप में खोया हुआ है और जन-सामान्य तक पहुँचने के लिए अपनी ओर से कोई सार्थक प्रयत्न कम ही करता है। ऐसे में मुख्य संपादक श्री अग्रवाल ने रचनाकारों से जो आह्वान किया है, वह साहित्य-सेवियों

को वास्तव में एक नई दृष्टि देगा।

'रेल रश्मि' पत्रिका के जून अंक में सुनील कुमार का लेख 'देवत्व एक भावनात्मक उत्कृष्टता', रण विजय सिंह का 'उनका चाँद, मेरा चाँद', सूर्या श्रेष्ठ का एकांकी 'बन गया काम' और स्वच्छता तथा भूकंप से संबंधित सामग्री पठनीय, सामयिक और अच्छी लगी। दीनानाथ तिवारी, ए.के.श्रीवास्तव, ए.के.दत्ता, बाबूलाल शर्मा की कविताएँ प्रशंसनीय रहीं।

जगदीश चंद्र श्रीवास्तव
सचिव, प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक
जर्नलिस्ट एसोसिएशन
गोरखपुर (उ.प्र.)
☎ संपर्क: 9696706842



राजभाषा विकास का सांविधिक निदेश

संविधान का अनुच्छेद-351

‘संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।’

◆ आलेख ◆
भारत में राजभाषा की समस्या
 राकेष्ठ त्रिपाठी

मनुष्य एक सामाजिक

प्राणी है, वह अपने विचारों एवं भावों को व्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। भाषा के द्वारा ही वह समाज में सामंजस्य स्थापित करता है। किसी भी राज्य के अस्तित्व के लिए तीन आवश्यक अवयव हैं—

1. भू-भाग 2. शासन व्यवस्था एवं 3. भाषा।

इस संबंध में सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि गया प्रसाद शुकल सनेही की ये पंक्तियाँ उद्धरणीय हैं—

‘जिसको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है,
 वह नर नहीं है, पशु निरा है और मनुष्य सामान है।’

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा था ‘कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।’ 05 जुलाई 1928 को यंग इंडिया में महात्मा गाँधी ने लिखा— ‘यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा का दिया जाना बंद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएँ अपनाने के लिए मजबूर कर देता। जो आना-कानी करते उन्हें बर्खास्त कर देता। मैं पाठ्य पुस्तकें तैयार किए जाने तक इंतजार नहीं करता।’ भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भी लिखा है— ‘निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।’

स्मरणीय है कि भारत में हिंदी का विकास संस्कृत से विकसित प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, खड़ी बोली से हुआ। उत्तर भारत में अपभ्रंश से विकसित ‘अवहट्ट’ एवं ‘पिंगल’ से एक नई भाषा का विकास हुआ जिसे क्रमशः ‘हिंदुई’ ‘हिंदवी’ ‘जबाने-ए-हिंदी’ एवं अंततः ‘हिंदी’ के नाम से जाना गया। लगभग इसी कालखंड में अन्य क्षेत्रीय भाषाओं कन्नड़, तेलुगू, बंगला आदि का भी विकास हुआ। इसके बाद राजनीतिक परिदृश्य में विदेशी प्रभाव के कारण यह स्थान क्रमशः अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी को प्राप्त हुआ। राजर्षि टंडन जी ने हिंदी के बारे में एक बार कहा था— ‘सम्मेलन हिंदी को राष्ट्रभाषा मानता है।’

स्वाधीनता के आंदोलन के दौरान हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित हुई। शासन-प्रशासन द्वारा उपेक्षित हिंदी ने भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं महामना मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में अपनी अस्मिता का संघर्ष

छेड़ दिया। भारतेंदु युग और द्विवेदी युग में हिंदी निरंतर विकसित हुई। कबीर की उक्ति है— ‘संस्कीरति कूप जल भाषा बहता नीर।’ केशव दास की भाषिक क्रांति विमोक्ष उल्लेखनीय है। केशव के हृदय ने स्वीकारा—

‘भाषा बोलि न जानहीं जिनके कुल के दास

तिन्ह भाषा कविता करी जड़मती केशवदास।’

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का मत था— ‘यदि हम लोगों ने मन से प्रयत्न किया, तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिंदी।’ सबसे पहले स्वामी दयानंद एवं गाँधी जी ने राष्ट्र को एकजुट रखने वाली हिंदी की अपरिहार्यता को महसूस किया। गाँधी जी के लिए तो हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न ही बन गया। उन्होंने अपने ‘स्वदेशी के ग्यारह सूत्रों’ में हिंदी को एक सूत्र के रूप में रखा। ‘अहिंदी भाषी क्षेत्र के होते हुए भी नेताजी सुभाष चंद्र बोस, गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, लोकमान्य तिलक आदि राष्ट्रभाषा हिंदी के कट्टर समर्थक थे।

राजभाषा का अर्थ है राजा या राज्य की भाषा— वह भाषा जिसमें शासक या शासन का काम होता है और राष्ट्रभाषा वह है जिसका व्यवहार राष्ट्र के सामान्य जन करते हैं। राजभाषा का प्रयोग क्षेत्र सीमित होता है, जैसे— वर्तमान काल में भारत सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के व्यवसायों के अतिरिक्त कुछ प्रदेशों, उदाहरणार्थ— हरियाणा, उ.प्र., म.प्र., बिहार, राजस्थान, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश में राजकाज हिंदी में होता है। तमिलनाडु, बंगाल, महाराष्ट्र या आंध्र प्रदेश की सरकारें अपनी-अपनी भाषा में कार्य करती हैं, हिंदी में नहीं।

जबकि राष्ट्रभाषा का क्षेत्र विस्तृत और देशव्यापी होता है। राष्ट्रभाषा सारे देश की संपर्क भाषा है। राष्ट्रभाषा के साथ जनता का भावात्मक लगाव होता है क्योंकि इसके साथ जन साधारण की सांस्कृतिक परंपराएँ जुड़ी रहती हैं। राजभाषा के प्रति वैसा सम्मान हो तो सकता है, लेकिन नहीं भी हो सकता है, क्योंकि वह अपनी देश की भी हो सकती है, किसी गैर देश से आये शासक की भी हो सकती है। वास्तव में, देश की संस्कृति से राजभाषा का कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। राष्ट्रभाषा या

संपर्क भाषा सदा कोई स्वदेशी भाषा ही होगी।

ध्यातव्य है कि राजभाषा की अभिव्यक्ति सीमित विषयों तक होती है। मसलन- ग्रासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका आदि तक। और यह अभिव्यक्ति क्रमशः रूढ़ और रूक्ष हो जाती है। इसमें लालित्य, मुहावरेदारी या छौली वैविध्य का कोई स्थान नहीं होता है। हर दफ्तर की बनी-बनायी शब्दावली है, वाक्यों का एक ढर्रा है। जबकि राष्ट्रभाषा का संबंध जीवन के प्रत्येक पक्ष से होता है।

लेकिन इसका आशय यह नहीं है कि राजभाषा और राष्ट्रभाषा में परस्पर कोई लगाव नहीं है। सच तो यह है कि राजभाषा राष्ट्रभाषा पर अपना प्रभाव डालती है। कारण यह है कि जो भी भाषा राजभाषा के पद पर आसीन होती है लोग उसी में शिक्षा पाना आवश्यक समझते हैं। रोजी-रोटी, सामाजिक प्रतिष्ठा और भौतिक लाभ के लिए युवा वर्ग में उसी भाषा का बोलबाला होता है। ग्रासन की भाषा का अनुकरण होने लगता है। कचहरी और सरकारी कार्यालयों में संपर्क रखने वाले लोगों के द्वारा वही भाषा जनसाधारण में प्रचलित होती है। मध्य युग में फारसी का और आधुनिक युग में अंग्रेजी का हिंदी पर जो प्रभाव पड़ा है और आज भी पड़ रहा है, वह सर्वविदित है।

व्यापक प्रयोग एवं जन-लोकप्रियता के कारण हिंदी भारत की स्वयंसिद्ध राष्ट्रभाषा है। संविधान के अनुसार वह राजकाज की भाषा अर्थात् राजभाषा भी है परंतु राजनीति के छलछंद की धूलि में उसकी छवि धूमिल हो गई है और भारत की राजभाषा का प्रश्न विवादग्रस्त बना हुआ है। अंग्रेजी के वर्चस्व एवं भाषायी कूटनीति के कारण अकेली हिंदी ही क्यों, भारत की अन्य राज्यभाषाएँ (उपभाषाएँ) विकसित नहीं हो पा रही हैं और न वे शिक्षा का माध्यम बन पाई हैं। मध्यकाल में महाप्रभु बल्लभाचार्य ने भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए हिंदी को माध्यम बनाया, तदुपरांत भारत के कोने-कोने में वैदिक संस्कृति का संदेश पहुँचाने के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिंदी को अपनाया। स्वतंत्रता आंदोलन में लोकमान्य तिलक एवं महात्मा गाँधी ने हिंदी के व्यापक प्रचार एवं प्रभाव को देखकर राजनीतिक चिंतन को जनता तक पहुँचाने के लिए हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बनाया, बल्कि यह

आवाज भी लगाई कि वे जनता के दुष्टमन हैं जो अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दे रहे हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तथा इंडियन नेशनल कांग्रेस की रणनीति हिंदी को राजभाषा बनाने का एक बहुत महत्वपूर्ण नारा था। स्वतंत्रता आंदोलन का कोई भी नेता हिंदी का विरोधी नहीं था। वे जानते थे कि केवल हिंदी के माध्यम से ही स्वतंत्रता का महत्व जनता तक पहुँचाया जा सकता था। पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे पश्चिम-परस्त व्यक्ति ने भी हिंदी के राष्ट्रीय स्वरूप को समझा था और अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिए हिंदी में भाषण करना सीख लिया था। भारत के स्वतंत्र होते ही हिंदी का विरोध किया जाने लगा। हिंदी को राजभाषा का पद देने के साथ ही उसके साम्राज्य स्थापन संबंधी आशंकाएँ प्रकट की जाने लगीं। संविधान में हिंदी को राजभाषा बनाते समय अहिंदी भाषा-भाषियों को अनेक सुविधाएँ दी गईं, अनेक आश्वासन दिए गए और फिर भी उसका संवैधानिक रूप इस प्रकार स्वीकार किया गया जो अनंतकाल तक संदेह और विवाद का प्रश्न बना रहे। देश के स्वतंत्र होने के अनंतर संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी 26 जनवरी 1950 के दिन संघ की राजभाषा स्वीकार की गई, परंतु उसी के साथ अनुच्छेद 343(2) के अनुसार आगामी 15 वर्षों तक हिंदी के साथ अंग्रेजी का योग पूर्वतः चालू रहने का प्रावधान किया गया। अनुच्छेद 343 (3) में संसद को उक्त अवधि के बाद भी अंग्रेजी के प्रयोग को प्राधिकार करने हेतु विधि निर्माण का अधिकार दिया गया है। आशा बँधी थी कि 26 जनवरी 1965 के बाद हिंदी को उसका स्वत्व प्राप्त हो जाएगा, परंतु इस बीच में भाषाई प्रांतों के निर्माण की राजनीति चली और उसके घटाटोप में राष्ट्रीयता की भावना तथा उस भावना को बाँधने वाले हिंदी के सूत्र की उपेक्षा हो गई। हिंदी इस देश की राजभाषा कभी न हो, इसके लिए अंग्रेजी के पक्षधर तरह-तरह की आपत्तियाँ उठाते रहे यथा- हिंदी का शब्द भंडार अपर्याप्त है, उसमें वैज्ञानिक विषयों पर ग्रंथ उपलब्ध नहीं है, उसको राजभाषा बनाने पर अहिंदी भाषा-भाषियों को सरकारी नौकरियाँ मिलने में बहुत कठिनाई होगी आदि।

1955 में बी.जी.खेर की अध्यक्षता में गठित प्रथम राजभाषा आयोग की रिपोर्ट के अनुसार तथा अनुच्छेद

343 (3) के अधीन केंद्रीय गृह मंत्रालय ने दो राजभाषा अधिनियम (राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967) बनाए। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(1) के अधीन हिंदी के साथ अंग्रेजी को सह-भाषा के रूप में प्रचलित रखने का प्रावधान किया गया, इसके फलस्वरूप यह दुखद स्थिति बन गई कि पहले हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी को प्रचलित रखने की 15 वर्ष की अवधि निश्चित की गई थी, अब सहभाषा के रूप में उसके प्रयोग की अवधि अनिश्चितकालीन कर दी गई। अंग्रेजी को अनंतकाल तक चलते रहने की फ्री छूट दे दी गई। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(1) के अनुसार यह भी प्रावधान किया गया कि जब तक भारत की एक भी राज्य की सरकारें हिंदी को अपने राज्य की राजभाषा स्वीकार करने में संकोच करेगी तब तक हिंदी पूरे संघ की राजभाषा नहीं हो सकेंगी। इस प्रावधान द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा बनने की संभावना को सदा सर्वदा के लिए नकार दिया गया क्योंकि तमिलनाडु जैसे राज्य तो वेसे ही हिंदी के विरोधी हैं, नागालैंड जैसा छोटा राज्य अंग्रेजी को ही राजभाषा स्वीकार कर चुका है। अतः उससे हिंदी के पक्ष में निर्णय की आशा कभी नहीं करनी चाहिए।

पुनः राजभाषा नियम 1976 के तहत हिंदी के साथ अंग्रेजी में कामकाज संबंधी प्रावधान को जारी रखा गया। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है तथा अनुच्छेद 343(2) के अंतर्गत संविधान के प्रारंभ में 15 वर्ष की अवधि तक अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखा गया है। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(1) के अधीन हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रयोग को राजकीय प्रयोजनों के लिए जारी रखने का प्रावधान है तथा अधिनियम की धारा 3(5) में यह प्रावधान है कि अंग्रेजी का प्रयोग तब तक जारी रहेगा जब तक भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मंडलों द्वारा जिन्होंने हिंदी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर लिए जाते तब तक उन संकल्पों पर विचार कर लेने के पष्ठचात् ऐसी समाप्ति हेतु संसद के दोनों सदनों द्वारा संकल्प नहीं कर दिया जाता, इन व्यवस्थाओं के अंतर्गत संघ का समूचा कामकाज हिंदी के माध्यम से किए जाने की कोई अवधि निश्चित नहीं की

जा सकती।

सारांश यह है कि हिंदी विरोधी राज्यों को वीटों का अधिकार प्राप्त है और हिंदी की वर्तमान संवैधानिक स्थिति के होते हुए हिंदी संघ के कामकाज की राजभाषा बने इसकी संभावना अति क्षीण है। भारतीय भाषा और विशेषकर राष्ट्रभाषा का प्रयोग न करके हमारे देशवासी अपने शिक्षित होने का दावा पेष्ट करते हैं और चाहते हैं कि हमें कोई भारतीय अथवा Indian न समझ ले। किस देश के नाम पर अपनी पहचान की जाए यह एक प्रश्न चिह्न है। अपनी भाषा, स्वतंत्रता और स्मिता की पहचान होती है। भाषाई प्रेम, दृष्टिकोण एवं व्यक्तिगत विकास कौन सी दिशा प्रदान कर देता है इसको समझने के लिए फ्रांस की बालिका का अधोलिखित उदाहरण पर्याप्त होना चाहिए— ‘जर्मन सेना ने कई फ्रांसीसी क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। जर्मन छासकों ने सुनियोजित ढंग से फ्रेंच भाषा का उन्मूलन करने के लिए जर्मन भाषा को अधि कक्ष क्षेत्र के निवासियों पर लादना शुरू कर दिया। आदेश कर दिया कि सब दुकानदार अपने नाम-पट्ट जर्मन भाषा में लिखें, स्कूल-कालेजों में फ्रेंच की जगह जर्मन को शिक्षा का माध्यम बना दिया गया।’

एक दिन जर्मनी की रानी कैथरिन एक स्कूल का निरीक्षण करने गईं। एक 12 वर्षीय बालिका द्वारा बनाई गई कलाकृति को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुईं। रानी ने कहा— ‘तुम बहुत प्रतिभावान हो। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ तुम मुँहमांगा ईनाम पाओगी इनाम के रूप में जो चाहो सो मांग लो।’

फ्रांसीसी बालिका ने उत्तरस्वरूप निवेदन किया— ‘रानी साहिबा यदि आप प्रसन्न होकर वास्तव में मुझे मुँह मांगा ईनाम देना चाहती हैं, तो मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी मातृभाषा मुझे लौटा दें।’ रानी कैथरिन बालिका की भाषा-प्रेम को देखकर दंग रह गईं। उन्होंने आदेश दे दिया कि जर्मन के साथ फ्रेंच भाषा को भी शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया जाए। जर्मन के साथ फ्रेंच भाषा में पढ़ने के छूट के कारण फ्रेंच भाषा को किसी प्रकार की क्षति नहीं उठानी पड़ी और न उसके विकास के मार्ग में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न हो सका है।

भाषा के मामले में उदारवादी विचारधारा के समर्थक रहे भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का दृष्टिकोण हमेशा हिंदी के प्रति स्पष्ट रहा और इस

भाषा को उन्होंने आम-आदमी की प्रगति का सोपान माना। वह विदेशी भाषा अंग्रेजी या देश की प्रांतीय भाषाओं के विरोधी नहीं थे, किंतु देश के विकास एवं मजबूती के लिए उन्होंने अखिल भारतीय भाषा के रूप में सदैव हिंदी की पैरोकारी की और कहा कि अखिल भारतीय भाषा कोई भी हो सकती है तो वह सिर्फ हिंदी या हिंदुस्तानी कुछ भी कह लीजिए हो सकती है।

पुनश्च पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के ही शब्दों में- 'मुझे एक लंबे समय से यकीन रहा है और आज भी है कि भारत की आम जनता की वास्तविक उन्नति और जन जागरण अंग्रेजी के जरिए नहीं हो सकता। इस बात का इससे कोई संबंध नहीं है कि अंग्रेजी को हटा दिया जाए या रखा जाए, लेकिन इतना साफ है कि आम जनता के बीच संपर्क की भाषा अंग्रेजी नहीं हो सकती इसलिए यह जरूरी है कि हम हिंदी के बारे में विचार करें।'

राजभाषा के रूप में हिंदी को अंग्रेजी की जगह 1965 में ही ले लेनी थी। उस समय लाल बहादुर शास्त्री प्रधान मंत्री थे। वे हिंदी के हिमायती थे। उन्होंने इस विषय में दृढ़तापूर्वक कदम उठाने का इरादा किया। कलकत्ता के एक समारोह में तत्कालीन हिंदी विभागाध्यक्ष को प्रोफेसर सुकुमार सेन ने 'आशुन राजपुत्र' कहकर संबोधित किया। तमिलनाडु में एकाधिक घटनाओं में अनेक व्यक्तियों ने हिंदी के विरोध में आत्मदाह किया। इंदिरा गाँधी उस समय सूचना मंत्री थीं। वह दक्षिण गईं। उन्होंने वहाँ कहा- 'यदि स्थिति ऐसी विषम है तो हमें इस विषय पर दोबारा विचार करना चाहिए।' बाद में घटनाओं ने साबित कर दिया कि स्थिति सचमुच विषम थी।

राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास- सन् 1965 ई. से भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी को पूर्णतः प्रतिष्ठित हो जाना था, परंतु इस काल तक हिंदी का प्रचार पूरी तरह न हो सकने का बहाना लेकर सरकार ने संविधान संशोधन करना चाहा और हिंदी के नाम पर उत्तर और दक्षिण ने विरोध दिखाया। यद्यपि इस विरोध का संकेत फ्रैंक-एंथोनी जैसे अंग्रेज पहले से ही दे रहे थे लेकिन तमिल और बंगाल के उन नेताओं ने भी अब हिंदी का विरोध प्रारंभ किया जो भाषा विज्ञान और राष्ट्र प्रेम के आधार स्वतंत्रता के नाम पर हिंदी के पक्षधर थे। इसतरह यह विरोध गहरा हुआ और राजनीतिक हो गया,

जिसकी आड़ में अंग्रेजी को सहभाषा बनाए रखा गया। संसद ने संविधान में संशोधन करके अनिष्टित काल के लिए अंग्रेजी के प्रयोग का द्वार खोल दिया तथा राजभाषा संशोधन अधिनियम 1967 के आधार पर यह घोषित किया कि- 'For section 3 of the Official Languages Act, 1963 the following sections shall be substituted normally not withstanding the expiration of the period of fifteen years from the commencement of constitution the English language may as from the appointed day continue to be used in addition to Hindi.'

औपचारिक रूप में हिंदी को भारत की राजभाषा का भी पद प्राप्त है, परंतु उसके साथ अनेकों अगर-मगर पुछल्ले लगे हुए भी हैं क्योंकि हिंदी भक्तों को गुलामी की याद दिलाते रहने के लिए अंग्रेजी को भी सह राजभाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। भाषा संबंधी भारतीय भाषाओं के उतने विकल्प प्राप्त होने पर भी यदि कोई अंग्रेजी भाषा में अपनी बात कहने का प्रयास करे तो क्या कहा जाए सिवाय इसके कि यह भाषायी दासता का प्रभाव है। जिसप्रकार गुलामों का कोई धर्म नहीं होता उसीप्रकार गुलामों की भाषा अपने संप्रभुओं की भाषा होती है। सर्वाधिक आश्चर्य की बात यह है कि हिंदी को राजभाषा बनाने का विरोध करके अंग्रेजी को बनाए रखने की बात तो कही जाती है, परंतु अन्य किसी भारतीय भाषा को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने की बात नहीं कही जाती है। इस वर्ग के व्यक्तियों के सम्मुख संभवतः गुलामी का अथवा मानसिक गुलामी का कोई विकल्प नहीं है और एक ही विदेशी भाषा को राजभाषा के रूप में मान्यता देकर के भाषायी आत्महत्या का अप्रतिम 'न भूतो न भविष्यति' उदाहरण प्रस्तुत करता है। तुर्की को स्वतंत्रता प्राप्त होने पर वहाँ के सर्वेसर्वा कमालपाशा ने अपने अधिकारियों से प्रश्न किया था- तुर्की को राजभाषा बनाने में कितना समय लग सकता है। कम से कम 10 वर्ष समवेत उत्तर था। कमालपाशा ने तत्काल कहा था समझ लो 10 वर्ष कल प्राप्त: पूरे हो जाएँगे। कल से हमारे देश का सब काम तुर्की देश की भाषा तुर्की में होगा और वैसा ही हुआ। न शब्दावली की कठिनाई उपस्थित हुई और न विविध विषयक पाठ्य-पुस्तकों का अभाव आड़े आया। परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 68 वर्ष बाद भी हमारे देश में राजभाषा के राजनीतिक संबंधी निर्णय का साहस नहीं हो सका है। राजभाषा के

संदर्भ में हमारे देश को एक से अधिक बार अपमानित होना पड़ा है, परंतु विदेशी भाषा के प्रति अपने मोह में किसी प्रकार का व्याघात सहन नहीं कर पाते हैं। भारत के स्वतंत्र होने पर यह स्वाभाविक था कि विदेश नीति के अंतर्गत विभिन्न देशों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए जाएँ। स्व.विजयलक्ष्मी पंडित रूस में भारतीय राजदूत के रूप में अपने प्रमाण-पत्र लेकर तानाशाह श्री स्टैलिन के सम्मुख उपस्थित हुईं। उन्होंने प्रमाण-पत्र (Credential) स्वीकार नहीं किया यह कहकर- 'यह तो एक गुलाम देश की भाषा है।'

आजादी की लड़ाई में प्रत्येक नेता हिंदी के वर्चस्व एवं महत्व को स्वीकार करता था, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी किसी समय राष्ट्रभाषा हिंदी परिषद के अध्यक्ष थे, वही आजादी के बाद हिंदी के कट्टर विरोधी बन गए, कारण स्पष्ट है वोट की राजनीति के परिप्रेक्ष्य में हिंदी विरोधियों के मध्य हिंदी का विरोध करना उनकी विवशता थी। इसीप्रकार विदेशी संस्कृति एवं शिक्षा के प्रबल पक्षधर पं. जवाहरलाल नेहरू, किसी समय कहा करते थे- 'अंग्रेजी भारत में मात्र दूसरी भाषा ही हो सकती है लोकतंत्र में एक ऐसी भाषा को, जिसे सिर्फ पाँच प्रतिशत लोग ही समझ और बोल सकते हैं, प्रथम स्तर नहीं मिल सकता है।' परंतु बाद में अंग्रेजी को सहभाषा के रूप में स्वीकारा और राजभाषा संशोधन अधिनियम में 1967 के दिसंबर में यह प्रतिश्रुति दी गई कि 'अहिंदी भाषी राज्य सरकारें केंद्र से पत्र-व्यवहार में तब तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकेंगी, जब तक इनमें से पहले हिंदी में पत्र-व्यवहार करना न चुन लें, इसप्रकार सरकारी उद्देश्यों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का ही इस्तेमाल जरूरी कर दिया गया।' और तो और त्रिभाषा फार्मूले में हिंदी के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है। त्रिभाषा फार्मूले का अर्थ है कि बालक को हिंदी, अंग्रेजी और राज्य की भाषा पढ़ाई जाए। इसका अर्थ यह है कि त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत हिंदी की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जाए। हिंदी प्रदेशों में हिंदी और अंग्रेजी पढ़कर काम चल सकता है क्योंकि हिंदी राज्य की भाषा का भी काम दे सकती है, हिंदीभाषियों ने राज्य के नाम पर दक्षिण की कोई भाषा पढ़ने की उदारता नहीं दिखाई, यह अलग बात है, परंतु दक्षिण में हिंदी का विरोध तो सर्वथा स्पष्ट है। हिंदी को भारत की

राजभाषा किस प्रकार बनाया जाए, इस प्रश्न का उत्तर हिंदी के अनुरागियों को तथा भारत की अस्मिता के रखवालों को देना है- केवल वचन द्वारा ही नहीं- अपनी करनी द्वारा भी। हमारे विचार में इस समस्या के समाधान पर तीन दृष्टियों से प्रचार किया जा सकता है- व्यावहारिक, आंदोलनात्मक एवं राजनीतिक। हम प्रत्येक कार्य में तथा प्रत्येक अवसर पर हिंदी का प्रयाग करें, पत्र-व्यवहार एवं बातचीत से लेकर विदेशियों से व्यवहार करने तथा अपने व्यावसायिक कार्यों में भी आंदोलन का रूप यह हो सकता है कि अंग्रेजी में लिखे गए प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दें, अंग्रेजी में छपे हुए निमंत्रण पत्रों पर आपत्ति जताएँ। जिन दुकानों के अंग्रेजी में साइन-बोर्ड लिखे हुए हैं, उनका बहिष्कार करें तथा उसके सामने धरना देते हुए कहें कि यह दुकान केवल अंग्रेजी पढ़-लिखे लोगों के लिए है अन्य लोगों के लिए नहीं। प्रौढ़ जन को हिंदी पढ़ाने के लिए सायंकालीन निःशुल्क कक्षाएँ चलाएँ, उनमें हिंदी पढ़ाने के अलावा लोगों को यह भी समझाएँ कि हिंदी हमारी पहचान है तथा प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी माता, मातृभूमि एवं मातृभाषा पर गर्व करता है, केवल गुलाम दूसरों की भाषा बोलने को विवश रहते हैं।

लोकमान्य तिलक ने कहा था- 'अभी जितनी भी भाषाएँ भारत में प्रचलित हैं उनमें हिंदी ही सर्वत्र प्रचलित है।' इसी हिंदी को भारतवर्ष की एकमात्र भाषा स्वीकार कर ली जाएँ, तो सहज में एकता संपन्न हो सकती है। भाषा के मामले में उदारवादी विचारधारा के समर्थक रहे पंडित जवाहर लाल नेहरू का दृष्टिकोण हमेशा हिंदी के प्रति स्पष्ट रहा और इस भाषा को उन्होंने आम आदमी की प्रगति का सोपान माना। वह विदेशी भाषा अंग्रेजी या देश की प्रांतीय भाषाओं के विरोधी नहीं थे किंतु देश के विकास एवं मजबूती के लिए उन्होंने अखिल भारतीय भाषा के रूप में सदैव हिंदी की पैरोकारी की और कहा कि अखिल भारतीय भाषा कोई भी हो सकती है तो वह सिर्फ हिंदी या हिंदुस्तानी कुछ भी कह लीजिए हो सकती है।

भारत में स्वतंत्रता के पष्ठचात् राजसत्ता जनता के हाथ आई। उससमय भारतवर्ष में लगभग 400 बोलियाँ प्रचलित थीं। लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह आवश्यक हो गया कि देश का राजकाज लोक की भाषा में हो। अतः

14 सितंबर 1949 ई. को भारत के संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गयी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में उल्लेख किया गया कि संघ की राजभाषा हिंदी होगी और उसकी लिपि होगी देवनागरी। प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दिवस मनाये जाने का उद्देश्य इसको व्यापक प्रचार-प्रसार एवं राजकीय प्रयोजनों में इसके उपयोग को बढ़ावा देना है।

जहाँ तक राष्ट्रभाषा का प्रश्न है तो हिंदी को राष्ट्रभाषा कहने पर यह कहकर आपत्ति उठायी जाती है कि भारत के अनेक भाषाओं की तुलना में उसे अधिक गौरव दिया जा रहा है। हिंदी का विरोध सबसे अधिक तमिलनाडु में है। वहाँ के राजनीतिकबाजों ने हिंदी के विरोध को चुनाव का मुद्दा बना रखा है। यदि वे तमिल का समर्थन करते हैं मानो अंग्रेजी से तमिल भले ही दूषित हो जाए या अंग्रेजी पढ़े-लिखे उसने बाजी मार ले तो कोई बात नहीं।

सच्चाई यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा कहने वाले उसे कोई गौरव प्रदान करने की भावना से ऐसा नहीं करते हैं और न अन्य भाषाओं को उसकी तुलना में हीन बताने की भावना से। वस्तुतः राष्ट्रभाषा शब्द को राष्ट्रभाषा इसलिए नहीं कहा गया कि वह राष्ट्र की एकमात्र या सर्वप्रमुख भाषा है, बल्कि इस नाम का प्रयोग अंग्रेजी को ध्यान में रखकर किया गया। अंग्रेजी एक विदेशी भाषा थी जो विदेशी शासन का अनिवार्य अंग थी। अंगी के साथ अंगों का निराकरण आवश्यक हो जाता है। अंग्रेजी शासन सूत्र का विरोध करते समय उससे संबद्ध और भी वस्तुएँ थीं उनका विरोध आवश्यक हो गया। बात बहुत हद तक ठीक भी है कि विदेशी भाषा का प्रभाव केवल शासन तक ही सीमित नहीं रहता वह संस्कृति को भी प्रभावित करती है। इसलिए स्वाधीनता संग्राम के समय नेताओं ने प्रत्येक दृष्टि से स्वदेशीपन या यों कहें कि राष्ट्रीयता की भावना जगाने की कोशिश की। यह नाम उसी प्रसंग में सामने आया। अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा को छोड़कर अपनी भाषाओं के प्रति उन्मुख होना चाहिए। यह उस आंदोलन का लक्ष्य था। इसलिए कांग्रेस ने कानपुर अधिवेशन (1925) में यह प्रस्ताव स्वीकृत किया कि अपने सभी कार्यों में प्रादेशिक कांग्रेस कमेटियाँ प्रादेशिक भाषाओं अथवा हिंदुस्तानी (हिंदी) का प्रयोग

करें और अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी भाषा का प्रयोग हो। यह प्रस्ताव विदेशी भाषा के स्थान पर राष्ट्रीय भाषा के प्रयोग को स्थान देने के लिए स्वीकृत किया गया। जैसा कहा गया है विदेशी शासन के विरुद्ध आंदोलन को सक्रिय बनाने का यह एक अंग था। दूसरी बात यह है कि संपूर्ण राष्ट्र में संचार की कोई भाषा हो सकती है तो वह है हिंदी। हिंदी की इसी विशेषता को ध्यान में रखकर उसे संविधान ने राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया। अतः समग्र राष्ट्र के लिए कोई हानि या आपत्ति नहीं है। यही कारण है जिनके आधार पर हिंदी को राष्ट्रभाषा की संज्ञा दी जाती है।

यह ध्यान रखने की बात है कि भारतीय संविधान में हिंदी के लिए कहीं भी राष्ट्रभाषा शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। इसे या तो संघभाषा या संघ की राजभाषा कहा गया है। संघ भाषा कहने के पीछे भी उद्देश्य वही है जो राष्ट्रभाषा के पीछे। जो भाषा सारे संघ के लिए प्रयुक्त हो उसे संघभाषा कहना उचित ही है।

गौरतलब है कि भाषायी आधार पर राज्यों के निर्माण के पष्ठचात् प्रत्येक राज्य के लिए एक-एक भाषा स्वीकृत हुई। इसको चाहे तो राजभाषा भी कह सकते हैं। किसी राज्य अथवा प्रदेश का शासन कार्य वहीं की भाषा में होगा जैसे बंगाल का बंगला में, तमिलनाडु का तमिल में, महाराष्ट्र का मराठी में। इस सीमा में हिंदी को दखल नहीं देना है। प्रत्येक राज्य की भाषा को अपना कार्य उस भाषा में करने की पूरी छूट और स्वतंत्रता है।

किंतु भारत 28 राज्यों का एक संघ है इसलिए राज्य की सीमा पार करने पर एक ऐसी स्थिति आती है जिसमें एक भाषा छोड़कर दूसरी भाषा से मुकाबला होता है। केरल की भाषा मलयालम है तो कश्मीर की कश्मीरी। ये दोनों भाषाएँ परस्पर अबोध्य हैं। इस कठिनाई को दूर करना है। यह कार्य अंग्रेजी में हो यह ठीक नहीं है। यह कार्य हिंदी को करना चाहिए। इसलिए अंततः प्रादेशिक संचार के लिए हिंदी आवश्यक है।

एक प्रश्न यह है कि केंद्र और राज्यों के बीच संचार की भाषा क्या हो यह कार्य अब तक अंग्रेजी ने किया है, करती आ रही है, उसे अब हिंदी करे यही आवश्यक है।

इससे आगे बढ़ने पर अंतर्राष्ट्रीय संचार की स्थिति आती है जिसमें दूसरे देशों के साथ हमारा संपर्क

अपेक्षित है। यह काम हम अक्सर अंग्रेजी से लेते रहे हैं, लेकिन उससे राष्ट्रीय सम्मान को अनेक बार ठेस पहुँचती है।

यह उल्लेखनीय है कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में जो सभ्य-समुन्नत देश हैं वह अपनी भाषा के माध्यम से ही अपना कार्य करते हैं और उसमें गौरव का अनुभव करते हैं। रूस, फ्रांस या चीन अंग्रेजी में अपने पत्रादि प्रस्तुत नहीं करते हैं। फिर हिंदुस्तान जैसा समृद्ध परंपराओं का देश अंग्रेजी को गले लगाए रखकर हमेशा यह बताता चले कि हम दो सौ वर्षों तक पराधीन हैं और उसकी यह निष्ठानी है, कोई सम्मान की बात नहीं होगी। इसलिए हमें अंतर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए भी एक भाषा रखनी होगी और वह स्थान हिंदी ही ले सकती है। हाँ, अंतर्राष्ट्रीय प्रयोग के मुताबिक हिंदी को भी ढलना होगा।

यह जानकर सुखद आश्चर्य होता है कि बाजार ने भी हिंदी को सबकी पहली संपर्क भाषा बनाने का काम किया है। बहुराष्ट्रीय निगम अपने यहाँ अंग्रेजी के साथ हिंदी जानने वालों को रखने की बात करते हैं। उनका मानना है कि वे कारपोरेट या सरकार से अंग्रेजी में निपट सकते हैं, लेकिन गाँव-कस्बे की हिंदी वाली जनता से तो उसी के मुहावरे में निपटना होगा।

कुल मिलाकर आज हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में महती दायित्वों का निर्वहन कर सकती है। सच पूछा जाए तो हिंदी बोलचाल से, मनोरंजन के माध्यम से इंटरनेट, फेसबुक, ट्वीटर, ब्लॉग से और बाजार के उपभोक्ता ब्रांडों के माध्यम से बढ़ रही

है। यह किसी भी सरकार की नीति से बड़ी ताकत है।

संप्रति हिंदी प्रदेशों की राज्य सरकारें जिन पर हिंदी के क्षेत्रीय प्रसार का दायित्व था, एक नया रूख अपना रही है। केंद्र यदि उत्तर और दक्षिण का बहाना बनाता है तो प्रांतीय सरकारें हिंदी व उर्दू का विवाद द्वितीय राजभाषा के रूप में उठाना चाहती है। जिन राज्य सरकारों को अभी अंग्रेजी मोह तक नहीं छूटा है तथा हिंदी की प्रतिष्ठा स्वतंत्रता के इतने वर्षों में नहीं कर पाए हैं, वे दूसरी राजभाषा के नाम पर तीन राजभाषाओं को लागू कर किस बुद्धिमता और दूरदर्शिता का परिचय दे रही हैं यह समझ से परे है। वस्तुतः राजभाषा का प्रश्न होने पर भी इसका विनिश्चय तभी होगा, जब राजनीतिक दाव-पेंच से शासन मुक्त होगा।

हिंदी को राजभाषा बनाने के लिए उसको उसका औपचारिक पद दिलाने के लिए हिंदी में साहित्य निर्माण की कम, उसको लोकप्रिय एवं व्यावहारिक बनाने की आवश्यकता है। हिंदी को राज्याश्रय कभी प्राप्त नहीं हुआ और वह औपचारिक रूप में कभी राजभाषा नहीं बनी वह सदैव जनसहयोग द्वारा पनपी है, विकसित हुई भारत के जन-जन की भावनाओं की वाहिका रही है। जनता की निष्ठा ही हिंदी को उसका गौरवपूर्ण पद प्रदान कर सकती है। इसके साथ ही यह आवश्यक है कि जन विश्वास को पक्ष में लेते हुए राजभाषा अधिनियम 1963 धारा 3(1) को निरस्त किया जाए। ❖

भूतपूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

☎ संपर्क: 07376582553

संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित भाषाएँ

1. असमिया	7. गुजराती	13. बंगला	19. संस्कृत
2. उड़िया	8. डोगरी	14. बोड़ो	20. संथाली
3. उर्दू,	9. तमिल	15. मराठी	21. सिंधी
4. कन्नड़	10. तेलुगू	16. मलयालम	22. हिंदी
5. कश्मीरी	11. नेपाली	17. मैथिली	
6. कोंकणी	12. पंजाबी	18. मणिपुरी	

◆ आलेख ◆
नई रचना की बेचैनी का शहर

जगदीश्वर नारायण श्रीवास्तव

‘उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिला में गोरखपुर ही वह महत्वपूर्ण नगर है, जहाँ नई रचना की बेचैनी यहाँ के रचनाकारों ने सर्वाधिक महसूस किया है। पिछले वर्षों में गोरखपुर के साहित्यकारों ने विचार और रचना का अच्छा मंच बना लिया है। यहाँ के रचनाकारों ने देश में हो रहे परिवर्तनों को देखा, समझा और अपनी रचनाओं में उसे प्रतिबिम्बित किया। स्व.परमानंद श्रीवास्तव, रामसेवक श्रीवास्तव, विष्ण्वर्मा नारायण श्रीवास्तव, भगवान सिंह, स्व.देवेन्द्र कुमार बंगाली, जगदीश्वर नारायण श्रीवास्तव, बादशाह हुसैन रिज़वी, विष्ण्वनाथ प्रसाद तिवारी, गिरीश चंद्र श्रीवास्तव तथा अन्य कितने ही साहित्यकारों ने पिछले वर्षों में अपनी रचनाओं के बल पर इस अंचल के लोगों को सोचने और समझने का तरीका बहुत हद तक बदलने में सफलता प्राप्त की।’ -सुप्रसिद्ध साहित्यकार ठाकुर प्रसाद सिंह (डा. शिवरत्न लाल की काव्य कक्षि के प्रकाशनोद्घाटन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका- 1 अगस्त 1974)।

एक तरफ हरी-भरी वन खंडियों के बीच से गुजरती हुई सर्पाकार रेल की पटरियाँ और दूसरी तरफ राप्ती नदी की गोरी-पतली बाँहें दोनों के बीच और आस-पास फैली गोरखपुर की साहित्यिक-सांस्कृतिक जमीन में जाने कौन सा बाँकपन और मस्ती है, जाने कौन-सी आध्यात्मिक और बौद्धिक आग है, जिसकी कोख फाड़कर यहाँ हर पीढ़ी का विद्रोह जन्म लेता है। यह आग यों ही नहीं जनम गयी। यह आग गुरु गोरक्षनाथ जैसे योगियों, बौद्धधर्म के प्रवर्तक सिद्धार्थ गौतम, महात्मा कबीर जैसे संतों और फिराक गोरखपुरी तथा मुंशी प्रेमचंद की देन है, जो यहाँ के रचनाकारों के दिलों में धधकती और उनकी कलमों में उतरती चली आ रही है। अमर छाहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल की छाहादत इसी धरती के जन-समाज ने अपनी डबडबाई आँखों से देखी है जिसने यहाँ के लोगों को सिखाया ‘गुलाम का हक है कि वह बगावत करे।’

याद करता हूँ एक वह दिन जब मैं अपने छोटे से कस्बे बड़हलगांज से इंटर करने के बाद आगे की

पढ़ाई के लिए शहर आया था। 103, पहाड़पुर, नकी रोड, गोरखपुर के ठीक बगल में क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी का दफ्तर था, जहाँ कामरेड जामिन अली रहते थे। कामरेड शिव कुमार लाल जो स्टूडेंट फेडरेशन के बड़े नेता थे। यहीं वरिष्ठ कवि रामाधर त्रिपाठी ‘जीवन’ जी से भेंट हुई थी। इसी अपने पहाड़पुर वाले घर में जीवन जी की प्रेरक कविताएँ सुनी-

‘मन मेरा आकाश विहारी, तन धन मेरे खेत में
माटी को सोना करता हूँ, रस भरता हूँ रेत में
मधु की रचना में रत, मेरे पतझर की हर डाल है
मैं किसान हूँ, कवि हूँ, मेरी संगिनी कलम-कुदाल है।
नया-नया सूरज उगता है, नयी-नयी सी भोर में
नयी जिंदगी लहराती है, हल्की एक हिलोर में
प्रण मेरा सर्वस्व समर्पण, दर्पण मेरा ताल है।
मैं किसान हूँ, कवि हूँ, मेरी संगिनी कलम-कुदाल है।

और सरस्वती के नये अंकुरों को उनकी सीख-
‘कवि कलम संभालो सही, परंतु कुदाली लो
अरमानों पर ठानों की ठठरी लिए हुए
सिर पर अपने गीतों की गठरी लिए हुए
यों घूम-घूमकर गली-गली मत गाली लो।’

पूर्वी उत्तर प्रदेश का वह विद्रोही स्वर- कवि
‘जीवन’ जिंदगी के गीत गाते हुए-

किसी को बिना बताए कहाँ गुम हो
गया, कोई नहीं जानता।

यहीं इसी शहर के घंटाघर स्थित ‘मन्नन साहित्य परिषद की काव्य गोष्ठियों’ में पहली बार प्रगतिशील कवि विद्याधर द्विवेदी के गीत सुने-

दुनिया ने केवल स्वर मांगा, मैं पागल प्राण लुटा आया
मन का वन फूला फूला था, साँसों में सौरभ झूला था
प्राणों की धरती पर जैसे माधव का यौवन झूला था
तब ढक न सका मैं अपनापन भर गये सुरभि से धरा गगन
इसलिए कि स्वरमाला से मैं फूलों-सा गान लुटा आया
सुख ने तो मधुर पराग लिया, दुःख ने छाती को आग किया
फिर भी जब दुनिया वालों ने मुझसे मेरा घर मांग लिया
तब बेघर का बेचारा मैं, अपनी मंजिल से हारा मैं
असहाय पड़े करुणा वाले पथ को आह्वान लुटा आया।

‘एक गवर्मेट ईमानदार किरानी के लिए’ जैसे गीत लिखने वाले इस विद्रोही कवि को विक्षिप्त रूप में ही सड़क पर मरते, गोरखपुर ने देखा है।

इसी शहर के महाराणा प्रताप डिग्री कालेज में एक मासूम एम.ए. के छात्र परमानंद श्रीवास्तव को बी. ए. की क्लास लेते हुए देखा और उसकी टनकदार आवाज से प्रभावित हुआ। इसी शहर की जीवंत काव्य गोष्ठियों में उस मधुर कंठी गीतकार कवि परमानंद श्रीवास्तव के मधुर गीत सुने-

यह हँसी का छोर उजला, यह चमक नीली
कहाँ ले जाए तुम्हारी आँख सपनीली
चमकता आकाश-जल हो, चाँद प्यारा हो।
फूल-सा तन, सुरभि-सा मन तुम्हारा हो
महकते वन हों, नदी जैसी चमकती चाँदनी हो
स्वप्न डूबे जंगलों में, गंध डूबी यामिनी हो
एक अनजाने नियति से बँधी जो सारी दिशाएँ
न जाने कहाँ ले जाएँ।

इसी गोरखपुर के रायगंज मुहल्ले में लकड़ी की दुकान में नयी बनी दो गुमटियों में कवि रामसेवक श्रीवास्तव और भगवान सिंह को छात्र-जीवन गुजारते देखा। छात्र-जीवन में हम तीनों सहपाठी मित्र बने और एक साथ पहाड़पुर में वर्षों गुजारे। स्व. परमानंद जी वहाँ आ जाते और प्रयोगवाद पर ढेरों बहसें होतीं। यहीं की एक काव्य गोष्ठी में मेरा गीत सुनकर मेरे गुरु डा. रामचंद्र तिवारी ने मुझे अंक में भरकर उठा लिया और शाबाशी दी।

इसी जीवंत शहर की काव्य गोष्ठियों में कवि-कथाकार भगवान सिंह के प्यारे-प्यारे भोजपुरी ऋतु गीत सुने-

सावन में हमरे देस कबौ तू अइहऽ पिया
हम बिजुरिन चौक पुरइबैं, तरइयन लजवइबैं
हम कजरिन पेंगन गहबैं, बदरियन बजवइबैं
हम बादर भरि-भरि लइबैं तू छमकि नहइहऽ पिया।
या यह फागुन गीत-
फागुन फुलेला मोरे अँगनवाँ, अमवाँ फुलेला मोरे बाग
महुआ रसेला मोरी पुरुआ बयरिया, कोइलि रसेले सारा गाँव
ननदि भरेली मोर हँसी से अँचरवा
देवर कनखियन भरे ले जवनियाँ
तुहें बिनु बड़ी बेअधार।

यहीं कथाकार कवि विष्ण्वजीत से भी मित्रता बनी। उनका गीत आज भी मुझे कंठस्थ है-

सोचा था बाँधूंगा तुम को मन में
नील गगन को घन में
अपने को जन-जन में
किंतु हुआ क्या?
अंधड़ पछुआ गिन न सका
मेंहदी का बिछुआ
रहा देखता

पतझड़ ही सावन में
इसी शहर की देन है कवि मित्र स्व.देवेंद्र कुमार बंगाली का संग-साथ। उनकी गीत रचनाओं की शर्त है-
फूटना हो गीत फूटे/ ना कि कोई मीत फूटे
रोक रखीं हैं दिशाएँ/ सञ्चन की संभावनाएँ
किसे रखे याद करके/ और किसको भूल जाएँ
रस्म टूटे, रीति टूटे/ ना कि कोई प्रीति टूटे
छूटना हो भीति छूटे/ ना कि यह परतीति छूटे।

अब यहाँ से निकलने वाली पत्रिकाओं की चर्चा करूँ तो ‘स्वदेष्टा’(संपादक-दशरथ प्रसाद द्विवेदी) ‘राप्ती’ (सं.-रामाधार सिंह और रामचंद्र तिवारी) ‘आस्था’ (सं.-स्व. परमानंद श्रीवास्तव) ‘शतदल’ (सं.-हृदय विकास पांडेय) ‘रचना’ (सं.-रामसेवक श्रीवास्तव) ‘संप्रति’ (सं.-रामसेवक श्रीवास्तव) ‘भंगिमा’(सं.-लालबहादुर वर्मा) ‘इतिहास बोध’ (सं.-लाल बहादुर वर्मा) ‘दस्तावेज’ (सं.-विष्ण्वनाथ प्रसाद तिवारी) ‘संभावना’ (सं.-माधव मधुकर) ‘नई रचना’ (सं.-मदन मोहन) ‘सहचर’ (सं.-कृष्ण चंद्र लाल) ‘साखी’(सं.- केदारनाथ सिंह) पत्र-पत्रिकाओं की इस यात्रा का अध्ययन किया जाएगा तो गोरखपुर के रचनात्मक माहौल का पूरा आभास हो जाएगा। गीता प्रेस से ‘कल्याण’ का नाम मैं भूल रहा हूँ। मेरी स्मृति में उस समय की साहित्यिक संस्थाओं की भी जो सक्रियता थी वह सब नक़्श है। पं. विद्यानिवास मिश्र ‘जिज्ञासा’ चलाते थे तो रामसेवक श्रीवास्तव ‘रचना’। शिवरत्न लाल ‘मन्नन साहित्य परिषद’ चलाते थे तो गिरीष्ठा चंद्र श्रीवास्तव ‘संगम’। राम विनायक सिंह द्वारा संचालित ‘पूर्वोत्तर रेलवे हिंदी समिति’ तो अभी भी पूरी सक्रियता से चल रही है। श्रीमती गिरीष्ठा रस्तोगी की संस्था ‘रूपांतर’ ने तो अपनी नाट्य प्रस्तुतियों से शहर के नये-नये से विषयों को पर्दे पर उतारा, जिससे यहाँ के

कई अभिनेता उभर कर सामने आए। आभा धूलिया का नाम मुझे याद है जो फिल्मों में चली गई।

सेंट एंड्रयूज पोस्ट डिग्री कालेज के प्रोफेसर आनंद प्रकाश दीक्षित और महाराणा प्रताप डिग्री कालेज के प्रो. रामचंद्र तिवारी दोनों हिंदी के प्रकांड विद्वान और मित्र थे। परंतु यहीं देखा है प्रो. दीक्षित जो इस सिद्धांत को साहित्य का सर्वस्व मानते थे और तिवारी जी आधुनिकता को साहित्य की प्राथमिकता मानते थे। गोष्ठियों में दोनों की लड़ाई इसी बिंदु पर होती, लेकिन समापन के बाद दोनों सपरिवार हँसते-बतियाते फिल्म देखने जाते।

बनारस में नामवर सिंह नये आलोचक के रूप में उभर रहे थे- प्रखर वक्तव्य और अपने खास तेवर के लिए प्रसिद्ध इसी विद्वान ने स्व.परमानंद श्रीवास्तव और योगेंद्र पांडेय के बुलावे पर गोरखपुर आये और यहीं 1953 में प्रगतिशील लेखक संघ की संस्था का बीजारोपण हुआ जो आज भी पूरी तरह सक्रिय है।

यहीं 'भाषा और समाज' विषय पर बड़ी विचार गोष्ठी हुई जिसमें अज्ञेय, विजयदेव, नारायण साही, विद्यानिवास मिश्र ने एक साथ 'स्वतंत्रता और राज्याश्रय' विषय पर प्रसिद्ध साहित्यकार ठाकुर प्रसाद सिंह को घेरा क्योंकि वह सूचना विभाग की राजकीय नौकरी में थे। ठाकुर भाई ने अपने बचाव में कहा कि न भूलें जब महाराणा प्रताप ने ग्हाहंशाह अकबर की अधीनता स्वीकार की चिट्ठी भेजी थी तो राज्याश्रय के दरबारी देष्टभक्त ने ही राणा प्रताप को फटकार लगायी और फिर से युद्ध के लिए उन्हें तत्पर किया और राणा प्रताप को विजय मिली। इससे हम सरकारी नौकरियों में लगे हुए साहित्यकारों को बल मिला।

गोरखपुर भूल नहीं सकता कि लगभग एक दशक तक प्रसिद्ध कवि इसी शहर और पास के पडरौना शहर में अध्यापन कार्य करते हुए प्रसिद्ध कवि डा. केदारनाथ सिंह ने यहाँ के तत्कालीन नये साहित्यकारों को आधुनिक संस्कार दिया।

यही शहर है जहाँ साठ के दशक में नार्मल स्कूल के प्रांगण में प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी और उनके सुपुत्र अमृता राय को बुलाकर उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की आवक्ष प्रतिमा लगवायी। आगे चलकर प्रो. स्व.परमानंद श्रीवास्तव ने उच्च अधिकारियों से सहयोग लेकर वर्तमान प्रेमचंद संस्थान का निर्माण कराया, जो

आज गोरखपुर में साहित्य जगत का तीर्थ है।

न भूलें कि भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार के आमंत्रण पर हरिवंश राय बच्चन जी ने यहीं गीता वाटिका में 'गीता' का अवधी में काव्यानुवाद 'जनगीता' नाम से किया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के योगी योगानंद का जन्म यहीं हुआ था, जिन्होंने 'कथामञ्जु' जैसा महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखा। गाँधी जी की प्रेरणा से प्राकृतिक चिकित्सा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाने वाले डा. विट्ठल दास मोदी ने प्राकृतिक चिकित्सा तथा अन्यान्य विषयों पर दर्जनों पुस्तकें लिखीं। यहाँ का प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र इसका गवाह है। गोरखपुर की मिट्टी से ही उपजे सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा. रामदरश मिश्र ने गुजरात और दिल्ली को अपना कर्मक्षेत्र तो बनाया पर अनेक विधाओं वाले उनके लेखन में पूर्वांचल और खास तौर से गोरखपुर की धड़कन सुनी जा सकती है। प्रणव कुमार वंद्योपाध्याय जैसे प्रसिद्ध कवि-कथाकार भी यहीं जन्मे, पले, बढ़े। आज के रचनारत साहित्यकारों में मेरी बात छोड़ें, श्यामद दूसरे लिखें, पर कृष्णचंद्र लाल, रामदेव शुक्ल, मदन मोहन, महेश अष्टक, वीरेंद्र हमदम, गणेश पांडेय, कात्यायनी, लालबहादुर वर्मा, विष्णुनाथ प्रसाद तिवारी, देवेंद्र आर्य, रवींद्र श्रीवास्तव 'जुगानी', सदानंद ग्राही, वेदप्रकाश पांडेय, स्वप्निल श्रीवास्तव, रंजना जायसवाल, जितेंद्र श्रीवास्तव, वशिष्ठ अनूप, श्रीधर मिश्र, सुरेंद्र शास्त्री, मुस्लिम अंसारी, शाकील फ़राज, अनिता अग्रवाल, देवव्रत तिवारी, मुहम्मद कामिल खाँ, अनंत मिश्र जैसे कवि, लेखक पूरी सक्रियता से लिख रहे हैं।

जनसाधारण के जीवन-संघर्षों के निकट होने के कारण यहाँ के इन रचनाकारों में इस संघर्ष चेतना के बीज पाया जाना स्वाभाविक है। लेकिन डर लगता है कि गाँवों की गोद से तेजी से निकलता यह शहर भी अन्य महानगरों की तरह गगन-चुंबन को ही अपने विकास का अंतिम चरण मानने लगा तो धरती इसके भी पाँवों के नीचे से खिसक जाएगी तब यह अपने मौलिक संकल्पों का नहीं अपर पक्ष के विकल्पों का महानगर हो जाएगा। महानगर में दरबार का गढ़, पढ़े-लिखे चालाक अज्ञानियों का वास-स्थल मानने वाले इस शहर के कवियों, लेखकों, पत्रकारों और रंगकर्मियों के दिमाग में बराबर यह बात घर करती रहती है कि कोई नगर अपने इर्द-गिर्द के गाँवों का जिस तेजी के साथ शोषण कर सकेगा, उसी

तेजी के साथ वह एक महानगर का रूप ले सकेगा। गोरखपुर निरंतर इस महानगरीय रूप से भागता रहा है। धूल-मच्छर और महँगाइयों का शहर कहलाते हुए भी महानगरीय विराटता से पलायन शायद इसकी प्रमुख विशिष्टता रही है, जिससे यह देश के बुद्धिजीवियों को अपने विचारों और रचनात्मक सक्रियताओं से आकृष्ट करता रहा है। तभी तो महात्मा कबीर ने 'शून्य शिखर पर दियना बार' की नसीहत दी थी। अपने परिवेश में और बाहर हो रहे विनाश के विरुद्ध सख्त ही एक मात्र संभव

प्रतिरोध और बचाव है। हम बच नहीं सकते लेकिन कुछ न कुछ बचा तो सकते हैं। आखिर कला और साहित्य सचाई से भगोड़ों की पनाह नहीं है- 'जो बचेगा वह कैसे रहेगा?' ❖

भूतपूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
62-एन, शिवपुर ग्राहबाजगंज
गोरखपुर

☎ संपर्क: 9621560655

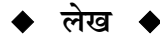
रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता

- 1) इस प्रतियोगिता में सभी राजपत्रित अधिकारी/अराजपत्रित कर्मचारी भाग ले सकते हैं।
- 2) निबंध 'रेल कार्य संचालन एवं प्रबंधन' से संबंधित किसी विषय पर होना चाहिए और 5000 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।
- 3) निबंध प्रत्येक वर्ष दिसंबर माह में कार्मिकों से आमंत्रित किया जाता है।
- 4) इसमें राजपत्रित के लिए 02 एवं अराजपत्रित के लिए 02 पुरस्कार दिए जाते हैं-

	प्रथम	द्वितीय
	पुरस्कार	पुरस्कार
राजपत्रित अधिकारी	₹ 6000/-	₹ 4000/-
अराजपत्रित कर्मचारी	₹ 6000/-	₹ 4000/-

सेवा-पंजी में प्रविष्टियाँ

जिस अनुभाग में कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियाँ करने का काम होता है उसके प्रभारी अधिकारी की यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि 'क' और 'ख' क्षेत्रों में काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में की गई प्रविष्टियाँ हिंदी में की जाएँ। इसप्रकार की प्रविष्टियाँ 'ग' क्षेत्र में यथासंभव हिंदी में की जाएँ/इस बात की पड़ताल सेवा पुस्तिका में प्रविष्टियाँ करते समय/उस पर हस्ताक्षर करते समय कर ली जाए।



कोठारी आयोग और मौजूदा भाषिक परिदृश्य

डा. संजय कुमार सिंह

कोठारी आयोग के रपट

की चर्चा शिक्षा के क्षेत्र के लिए तो की ही जाती है, भाषा के लिए भी यह महत्वपूर्ण है। कोठारी आयोग ने शिक्षा और भाषा को जोड़कर देखा और राष्ट्रीय उन्नति के लिए अपनी सिफारिशों कीं। उनकी कुछ सिफारिशों को माना गया, कुछ वास्तविक अर्थ में लागू नहीं हो सकीं और वर्तमान दौर में हम उन सिफारिशों के विरोधी रास्ते पर भी चल पड़े हैं, इसलिए उन सिफारिशों को फिर से देखना-समझना जरूरी है। लेकिन उसके पहले यह भी जरूरी है कि हम कोठारी को जानें।

कोठारी आयोग के अध्यक्ष का पूरा नाम दौलत सिंह कोठारी था। इनका जन्म 06 जुलाई 1906 को उदयपुर में हुआ था। पिता श्री फतेह लाल कोठारी स्कूल अध्यापक थे। दौलत सिंह पाँच संतानों में सबसे बड़े थे। और जब ये बारह वर्ष के थे, तभी पिता का निधन हो गया। सौभाग्य से इनके पिता के एक मित्र ने इन्हें अपने पास पढ़ने के लिए बुला लिया। मेधावी दौलत सिंह ने एक वैज्ञानिक के तौर पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। प्रख्यात वैज्ञानिक मेघनाथ साहा का मार्गदर्शन मिला। दौलत सिंह ने पूरी जिंदगी विज्ञान और शिक्षा के लिए कार्य किया। आपको न केवल वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए जाना जाता है, बल्कि विभिन्न प्रशासकीय पदों पर रहकर आपने विज्ञान और शिक्षा के लिए जो योगदान दिया, उसके लिए भी जाना जाता है। जिस समय आपको शिक्षा के लिए गठित आयोग का अध्यक्ष बनाया गया, उस समय विष्टवविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष के रूप में आप शिक्षा के लिए ही कार्य कर रहे थे।

कोठारी की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग का गठन 14 जुलाई 1964 को किया गया। इस आयोग ने 02 अक्टूबर 1964 को अपना काम शुरू किया और 29 जून 1966 को अपनी रपट दी। 29 अगस्त 1966 को रपट संसद के पटल पर रखी गयी। भाषा के संबंध में आयोग का कथन उल्लेखनीय है। शिक्षा और संस्कृति के विकास के लिए भारतीय भाषाओं एवं साहित्य का ऊर्जस्वी विकास अनिवार्य है। जब तक ऐसा नहीं किया जाता, लोगों में रचनात्मक ऊर्जा का संचार नहीं होगा,

शिक्षा के स्तर में सुधार नहीं होगा, लोगों तक ज्ञान का प्रसार नहीं होगा, बौद्धिक वर्ग एवं सामान्य जनता के बीच की खाई, यदि बड़ी नहीं तो भी यों ही बनी रहेगी। पहले से ही प्राथमिक एवं माध्यमिक-स्तर की शिक्षा के लिए माध्यम के रूप में प्रयोग में लाई जा रही क्षेत्रीय भाषाओं को तत्काल विष्टवविद्यालय-स्तर की शिक्षा के लिए स्वीकार किया जाना चाहिए। माध्यमिक-स्तर पर प्रत्येक बच्चे को तीन भाषा सीखनी चाहिए- अपने क्षेत्र की भाषा, हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषा, यदि उसके क्षेत्र की भाषा हिंदी और अंग्रेजी हो। हिंदी को भारतीय सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में संपर्क भाषा होना चाहिए। सांस्कृतिक मूल्य के लिए संस्कृति के अध्ययन को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अंग्रेजी एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषा के अध्ययन पर विशेष बल होना चाहिए।

उपर्युक्त कथन में दो बातों पर ध्यान देना जरूरी है। एक तो रचनात्मक ऊर्जा का संचार, दूसरा सामान्य और विष्टिष्ट जन के बीच बढ़ती हुई खाई। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा ने हमारे भीतर की रचनात्मकता को भी खत्म किया है और समाज की सामासिकता को भी। गौर करें तो आज की बहुत सी समस्याओं की जड़ में संवादहीनता ही है। कोठारी ने यह भी कहा था कि दुनिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बड़ी तेजी से प्रगति कर रही है। न सिर्फ उसके साथ चलना होगा, बल्कि इसमें अपना योगदान भी देना होगा। अंग्रेजी के माध्यम से इसके साथ चलने की कोष्टिष्टा तो हम कर रहे हैं, लेकिन बिना अपनी भाषा के इसमें मौलिक योगदान संभव हो पाएगा या नहीं, सोचने का विषय है।

कोठारी आयोग ने शिक्षा के संबंध में अपनी सिफारिष्ट के साथ-साथ भाषा के संबंध में स्पष्ट सिफारिष्ट की जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं-

➔ प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य रूप से सिर्फ एक भाषा सीखनी चाहिए अर्थात् मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा।

➔ अल्पसंख्यक भाषाई समूह के कुछ बच्चे अपने लाभ के लिए प्राथमिक शिक्षा में क्षेत्रीय भाषा स्वीकार

कर सकते हैं, लेकिन संवैधानिक प्रावधान के अनुसार उन पर यह आरोपित नहीं किया जाना चाहिए और प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

➔ उच्च प्राथमिक स्तर पर केवल दो भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए। प्रथम- मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा, द्वितीय- संघ की राजभाषा अथवा सह-राजभाषा(हिंदी अथवा अंग्रेजी)।

➔ माध्यमिक स्तर पर तीन भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए। हिंदी भाषी क्षेत्र के लिए- प्रथम-हिंदी (मातृभाषा), द्वितीय-अंग्रेजी और तृतीय-आधुनिक भारतीय भाषा। गैर-हिंदीभाषी क्षेत्र के लिए- प्रथम-मातृभाषा, द्वितीय-अंग्रेजी, तृतीय-हिंदी।

➔ उच्च माध्यमिक कक्षा में सिर्फ एक भाषा का विकल्प हो और स्नातक स्तर पर कोई भाषा पढ़ने की अनिवार्यता न हो।

निश्चित रूप से उपर्युक्त सिफारिशों को करते समय भारत के अखिल भारतीय स्वरूप को ध्यान में रखा गया था। त्रिभाषा सूत्र के रूप में ये सिफारिशें एक सीमा तक लागू भी हुईं, लेकिन पूरी ईमानदारी से इनका पालन न होने के कारण आज स्थिति तेजी से बदलती जा रही है।

भाषा-नीति को लागू करने में पहली गड़बड़ी यह हुई कि माध्यमिक शिक्षा तक तो भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने की योजना लागू हुई, लेकिन उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का प्रभुत्व बना रहा। इसके कारण भारतीय भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण किए हुए विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में अत्यंत कठिनाई का सामना करना पड़ा। बहु-स्तरीय शिक्षा व्यवस्था के चलते भी भारतीय भाषाओं के स्कूल उपेक्षित रहे, अंग्रेजी के स्कूलों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके और उनके भीतर यह बात घर कर गई कि अंग्रेजी न पढ़ाकर उनके साथ छल किया जा रहा है। आमजन में प्राथमिक शिक्षा में अंग्रेजी को विषय और माध्यम के रूप में अपनाने के लिए मांग किया और आज कई राज्य पुरानी भाषा नीति को बदलते हुए इसे स्वीकार कर रहे हैं।

दूसरी गड़बड़ी हिंदी भाषी लोगों से यह हुई कि त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत दक्षिण भारतीय भाषाओं को न सीखकर संस्कृत से काम चला लिया गया। इसके चलते

दक्षिण भारतीय समाज के साथ जो संपर्क विकसित होना था, वह नहीं हो सका। दक्षिण भारतीय लोगों के मन में यह ठीक है कि आखिर उनकी भाषाएँ उत्तर भारत में क्यों नहीं सीखीं जा रही हैं।

शिक्षा के बाजारीकरण एवं बहु-स्तरीयता के इस दौर में भाषा एवं संस्कृति का सवाल बहुत पीछे होता जा रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर के चिंतकों अथवा दौलत सिंह कोठारी जैसे वैज्ञानिकों के सिद्धांतों को दरकिनार कर आज प्राथमिक स्तर की शिक्षा को पूरी तरह अंग्रेजी माध्यम से करने की दिशा में अधिकांश राज्य चल पड़े हैं। इससे किसी को दिक्कत नहीं है, बल्कि यह प्रगतिशील कदम माना जा रहा है जो 'विकास' के लिए जरूरी है। भाषा नीति के चलते अंग्रेजी शिक्षा से वंचित समाज भी यह सोच रहा है कि इससे वह प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ पाएगा, लेकिन विचार का विषय यह है कि क्या सचमुच ऐसा होगा। ऐसा तो नहीं है कि बहु-स्तरीय शिक्षा के जाल में फँसे हुए सामान्य आदमी को फिर से अंग्रेजी माध्यम का झूठा सपना बेचा जा रहा हो और इस सपने के भ्रम में उसकी झोली का सब कुछ झटकने की तैयारी की जा रही हो।

इस सवाल पर गहराई से मंथन करने की जरूरत है। कोठारी ने ही उन्नत समाज के लिए एक जैसी शिक्षा की भी सिफारिश की थी। पड़ोसी स्कूल की अवधारणा पेछा की थी। आज इन सबको हम किनारे कर चुके हैं। लेकिन मौजूदा शिक्षा नीति एवं भाषिक नीति से कहीं हम एक विश्रंखलित, खंडित एवं असंतुष्ट समाज के निर्माण की ओर तो आगे नहीं बढ़ रहे हैं, सोचना होगा। कोठारी ने शिक्षा के उद्देश्य के बारे में कहा था- 'शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य अपने इर्द-गिर्द की दुनिया को समझना है, आत्म-अनुशासन का विकास करना है, अपने घर एवं समुदाय को प्रसन्नता से भर देना है। इसी से शिक्षा आनंददायक, उत्साहजनक होगी एवं नई खोजों की प्रेरक बनेगी।'

आज की शिक्षा-नीति, भाषा-नीति से बन रहे समाज को इस कसौटी पर कसने की जरूरत है। ❖

राजभाषा अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी
☎ संपर्क: 9794843610

◆ लेख ◆
हिंदी वर्तनी की अष्टुद्धियाँ
राजेंद्र कुमार

वर्तनी का सामान्य अर्थ है- वर्ण विन्यास अंग्रेजी में इसे 'स्पेलिंग' और उर्दू में 'हिज़्जे' कहा जाता है। किसी भाषा का कोई सार्थक शब्द किसी वर्णमाला में जिस वर्णानुक्रम में लिखा जाता है, उसे वर्तनी कहते हैं। हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। अतः हिंदी वर्तनी का तात्पर्य है उस शब्द को उपयुक्त देवनागरी वर्णानुक्रम में लिखना।

वर्तनी की एकरूपता भाषा की शुद्धता के लिए परमावश्यक है। वर्तनी का संबंध लिखित भाषा से है। अतः वर्तनी की अष्टुद्धि होने पर अर्थ का अनर्थ होने की संभावना रहती है। वर्तनी की शुद्धता बहुत कुछ शब्द के उच्चारण पर निर्भर है। अतः शब्द का उच्चारण यदि गलत रूप में लिखा जाएगा, तो उसकी वर्तनी भी गलत ही लिखी जाएगी।

वर्तनी की समस्याएँ हर जीवंत भाषा में होती हैं। यहाँ तक कि संस्कृत जैसी सुव्यवस्थित एवं 'पाणिनि' द्वारा व्याकरणवद्ध की गई भाषा में भी कई शब्दों की वर्तनी द्विविध रूपों में प्रचलित है। हिंदी वर्तनी पर विचार करते समय हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भले ही हिंदी का विकास संस्कृत से हुआ हो, तथापि हिंदी एक स्वतंत्र भाषा है, उसकी अपनी स्वतंत्र प्रवृत्ति है और अपना स्वतंत्र व्याकरण है। अतः संस्कृत का अनुकरण हिंदी के लिए अनिवार्य नहीं है। संस्कृत में 'देवता' स्त्रीलिंग है, परंतु हिंदी में उसे पुल्लिंग माना गया है। इसी प्रकार महान्, आर्य, जगत् शब्द संस्कृत में शुद्ध हैं, किंतु हिंदी में ये अष्टुद्धि ही माने जाएँगे। हिंदी में इनके शुद्ध रूप क्रमशः महान, आर्य, जगत् ही हैं, जिन पर हलन्त नहीं लगता है।

वर्तनी की अष्टुद्धियों के प्रमुख कारण

हिंदी में वर्तनी संबंधी जो अष्टुद्धियाँ प्रायः देखी जाती हैं उनके प्रमुख कारण इसप्रकार बताए जा सकते हैं-

1) **उच्चारण की अष्टुद्धता**- शुद्ध उच्चारण की जानकारी न होने के कारण बहुत से लोग शब्द का गलत उच्चारण करते हैं। जब उच्चारण गलत होगा तो उसे गलत ही लिखा जाएगा। अतः वर्तनी की शुद्धता के लिए शुद्ध उच्चारण परमावश्यक है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिए जा

रहे हैं, जो अष्टुद्ध उच्चारण के कारण गलत वर्तनी में प्रायः लिखे जाते हैं-

अष्टुद्ध	शुद्ध	अष्टुद्ध	शुद्ध
सहस्र	सहस्र	अध्यन	अध्ययन
ऊषा	उषा	मधू	मधु
व्यवहारिक	व्यावहारिक	श्राप	प्राप
विद्यार्थी	विद्यार्थी	आधीन	अधीन
निर्दयी	निर्दय	गोधूली	गोधूलि
मंजू	मंजु		

2) **व्याकरणिक अज्ञानता**- हिंदी में वर्तनी संबंधी अधिकांश त्रुटियाँ व्याकरणिक अज्ञानता के कारण होती हैं। लोगों को संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि की सटीक जानकारी नहीं होती परिणामतः वर्तनी संबंधी भूलें हो जाती हैं। यहाँ इसप्रकार के कुछ अष्टुद्ध शब्द दिए जा रहे हैं जिनकी अष्टुद्धता मूलतः व्याकरणिक अज्ञानता के कारण होते हैं-

अष्टुद्ध	शुद्ध	अष्टुद्ध	शुद्ध
उज्ज्वल	उज्ज्वल	मंत्रीमंडल	मंत्रिमंडल
लघूत्तरीय	लघुउत्तरीय	प्राणीमात्र	प्राणिमात्र
कवियत्री	कवयित्री	अधिकारिक	आधिकारिक
निर्धनी	निर्धन	निस्वार्थ	निःस्वार्थ
उपरोक्त	उपर्युक्त	तदोपरांत	तदुपरांत
शष्टि	सष्टि	सष्टा	स्रष्टा
दष्टव्य	द्रष्टव्य	अनुग्रहीत	अनुगृहीत
आध्यात्मिक	आध्यात्मिक	तत्कालिक	तात्कालिक
व्यवसायिक	व्यावसायिक		

'ईत्' प्रत्यय जोड़ने पर 'र' का परिवर्तन 'ऋ' में हो जाता है। इस बात की जानकारी न होने से लोग अनुगृहीत (शुद्ध) को प्रायः अनुग्रहीत (अष्टुद्ध) लिख देते हैं। इसीप्रकार जब किसी शब्द में 'इक' प्रत्यय जुड़ता है, तो उस शब्द का प्रथम स्वर दीर्घ हो जाता है यथा- अर्थ में 'इक' प्रत्यय जुड़ने से शब्द बनेगा- आर्थिक, व्यवहार में 'इक' प्रत्यय जुड़ने से शब्द बनेगा- व्यावहारिक, समाज में 'इक' प्रत्यय जुड़ने से शब्द बनेगा- सामाजिक।

3) **'र' की अष्टुद्धता**- हिंदी की देवनागरी लिपि में

‘र’ जब आधे रूप में (स्वर रहित) आता है, तब उसके चार रूप दिखाई पड़ते हैं-

प्रकाश-Prakash पृथ्वी- Prithvi धर्म- Dharm ट्रेन - Train

प्रायः ऐसे शब्द जिनमें ‘र’ ऊपर लगाया जाता है, लिखने में लोगों से गलती हो जाती है। ऐसे कुछ अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप यहाँ प्रस्तुत हैं-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आर्षावाद	आर्षीवाद	स्वर्ग	स्वर्ग
नर्क	नरक		

वस्तुतः ‘र’ जहाँ बोला जाता है उसके बाद वाले वर्ण के ऊपर लगाया है जैसे- धर्म (अशुद्ध) का शुद्ध रूप होगा धर्मा। यहाँ र, म से पहले बोला जा रहा है। अतः म के ऊपर लगाया जाएगा।

अशुद्ध	शुद्ध
प्रदर्शन	प्रदर्शन
अंतर्राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय

4) क्षेत्रीय प्रयोग- हिंदी एक विस्तृत भूभाग की भाषा है जिसके अंतर्गत पाँच उपभाषाएँ और 18 बोलियाँ हैं। क्षेत्रीय बोलियों में मानक हिंदी से उच्चारणगत भिन्नता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लोगों में जो उच्चारणगत अंतर है, उसके कारण भी हिंदी में वर्तनी दोष आ जाता है। ध्यान रहे हम केवल उसी प्रयोग को शुद्ध मानेंगे, जो मानक हिंदी में प्रचलित है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में ग्यारह को एगारह और ब्रज क्षेत्र में ग्यारा बोलते हैं। वस्तुतः ये दोनों रूप मानक हिंदी के नहीं हैं। अतः यहाँ ‘ग्यारह’ को ही शुद्ध माना जाएगा।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ग्यारा, एगारह	ग्यारह	कउन, कवन	कौन
कउवा, कौवा	कौआ		

क्षेत्रीय प्रयोग के कारण कभी-कभी एक शब्द भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग रूप में पाया जाता है। ऐसी स्थिति में हम मानक हिंदी में प्रयुक्त रूप को ही शुद्ध मानेंगे। यथा- तोरई (अशुद्ध)-कानपुर में बोला जाता है, जबकि आगरा में तोरई (शुद्ध) बोला जाता है। इसका मानक रूप तोरई ही है। अतः इसे ही शुद्ध माना जाएगा।

5) लिपि की अस्पष्टता- देवनागरी वर्णमाला में कुछ लिपि चिह्नों (वर्ण) में इतनी समानता है कि उसके कारण लोग उनसे विभेद नहीं कर पाते और एक के

स्थान पर दूसरे का प्रयोग कर देते हैं। यथा-व, ब दो अलग-अलग वर्ण हैं। ये एक-दूसरे के स्थानापन्न नहीं हो सकते हैं। इनके कुछ शुद्ध-अशुद्ध रूप इसप्रकार हैं-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बे	वे	बेद	वेद
बायु	वायु	बेग	वेग
वकरी	बकरी	वाँस	बाँस
वाहरी	बाहरी	वालक	बालक
वच्चा	बच्चा	वहन	बहन
वगुला	बगुला		

स्पष्ट है कि हिंदी में ‘व’ और ‘ब’ दो अलग-अलग ध्वनियाँ हैं, यदि एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग करेंगे तो वर्तनी गलत हो जाएगी। ‘व’ दंत्योष्ठ्य ध्वनि है जबकि ‘ब’ ओष्ठ्य व्यंजन है। उच्चारण स्थान की सही जानकारी न होने के कारण लोग ‘व’ के स्थान पर ‘ब’ अथवा ‘ब’ के स्थान पर ‘व’ का प्रयोग लेखन में कर देते हैं। शीघ्रता के कारण भी यह त्रुटि होती है।

इसीप्रकार हिंदी देवनागरी लिपि में अनुस्वार (ँ) और अनुनासिक (ँ) दो अलग-अलग ध्वनियाँ हैं जो एक-दूसरे की स्थानापन्न नहीं हैं। उदाहरणार्थ- अनुस्वार का प्रयोग इन शब्दों में होता है- अंग, अंगद, गंगा, हिंदी, कंठ, चंदन आदि।

ध्यान रहे कि बाबू श्यामसुंदर दास ने देवनागरी लिपि में सुधार और संशोधन करते हुए संस्कृत के पंचम वर्णों के स्थान पर हिंदी में अनुस्वार के प्रयोग को स्वीकृत किया था। अतः हिंदी में गंगा, कंठ आदि शुद्ध हैं-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गङ्गा	गंगा	कण्ठ	कंठ
चम्बल	चंबल	पञ्च	पंच

जिन शब्दों को हम ने यहाँ अशुद्ध की श्रेणी में रखा है वे संस्कृत में शुद्ध हैं, पर हिंदी की दृष्टि से अनुस्वार का प्रयोग जिन शब्दों में (ँ) के रूप में किया गया है, वे शुद्ध माने जाएँगे।

छा, ष, स देवनागरी वर्णमाला में तीन अलग-अलग ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण स्थान भी अलग-अलग हैं। ‘छा’ का उच्चारण स्थान तालु है क्योंकि इसके उच्चारण में जीभ तालु का स्पर्श करती है और हवा जीभ के दोनों पाठवर्षों (बगलों) से स्पर्श करती हुई मुख विवर से बाहर निकलती है। इसलिए इसे तालव्य ‘छा’ कहा जाता है।

श्रार, श्रावक, निष्ठा, दक्षा, विष्णोष, श्रासन में यह ध्वनि देखी जा सकती है।

‘ष’ का उच्चारण स्थान मूर्द्धा होने से इसे मूर्द्धन्य ‘ष’ कहा जाता है। इसके उच्चारण में जीभ मूर्द्धा (तालु का सबसे ऊपरी भाग) का स्पर्श करती है और फिर झटके से बाहर आती है, किंतु व्यवहार में अब ‘ष’ का उच्चारण हिंदी में कोई व्यक्ति इस रूप में नहीं करता। अब इसका उच्चारण हिंदी ध्वनि ‘श्र’ के समान होने लगा है। अतः यह कहना तर्कसंगत होगा कि हिंदी में ‘ष’ ध्वनि का उच्चारण समाप्तप्राय है। केवल लेखन में यह ध्वनि संस्कृत के तत्सम शब्दों में शेष बची हैं। यथा- विषम, रोष, निष्ठा, ऋषि, चषक आदि।

‘स’ ध्वनि का उच्चारण स्थान ‘दाँत’ है। इसलिए इसे ‘दंत्य’ स कहा जाता है। ‘स’ के उच्चारण में जीभ नीचे वाली दंत पंक्ति के भीतरी भाग का स्पर्श करती है। ‘श्र’, ‘स’ के उच्चारण स्थान अलग-अलग हैं। अतः उनका उच्चारण भेद भी है, किंतु सामान्यतः लोग इस भेद को नजरअंदाज कर ‘स’ ‘श्र’ के उच्चारण में अभेद करते हैं और ‘स’ के स्थान पर ‘श्र’ बोलते हैं। जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। यहाँ कुछ ऐसे शब्द प्रस्तुत हैं, जिनमें ‘स’ का प्रयोग है यथा- साहस, सड़क, सबेरा, संदूक, सास ‘स’ और ‘श्र’ के विभेद को दिखाने वाले कुछ शब्द यहाँ प्रस्तुत हैं, जिनमें ‘स’ के स्थान पर ‘श्र’ कर देने से अर्थ बदल जाता है। यथा- अंस (कंधा), अंश (भाग)-दोनों श्रुद्ध हैं। स्वजन (बंधु), श्रवनज (कुत्ता)-दोनों श्रुद्ध हैं। सकल (संपूर्ण), श्रकल (टुकड़े)-दोनों श्रुद्ध हैं। सर (तालाब), श्रार (वाण)-दोनों श्रुद्ध हैं। संकर (मिश्रित), श्रंकर (शिव)-दोनों श्रुद्ध हैं।

मात्रा संबंधी अश्रुद्धियाँ

हिंदी वर्तनी में मात्रा संबंधी अश्रुद्धियाँ बहुत अधिक होती हैं। प्रायः इसप्रकार की गलतियाँ शब्द का सही उच्चारण न करने के कारण होती हैं। यहाँ कुछ ऐसे शब्द दिए जा रहे हैं जिनमें मात्रा संबंधी त्रुटियाँ अधिक देखी गई हैं-

अश्रुद्ध	श्रुद्ध	अश्रुद्ध	श्रुद्ध
कालीदास	कालिदास	वाल्मीक	वाल्मीकि
युधिष्ठिर	युधिष्ठिर	पाणिनी	पाणिनि
कवियत्री	कवयित्री	मैथिलीशरण	मैथिलीशरण
नायका	नायिका	विरहणी	विरहिणी

अश्रुद्ध	श्रुद्ध	अश्रुद्ध	श्रुद्ध
वापिस	वापस	मंजू	मंजु
वधु	वधू	एतिहासिक	ऐतिहासिक
नदियों	नदियों	लतायें	लताएँ
पुजारन	पुजारिन	दिवाली	दीवाली
एच्छिक	ऐच्छिक	मधू	मधु
गत्यवरोध	गत्यवरोध	अनाधिकार	अनधिकार
आध्यात्मिक	आध्यात्मिक	भगीरथी	भागीरथी
प्रदर्शनी	प्रदर्शनी	द्वारिका	द्वारका
रचयिता	रचयिता	मिथलेष्ट	मिथिलेष्ट
गायका	गायिका	सामिग्री	सामग्री
साधू	साधु	प्रभू	प्रभु
नूपुर	नूपुर	कविओं	कवियों
वस्तुयें	वस्तुएँ	देहिक	दैहिक
कुमुदनी	कुमुदिनी	रागनी	रागिनी
ऐक्य	ऐक्य	ऊषा	उषा
दुरावस्था	दुरवस्था	आधीन	अधीन
परलौकिक	पारलौकिक	संसारिक	सांसारिक

व्यंजन संबंधी अश्रुद्धियाँ हिंदी में व्यंजन संबंधी अश्रुद्धियाँ भी बड़े पैमाने पर देखी जा रही हैं। यथा-

अश्रुद्ध	श्रुद्ध	अश्रुद्ध	श्रुद्ध
इष्ट	इष्ट	सुमित्रानंदन पंथ	सुमित्रनंदन पंत
पुष्ट	पुष्ट	उच्छिष्ट	उच्छिष्ट
छेपक	क्षेपक	कुष्ट	कुष्ठ
कष्टग्य	कष्टज्ञ	यच्छ	यक्ष
चिन्ह	चिह्न	वन्हि	वह्नि
छणिक	क्षणिक	इक्षा	इच्छा
प्रविष्ट	प्रविष्ट	दीच्छा	दीक्षा
कनिष्ट	कनिष्ठ	ब्राम्हन	ब्राह्मण
जिह्वा	जिह्वा	अंतर्ध्यान	अंतर्धान
अनुसूया	अनसूय	पूज्यनीय	पूजनीय
रचैता	रचयिता	उनचास	उनचास
मानवीयकरण	मानवीकरण	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना
कवित्री	कवयित्री	श्रंशार	शंशार
मध्यान्ह	मध्याह्न	केन्द्रीकरण	केंद्रीयकरण
तेजमय	तेजोमय	सौंदर्यता	सुंदरता
सन्यासी	सन्यासी	छमा	क्षमा ❖

राजभाषा अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर
☎ संपर्क: 9760541604

‘कुरुक्षेत्र’ की विचार-भूमि

डा.कृष्ण चंद्र लाल

रामधारी सिंह ‘दिनकर’ मूलतः

एक चिंतक कवि हैं। जीवन-जगत की समस्याओं पर विचार प्रकट करना और यथासंभव उनके समुचित समाधान ढूँढ़ना उनकी मुख्य चिंता है। उनकी बहुचर्चित कृति ‘कुरुक्षेत्र’ से स्पष्ट होता है कि द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका और त्रासदी को देखकर इस विचार-काव्य की रचना की गयी। ‘दिनकर’ के मानस-पटल पर पहले ही से दो युद्धों की गहरी छाया रही। एक तो ‘महाभारत’ की जो पौराणिक युग के महानाष्ट्र का वृष्टांत था; दूसरा ‘कलिंग युद्ध’ जो ऐतिहासिक तो था ही, जिसमें भयानक नरसंहार भी हुआ था।

इन्हीं दोनों विनाशकारी युद्धों में मिल गया था आधुनिक काल के द्वितीय विश्वयुद्ध का वह विनाशकारी तांडव जिसमें मानव निर्मित बम ने मनुष्य को भाप बनाकर सोख लिया और धरती पर शेष रह गए मानव मात्र के तमाम जले-भुने श्राव। महाविनाश की इन क्रूर लीलाओं ने ‘दिनकर’ के हृदय को विदीर्ण और व्यथित कर दिया। वह सोचने पर विवश हो गए- ‘आखिर युद्ध क्यों? कौन उत्तरदायी है विनाशकारी युद्ध के लिए? धरा पर कैसे लायी जा सकती है सुख-शान्ति? कैसे समाप्त हो सकती है युद्ध की विभीषिका।’ -इन जैसे अनेक प्रश्नों को सोचते-विचारते ‘दिनकर’ ने कर डाली ‘कुरुक्षेत्र’ जैसे अमर काव्य-कृति की रचना।

महायुद्ध के विषाद और पृष्ठचाताप से श्रुत होकर यह रचना ‘युद्ध’ को अनिवार्य घोषित करती है किंतु अंततः यह रचती है लोकमंगल विधायनी मानवता के मधुर सपने। इसी क्रम में यह जीवन और जगत के अनेक ऐसे प्रश्नों, जिज्ञासाओं और समस्याओं पर भी प्रकाश डालती है जिनसे मनुष्य प्रायः जूझता-टकराता रहता है। ‘दिनकर’ ने अंतिम समाधान पा लेने का दावा नहीं किया है। उन्हें जो कुछ भी उचित और विवेक-सम्मत लगा है, उसे निरूपित कर दिया है। उन्होंने विचारों को महत्व दिया है, विचारधारा को नहीं। उन्होंने जीवन और मनुष्यता को वरेण्य ठहराया है, किंतु किसी भी तरह के मतवाद को नहीं, इसलिए उनके विचारों में कई तरह के

दर्शन की छाया मिलती है और उनसे मुक्ति पाने की चेष्टा भी। वह बचाना चाहते हैं जीवन को। ‘कुरुक्षेत्र’ का विधिवत अनुष्ठीलन करके हम समझ पाते हैं कि युद्ध, हुंकार, ललकार, रणभेरी और बलिदान का मंत्र फूँकने वाले कवि ‘दिनकर’ युधिष्ठिर के पृष्ठचाताप, भीष्म की गुरु-गर्जना से जीवन के लिए किस तरह के विचारों वाले मोती चुनते हैं।

धर्मराज युधिष्ठिर और भीष्म पितामह के मध्य हुए वार्तालाप से ‘दिनकर’ ने युद्ध के औचित्य-अनौचित्य पर विचार किया है जब शोक और पृष्ठचाताप से दग्ध युधिष्ठिर भीष्म पितामह से जाकर कहते हैं- ‘हाय पितामह! महाभारत विफल हुआ।’ सफलता तो इसकी तब होती जब कौरव जीवित रहते और पांडव राज-सुख भोगते, किंतु युद्धोपरांत दृश्य तो असह्य है। यह विजय तो मुझे कराल-नागिन-सी डँस रही है। राज-सुख जैसे कीच का कमल है। मन करता है कि अकेला कहीं भाग जाऊँ किसी वन में। पता होता कि युद्ध का यह परिणाम होगा तो तन-बल की जगह आत्म-बल से युद्ध किया होता।

जवाब में भीष्म पितामह युधिष्ठिर को कुछ पल विचार करने के उपरांत बताते हैं- ‘तूफान आता है और काल-सा वनों में तमाम द्रुमों को तोड़ता-झकझोरता और मूलोच्छेदित कर भू पर सुलाता चला जाता है, किंतु बचा हुआ वृक्ष कलांत पत्तों को झुकाए, स्तब्ध मौनाकाश में सोचता है-भेजती हमें प्रकृति भला तूफान क्यों?’ जड़ वृक्ष को ज्ञात नहीं कि यह प्रकृति के प्राण का आवेगमय विस्फोट है जो प्रचंड निदाघ से निरंतर जमा होता रहता है और सहज ही फूट पड़ता है एक दिन। यह विस्फोट सहज और अनिवार्य है। इसीतरह, नर में विकारों की शिराएँ अग्नि की भाँति दग्ध होती रहती हैं और एक दिन व्यक्ति के क्षुद्र अंतर्व्योम में प्रचंड आवेग के साथ धधक उठती हैं और तब समुदाय का आकाश भी क्षोभ, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष और गरल से दग्ध हो उठता है। यही है युद्ध की स्थिति-

भट्टियाँ इस भाँति जब तैयार होती हैं, तभी युद्ध का ज्वालामुखी है फूटता

राजनीतिक उलझनों के ब्याज से
या कि देश-प्रेम का अवलंब ले
किंतु सबके मूल में रहता हलाहल है वही
फैलता है जो घृणा से, स्वार्थमय विद्वेष से।

स्पष्ट है कि युद्ध के मूल में व्यक्ति और समुदाय की ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और अहंकार की भावना ही सर्वोपरि है। भीष्म समझाते हैं युधिष्ठिर को कि युद्ध करना तो कोई नहीं चाहता क्योंकि सभी होते हैं उसके दुष्परिणाम से सुपरिचित, किंतु जब युद्ध थोप ही दिया जाता है तब प्राणमय नर में छिपा शार्दूल जाग उठता है और तब युद्ध उसी तरह अवश्यंभावी हो जाता है जैसे रोग के उपचार के लिए तिक्त औषधि का सेवन-

रुग्ण होना चाहता कोई नहीं/ रोग जब आ गया पास हो/ तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या? श्रमिंत होगा नहीं मिष्टान्न से/ औ' समर तो और भी अपवाद है/ चाहता कोई नहीं इसको मगर/ जूझना पड़ता सभी को, शत्रु जब/ आ गया हो द्वार पर ललकारता!/ जीने के लिए चाहिए अंगार जैसी वीरता....

यदि कोई किसी का अधिकार छीन रहा हो तो त्याग-तप से काम लेना अनैतिक और पाप है। न्याय और स्वत्व के लिए लड़ना और मरना-मारना पुण्य है। इसी तरह की अनिवार्यता से उत्पन्न हुआ था 'महाभारत' का युद्ध। अन्याय का प्रतिकार करना धर्म है, विरोध नहीं करना अधर्म। तब परिणाम की चिंता करना व्यर्थ है। आत्मबल, तपोबल, क्षमा, दया, सहिष्णुता जैसे मानवीय गुण श्रेष्ठ हैं किंतु जब समस्या मनुजता और दनुजता के बीच उठ जाए तब मनुजता व्यक्ति-धर्म से उसका सफलतापूर्वक प्रतिकार नहीं कर सकती। बुद्धि और हृदय, देह और मन, धर्म और स्नेह के द्वंद्व में फँसे भीष्म की आत्म-स्वीकृतियों से स्पष्ट होता है कि बुद्धि के शासन में रहकर जब हृदय की कड़ी अवहेलना हो जाती है तभी 'महाभारत' जैसा विध्वंसकारी रण होता है। 'कुरुक्षेत्र' के प्रारंभिक चार सर्गों में भीष्म अपनी ओजपूर्ण स्वर में प्रतिशोध की ज्वाला को दहकाते जरूर हैं, किंतु चौथे सर्ग के अंत में उनके अनेक आयामों वाले चिंतन का धरातल भी बदल जाता है और वह भी पष्ठचाताप की अग्नि में जलने लगते हैं। इसीलिए 'दिनकर' ने पंचम और षष्ठम् सर्ग में धर्म, स्नेह, दया का दीप विष्टव में जलाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

पंचम सर्ग में 'दिनकर' रेखांकित करते हैं कि युधिष्ठिर एक साथ दो लोक में हैं। जिस लोक में उनका शरीर है, वह युद्ध, घृणा, द्वेष, दंभ, ईर्ष्या से परिपूर्ण है किंतु उनका मन दूसरे लोक में है जहाँ पर न युद्ध है, न स्वार्थ, न संताप, न घृणा, न द्वेष। इस लोक में शोणित का ताप नहीं है, नर के सिर पर रण का अभिघ्राप नहीं है, जीवन समता की छाँह-तले पलता है और घर-घर पीयूष प्रदीप जलता है। इसी लोक में विचरण करते हुए युधिष्ठिर अपने वर्तमान के दाह और उसके कारणों को ठीक-ठीक पहचान पाते हैं। महाभारत के बाद होता है मनुष्यता का महारण। यह अभीप्सा आकस्मिक नहीं है। युधिष्ठिर के रूप में 'दिनकर' एक नया धर्म-प्रदीप जलाने की आश्वस्ति से भर उठते हैं।

षष्ठम् सर्ग से 'दिनकर' की विचार-भूमि पूर्णरूपेण बदल जाती है। अब तक वह युद्ध के औचित्य-अनौचित्य, धर्माधर्म, नीति-अनीति, वीरता-करुणा, युद्ध और शान्ति, दया-स्नेह पर विचार कर रहे थे जिससे लगता था कि वह भीष्म के विचारों के ही साथ हैं। यही वजह है कि षष्ठम् सर्ग प्रबंध के ढाँचे से छिटक कर जैसे उन्मुक्त-सा हो गया है। षष्ठम् सर्ग में जब 'दिनकर' पहुँचे तब उनके सामने वर्तमान युग अपनी समस्याओं के साथ उपस्थित था। महाभारत और कलिंग युद्ध के बाद दो-दो विष्टव युद्ध की भीषण संहार-लीला हो चुकी थी; फिर भी मनुष्य के कदम ध्वंस की ओर ही बढ़ते जा रहे थे। यह देख 'दिनकर' विकल हो पुकार उठे-

धर्म का दीपक, दया का दीप
कब जलेगा, कब जलेगा विष्टव में भगवान?
कब सुकोमल, ज्योति से अभिसिक्त
हो सरस होंगे जल-सूखी रसा के प्राण?

'दिनकर' अनुभव करते हैं कि आज भी भोग-लिप्सा उद्दाम होकर लहरा रही है.... वैज्ञानिक प्रगति ने मनुष्य के चरण-तल में भूगोल सीमित कर दिया है, आकाशा तक को मुट्ठी में दे दिया है किंतु इस प्रगति ने मनुष्य को शृङ्खल-कुक्कुर से भी हीन बना कर रख दिया है। मनुष्य वचन से देवता, कर्म से नीच और रक्त-पिपासु बना बैठा है। विचारणीय यहाँ पर यह है कि 'दिनकर' मनुष्य की निस्सीम प्रगति को किस 'कोण' से देख रहे हैं। वह प्रगति-विरोधी नहीं हैं, किंतु निरुद्देश्य और विध्वंसकारिणी प्रगति के वह घोर विरोधी हैं। वह

यह देखकर हतप्रभ और व्यथित हैं कि इतनी प्रगति के बावजूद मनुष्य पशुता के ऊपर नहीं उठ सका है। जाहिर है, बुद्धि, वैभव और शक्ति सामर्थ्य से मनुष्य का भला नहीं होने वाला।

‘कुरुक्षेत्र’ के सातवें सर्ग में भीष्म ने युधिष्ठिर के ही मनोभावों को प्रायः दोहराते हुए कहा है कि मनुज जोड़ेगा मनुज से जब उचित संबंध और जब नहीं होगी धरा नर के रुधिर से लाल/ श्रेय होगा सुष्ठु विकसित मनुज का वह काल/ श्रेय होगा धर्म का, आलोक का वह निर्बंध। जिन मानवीय मूल्यों से अभिसिक्त होने के कारण युधिष्ठिर युद्ध के जिन कारणों से व्यथित थे, भीष्म भी यह मानते हैं कि मनुष्यता के विकास से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है। कुछ लोग कह सकते हैं कि साम्यवाद और सर्वोदय की भावनाओं को लक्षित करके पौराणिक पात्र भीष्म के मुख में कुछ विचार थोप दिए गए हैं; किंतु सत्य तो यह है कि ‘दिनकर’ युद्ध की समस्या पर विचार करते हुए जिस बिंदु पर पहुँचे हैं, वह साम्यवाद हो अथवा अध्यात्मवाद उन्हें इस पर बहस नहीं करनी। वह तो यह रेखांकित करना चाहते हैं कि मनुष्यता का कल्याणकारी सुपथ यही है।

दिनकर की मान्यतानुसार समता, सौहार्द, धर्म की महत्ता, चरित्र बल की श्रेष्ठता, भाईचारा, व्यक्ति एवं

समष्टि में एकत्व, लोभ-स्वार्थरहित जीवन दृष्टि, परस्पर-प्रीति, परदुःख कातरता, करुणा, हृदय-बुद्धि का योग ही मानव-समाज को सुख-शान्ति प्रदान कर सकता है। एक दिन अवश्य ऐसा आएगा जब धरती स्वर्ग बन जाएगी- आशा के प्रदीप को जलाये चलो धर्मराज/ एक दिन होगी मुक्त भूमि रण-भीति से/ स्नेह बलिदान होंगे पाय नरता के एक/ धरती मनुष्य की बनेगी स्वर्ग प्रीति से....

निस्संदेह पुराण, इतिहास, वर्तमान मानव समाज को खूबी के साथ खंगालते हुए दिनकर ‘कुरुक्षेत्र’ में जो विचार-भूमि तैयार करते हैं, वह मनुष्यता के बहुत ही काम की है। उसी में उसका विकास और हित निहित है। दिनकर को गाँधीवाद, अध्यात्मवाद, समाजवाद, साम्यवाद, मार्क्सवाद के चौखटों में सीमित करना उनकी जीवनधर्मी उन्मुक्त चेतना को संकुचित करना है। ‘कुरुक्षेत्र’ को धर्मक्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित करके ही मानव-कल्याण का पथ प्रष्ट किया जा सकता है। यहाँ पर ‘धर्म’ का अर्थ पूजा-पाठ अथवा कर्मकांड नहीं; बल्कि कर्तव्य की वह व्यापक भावना है जो मनुष्य को मनुष्य के साथ उचित संबंध बनाने की प्रेरणा देती है। ❖

भूतपूर्व विभागाध्यक्ष/हिंदी, गो.वि.वि.

डी-55, सूरजकुंड कालोनी

गोरखपुर-273015

☎ संपर्क: 9451958715

प्रश्न- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत कर्मचारियों के लिए कौन-कौन सी निर्धारित परीक्षा है और उनका शैक्षिक स्तर क्या है?

उत्तर- केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण देने के लिए निम्नलिखित तीन पाठ्यक्रम हैं-

प्रबोध- यह प्रारंभिक पाठ्यक्रम है और इसका स्तर लगभग प्राइमरी स्कूल की हिंदी के स्तर के बराबर है।

प्रवीण- इसका स्तर लगभग मिडिल स्कूल की हिंदी के स्तर के बराबर है।

प्राज्ञ- इसका स्तर लगभग हाई स्कूल की हिंदी के स्तर के बराबर है।

हिंदी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर हिंदी में देना

जिस अधिकारी के हस्ताक्षर से कोई पत्रादि जारी होता है, स्वयं उसकी यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि यदि कोई पत्र हिंदी में प्राप्त हुआ है अथवा किसी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन पर यदि हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों तो उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाए।

◆ लेख ◆
राम के भरत
 कमल नयन पांडेय

श्री भरत जी राम के प्रिय भाई हैं। दशरथ के पुत्र हैं। कैकेयी के बेटा भरत श्री दशरथ जी के चार पुत्रों में से एक हैं। राजा दशरथ श्री रामचंद्र जी को राजतिलक देने को तत्पर हैं। गुरु वशिष्ठ एवं अन्य स्वजनों तथा साधु-संतों के विचार से यह शुभ घड़ी आई है। कल ही राजतिलक की व्यवस्था बनी है। अयोध्यावासी प्रसन्न हैं। शुभ घड़ी की प्रतीक्षा की जा रही है। ऐसी स्थिति में कैकेयी की प्रिय दासी मंथरा यह प्रसंग छेड़ देती है कि भरत के भाई राम जब राजा हो जाएंगे तो कौशल्या महारानी होगी और तुम उस सम्मान से रहित हो जाओगी। उधर देवताओं की व्याकुलता बढ़ी और सरस्वती जी से उन्होंने प्रार्थना की। मंथरा की बुद्धि फेरने का काम सरस्वती जी ने किया। कैकेयी और मंथरा में संवाद हुआ। मंथरा की राय मानकर कैकेयी कोप भवन में गई। महाराज दशरथ कोप भवन गए। राजा-रानी में संवाद हुआ। राजा ने बहुत समझाया किंतु रानी का कोप बना ही रहा। राजा बाहर नहीं निकले- दिन निकल आया। वे शोक संतप्त थे। सुमंत जी महल में गए वहाँ से लौट कर श्रीराम को महल में भेजा। श्रीराम जी कैकेयी के भवन गए- पिता जी को अस्त-व्यस्त देखकर और रानी को क्रोधमुद्रा में देखकर माता जी से पूछा- माँ! पिता जी के दुःख का कारण क्या है? माँ से उनका संवाद हुआ। माँ से पूछा पिता जी के दुःख का कारण बताओ मैं उनके कष्ट के निवारण का उपाय करूँ जिससे उनका दुःख दूर हो जाए। कैकेयी ने कहा- हे राम! कभी राजा ने मुझसे दो वरदान मांगने के लिए कहा था। आज मैंने अपनी इच्छानुसार दो वरदान मांगे जिसे सुनकर उन्हें बहुत सोच हुआ। वह वरदान देने में सकुचा गए और कुछ न बोले। यदि तुम चाहो तो उनकी आज्ञा का पालन करो। यथा-

‘सुत सनेह इत, वचन उत संकट परेउ नरेष्ठ,

सकहु तो आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेष्ठा।’

एक तो उनका वचन, दूसरा तुम्हारे प्रति उनका स्नेह, यदि इस पर विचार कर तुम उसका पालन कर सको तो उनके क्लेश मिट जाएँ। श्रीराम ने उसे सहर्ष स्वीकार किया और यह कठोर वरदान उन्हें ऐसा लगा जो निष्ठुरता भी सुनकर व्याकुल हो जाए। उसकी जीभ धनुष

के समान और वचन वाण के समान थे तथा राजा उसके निष्ठाने के समान थे। कैकेयी कठोर शरीर धारण कर बैठी थी, जैसे भावों की निष्ठुरता साक्षात् शरीर धारण कर लिया हो। सूर्य कुल भूषण श्रीराम ने मुस्कराते हुए कहा, जो वाणी के भूषण थे। श्रीराम ने कहा- माँ वह सुत बड़ा भाग्यशाली है जो माता-पिता की वचन का अनुरागी हो-पालन करता हो। हे माँ! माता-पिता को तुष्ट करने वाला बालक सारे संसार में दुर्लभ है। यहाँ तो अच्छी बात यह भी है कि वन में मुनियों का मिलाप होगा जिसमें मेरा सभी प्रकार से कल्याण होगा- उसमें भी फिर पिता जी की आज्ञा और हे जननी तुम्हारी सम्मति है। राम के मनोभाव तथा प्राणप्रिय भरत के प्रति उनके अटूट प्रेम-

‘भरत प्राण प्रिय पावहिं राजू

विधि सब विधि मोहि सनमुख आजू

जो न जाऊँ वन ऐसे ही काजा,

प्रथम गनिय मोहि मूढ़ समाजा।

इतना ही नहीं-

सेवहिं अरुण्डु कल्प तरु त्यागी

परिहरि अमृष्ट लेहु विष मांगी

तेउ न पाइ अस समय चुकाहि

देखु विचारि मातु मन माही।

भरत के प्रति राम के मन में यह प्रेम भाव-स्नेह पूरित वचन राम के सद्प्रेम भरत हेतु व्यक्त किए गए हैं जो वंदनीय है, श्रेयस्कर हैं। राम ने माँ से आगे कहा माँ-

थोड़ि हि बात पिता दुख भारी

होति प्रतीत न मोहि महतारी।

हे माता! राजा तो बड़े ही धीर और गुणों के आगार हैं अर्थात् समुद्र हैं अवश्य ही मुझसे कोई बड़ा अपराध हो गया है जिसके कारण महाराज मुझसे कुछ नहीं कहते।

घटनाक्रम आगे बढ़ी। फिर दशरथ जी दिवंगत हो गए। वशिष्ठ जी ने भरत-शत्रुघ्न को बुलाया। फिर दशरथ जी की अंत्येष्टि हुई। फिर भरत और वशिष्ठ संवाद हुआ और श्रीराम को लाने के लिए चित्रकूट जाना- अयोध्यावासियों सहित भरत-शत्रुघ्न आदि का वन गमन हुआ।

आगे चलकर श्रीभरत-भारद्वाज संवाद हुआ। भारद्वाज जी द्वारा श्रीभरत का सत्कार हुआ- ष्टयाम एवं सफेद गंगा की लहरों से पुलकित मन भरत जी ने हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और कहा कि हे तीरथराज! आप समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं। आपका प्रभाव वेदों में प्रसिद्ध और संसार में प्रकट है। मैं अपना क्षत्रिय धर्म छोड़कर-(क्षत्रिय भीख नहीं मांगता), फिर भी भीख मांगता हूँ। आरत जन कौन सा कुकर्म नहीं करता। दानी मांगने वाले की वाणी को सफल करते हैं अतः

अरथ, न धरम न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान
जनम जनम रति राम पद, यह वरदानु न आन॥

त्रिवेणी की विनती करने पर यह मंगल वाणी सुनायी पड़ी कि

तात भरत तुम सा विधि साधू।
राम चरण अनुराग अगाधू।
वाद ग्लानि करहु मन माही।
तुम सम रामहि कोऊ प्रिय नाही॥

भारद्वाज जी ने जब भरत जी को दंडवत प्रणाम करते हुए देखा तो-

धाई, उठाई लाइ उर लीन्हे,
दीन्हि अष्टीष कष्टारथ कीन्हे।

मुनि ने उन्हें आसन दिया। भरत सोच में थे कि मुनि को क्या उत्तर दूँगा, अगर वे कुछ पूछेंगे तो- भरत जी के शील-संकोच को देखकर महर्षि बोले- 'सुनो भरत, हम सब खबर पा चुके हैं। विधाता के कर्तव्य पर कुछ वृष्ट नहीं चलता। तुम माँ की कर्तव्य को समझ कर ग्लानि मत करो। हे तात! कैकेयी का कुछ दोष नहीं, उसकी बुद्धि तो सरस्वती बिगाड़ गयी थी। तुम्हारा निर्मल यष्ट गाकर लोक और वेद दोनों बड़ाई पाएँगे।'

तुम भाग्यशाली हो क्योंकि तुम दशरथ के पुत्र और राम के प्यारे भाई हो। हे भरत! रामचंद्र जी के मन में तुम्हारे समान प्रेमपात्र दूसरा कोई नहीं। भारद्वाज जी का कथन है-

तुम पर अति सनेह रघुवर के
सुख जीवन जग जस जड़नर के

भरत! तुम तो शरीरधारी श्रीरामचंद्र जी के प्रेम ही हो। तुम्हारा यष्ट रुपी चंद्रमा सदा उदय रहेगा, कभी

अस्त होगा ही नहीं। मुनि भारद्वाज को चिंता हुई कि इतने बड़े अतिथि को नेवता दिया है, जैसा देवता हो वैसी ही उसकी पूजा भी होनी चाहिए। गुसाँई की यह बात सुनकर आठ सिद्धियाँ और नौ निधियाँ आ गई और कहा- हे गुसाँई! जैसी आपकी आज्ञा वैसा ही हम करेंगे। अब वहाँ सुंदर-सुंदर सारे ऐष्टवर्य का सामान भरकर रख दिया गया। सब घरों में बहुत से भोग-दास-दासी सब सुलभ हो गए। भरत के लिए यह व्यवस्था देखकर देवराज इंद्र को सोच हो गया।

उन्होंने सोचा कि बनी बात बिगड़ने वाली है। उन्होंने अपने गुरु वृष्टस्पति जी से कहा कि हे गुरु! वही उपाय कीजिए जिससे राम-भरत की भेंट न हो सके क्योंकि राम संकोची हैं और प्रेम के वृष्ट में हैं और भरत जी प्रेम के समुद्र हैं। इंद्र की बात सुनकर देवगुरु मुस्कराये। उन्होंने हजार नेत्रों वाले इंद्र को ज्ञान रूपी नेत्रों से रहित मूर्ख समझा और कहा- हे देवराज! मायापति श्रीरामचंद्र जी के सेवक के साथ जो माया करता है- तो वह उलटकर अपने ही ऊपर आ पड़ती है। हे सुरेष्ट! उस बार तो राम-रुख पाकर कुछ किया था पर इस समय कुचाल करने से अपनी हानि होगी। वे अपने प्रति किए अपराध से रूष्ट नहीं होते किंतु जो उनके भक्त के प्रति अपराध करता है वह श्रीरामचंद्र जी की क्रोधाग्नि में जल जाता है। इस महिमा को दुर्वासा ऋषि जी जानते हैं। गुरु वृष्टस्पति ने कहा-

भरत सरिस को राम सनेही

जगु जप रामु राम जप जेही।

ऐसे भरत जी के समान श्रीरामचंद्र जी का प्रेमी कौन होगा? राम भक्त का कार्य बिगाड़ने की बात मन में मत लाइए। इससे लोक में अपयष्ट और परलोक में दुःख होगा। साथ ही श्लोक दिनों-दिन बढ़ता ही जाएगा। ऐसे श्रीराम स्नेही श्री भरत को श्रात्-श्रात् प्रणाम! ❖

प्राचार्य

विद्या धर्म संजीवन

संस्कृत महाविद्यालय

देवरिया-274001(उ.प्र.)

☎ संपर्क: 9452454037

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की शक्ति एवं सीमा

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

‘राष्ट्र’ शब्द से किसी देश-विशेष और उसके निवासियों का बोध होता है। निष्ठचय ही प्रत्येक राष्ट्र का एक पष्ठक एवं स्वतंत्र अस्तित्व होता है और उसमें अनेक जातियों, धर्मों के अनुयायी सम्मिलित रहते हैं। विभिन्न प्रांतों के निवासी विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोलते हैं। इस विभिन्नता के बावजूद उनमें एक सुनिश्चित संबद्धता और एकसूत्रता भी होती है, क्योंकि पूरे राष्ट्र का शासन एवं कार्य संचालन सुदक्षता के साथ एक ही केंद्र से होता है।

अस्तु राष्ट्र की एकता और समग्रता को और भी सुदृढ़ करने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता प्रत्येक राष्ट्र को होती है जिसका प्रयोग राष्ट्र के समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में किया जाता हो। केंद्रीय और सरकारी काम-काज भी उसी भाषा में व्यवहृत होते हैं। एक प्रकार से संपूर्ण राष्ट्र की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है राष्ट्रभाषा। सभी प्रांतीय भाषाएँ वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से समुन्नत नहीं होतीं। इसके विपरीत राष्ट्रभाषा को विविध विषयों के योग्य पारिभाषिक शब्दों से युक्त, बोधगम्य, उन्नत और व्यवहारपरक बनाना पड़ता है। यह दुरुह कार्य सभी स्थानीय भाषाओं के द्वारा संभव नहीं हो पाता; इसलिए भी एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होती है। विदेशी भाषा एवं विषय-वस्तु के मंतव्य को व्यक्त करने, अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को बनाने तथा उनके मध्य संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पड़ती है। इसप्रकार, सहज ही किसी राष्ट्र के लिए राष्ट्रभाषा की अनिवार्यता को महसूस और आँका जा सकता है।

15 अगस्त 1947 को देश को नैतिक एवं सैद्धांतिक स्वतंत्रता मिलने के साथ ही एक ‘राष्ट्रभाषा’ की आवश्यकता का बोध हुआ। अपने देश में बहु-प्रचलित भाषा हिंदी के होते हुए भी आयातित भाषा अंग्रेजी भाषा का मन मारकर व्यवहार की भाषा बनाये रखने का कोई औचित्य नहीं बनता था। फलतः प्रचलन, उपयोगिता, प्राचीनता के रूप में देवभाषा संस्कृत से निकटता, अभिव्यक्ति की क्षमता तथा बहु-प्रशंसित-व्यावहारिकता जैसे राष्ट्रभाषा के लिए अपेक्षित गुणों के आधार पर हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप

में स्वीकार कर लिया गया। अब हमारे लिए यह विचारणीय हो जाता है कि एक राष्ट्रभाषा के रूप में हम हिंदी की शक्ति को पहचानें तथा उसकी सीमाओं को जाँचें-परखें।

किसी भी भाषा की शक्ति का विशेष अनुमान उसकी लोकप्रियता से लगाया जा सकता है। पिछले दिनों किए गए दो महत्वपूर्ण सर्वेक्षणों के आधार पर हिंदी को विश्व की तीन सफलतम और प्रबलतम भाषाओं में रखा गया है। विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरा स्थान होने पर भी यह एक अटल सत्य है कि राष्ट्रमंडलीय देशों में बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का स्थान सर्वोपरि है। संपूर्ण राष्ट्रमंडल में मात्र हिंदी ही 15 करोड़ से भी ज्यादा व्यक्तियों के द्वारा बोली जाती है। बंगला, अंग्रेजी, मराठी, तमिल, पंजाबी, कन्नड़ इत्यादि का स्थान हिंदी के बाद ही आता है। देश में 25 करोड़ से ज्यादा व्यक्तियों की मातृभाषा हिंदी है। विश्व के अन्य राष्ट्रों में भी हिंदीभाषियों की संख्या कम नहीं।

तथ्यों और सूचनाओं से ज्ञात होता है कि पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान में भी हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग पौने चार लाख तथा बंगलादेश में ढाई लाख से भी ज्यादा है। वे इसका इस्तेमाल मातृभाषा के रूप में करते हैं। दक्षिण अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित राज्य गुयाना में वहाँ की लगभग 45 प्रतिशत जनता हिंदी ही बोलती है। मारीशस की 65 प्रतिशत जनता हिंदी भाषी है। फीजी और त्रिनिदाद को तो हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय गढ़ ही कहा जाता है। इसतरह से ब्रिटेन, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका और विभिन्न अफ्रीकी-एशियाई देशों में हिंदीभाषी न्यूनाधिक संख्या में बसे हुए हैं।

संप्रति विश्व के लगभग 129 से भी ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था है। कई ऐसे भी देश हैं जहाँ प्रारंभिक स्तर पर भी हिंदी को पढ़ाने की व्यवस्था है। विश्व के चार महत्वपूर्ण रेडियो प्रसारण केंद्रों के जरिये पिछले कई वर्षों तक हिंदी में कार्यक्रम दिए जाते रहे हैं। टीवी के बढ़ते चलन ने रेडियो पर अंतर्राष्ट्रीय सेवा को जरूर प्रभावित किया और हिंदी-प्रेमियों को सेवा से वंचित होना पड़ा है।

जहाँ तक प्रकाशन का प्रश्न है, हिंदी के अनेक

प्रबुद्ध रचनाकारों की कितनी ही रचनाएँ विदेशी भाषाओं में निरंतर अनुदित और प्रकाशित हो रही हैं। वारसा वि.वि. के विद्याविद् मारिया क्षिप्टोफ विस्की ने मच्छकटिकम् (शूद्रक), उत्तर रामचरितम् (भवभूति) समेत वात्स्यायन की कृष्टियों सहित कई कृष्टियों के अनुवाद किए। हिंदी कहानियों के अनुवाद भी किए जिनमें प्रेमचंद, भीष्म साहनी, जैनंद्र कुमार, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल, गंगा प्रसाद विमल इत्यादि की प्रमुख कहानियाँ हैं। इसके अतिरिक्त श्री विस्की हिंदी कविताओं-कहानियों-नाटकों के अनुवाद भी प्रकाशित कराते रहते हैं। इसीतरह विष्टव के श्रेष्ठ साहित्य देर-सवेर हिंदी में भी अवष्टय ही प्रकाशित होते हैं। केंद्र एवं राज्य सरकारों के द्वारा अनुवाद की विस्तृत योजना चलाई जा रही है। इस पर कुछ लोगों के द्वारा आरोप लगाया जाने लगा है कि हिंदी तो जैसे अनुवाद की भाषा मात्र बनती जा रही है। ऐसे छिद्रान्वेषियों को हिंदी भाषा की उस विराट और ऐतिहासिक भूमिका की झलक नहीं मिल पाती जो वह गहनतापूर्वक निभा रही है।

आज जो लोग हिंदी को एक 'सामान्य-सी भाषा' या 'अनुवाद की भाषा' मात्र कहकर उसे अंग्रेजी के मुकाबले कमजोर साबित करना चाहते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि अंग्रेजी भी शुरु-शुरु में एक सामान्य-सी ही भाषा थी। आरंभ में इसका विकास घरेलू काम-काज अथवा धार्मिक संस्कारों के निर्वहन की भाषा के रूप में हुआ था। तब इसकी शब्द संपदा भी बेहद सीमित थी। एक जाति-विष्टोष की हार्दिकता मात्र ही तब इसमें दिखती थी। इंग्लैंड के निवासी कालांतर में जो भूमिका या दायित्व निभाने जा रहे थे, उसका कोई पूर्व संकेत भी तब नहीं मिलता था, किंतु विष्टव में औद्योगिक क्रांति के साथ आये उपनिवेष्टावाद ने अंग्रेज जाति को एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी। स्वयं उनके यहाँ अंग्रेजी के विकास के पूर्व अभिजात-वर्ग के लोगों तक पर फ्रांसीसी भाषा की धुंध छाई हुई थी। इंग्लैंड में भी, वहाँ के लिए विदेशी भाषा 'फ्रेंच' का स्थान अंग्रेजी ने ले लिया।

ध्यातव्य है कि फ्रेंच के स्थान को रिक्त कराकर उस पर अंग्रेजी को स्थापित करने का श्रेय- वह भी एक व्यापक प्रभामंडल के साथ-वहाँ की सरकार को उतना नहीं है जितना उन अंग्रेज साहित्यकर्मियों और भाषाविदों को, जो भाषा के क्षेत्र में अपने देश इंग्लैंड का महत्व समझ सके और उसके लिए तन-मन-धन से समर्पण के साथ प्रस्तुत भी हुए। छल-बल के जरिये येन-केन-

प्रकारेण अंग्रेजी हुकूमत पैर पसारती गयी। फिर 'अंग्रेजी साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता'- यह उक्ति प्रचलित हो जाने के बावजूद वे मात्र गर्वोक्ति से ही संतुष्ट हो जाने वाले लोग नहीं थे। अंग्रेजी भाषा को विष्टव की श्रेष्ठतम भाषा के माध्यम के रूप में विकसित करने का अंग्रेजों ने संकल्प लिया और लगभग दो शताब्दियों तक अनवरत श्रम के बाद वे अपने सद्प्रयत्नों में सफल भी हुए।

कभी अंग्रेजी को भी उनके देश इंग्लैंड में ही 'अनुवाद की भाषा' कहा जाता था, किंतु अंग्रेज लेखक इसे अपनी विष्टोष प्रशंसा मानते थे। अतएव यदि कोई हिंदी को 'अनुवाद की भाषा' कहना चाहता है, तो कहे। हमें इसमें हीनता अथवा लज्जा की अनुभूति नहीं होनी चाहिए। इससे तो हिंदी भाषा की विष्टोष गहनतम शक्ति का बोध होता है कि आज हिंदी की ग्रहणशीलता विष्टवोन्मुखी होती जा रही है।

यह तो हुई हिंदी की 'कायिक शक्ति' के संबंध में दो-टूक बातचीत। अब यदि हिंदी की 'आत्मिक शक्ति' पर भी विचारणा की जाए तो यह संकेत करना पर्याप्त होगा कि भारत ही नहीं, विष्टव की अनेक भाषाओं की तुलना में हिंदी नमनीय, लचीली, सर्वग्राही और वैज्ञानिक है। जहाँ तक भारतीय भाषाओं का प्रश्न है, उनका क्षेत्र हिंदी की अपेक्षा बहुत ही सीमित है। उनकी शब्दावली और लिपि कठिन और एकदेशीय, क्षेत्रीय है। दक्षिण भारतीय भाषाओं का तो परिवार ही भिन्न है। प्रांतीय भाषाओं के रूप में वे भले महत्वपूर्ण हों किंतु राष्ट्र की अभिव्यक्ति के लिए हिंदी के अतिरिक्त किसी अन्य भारतीय भाषा का औचित्य नहीं बनता।

हिंदी भाषा में सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक और वैज्ञानिक विचारणाओं के तत्व भी अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अधिक हैं। आचार्य विनोबा ने लिख रखा है- 'यदि हिंदी का प्रबल आधार नहीं होता तो कष्टमीर से कन्याकुमारी तक और असम से केरल तक के गाँव-गाँव में जाकर भू-दान, ग्रामदान का संदेश मैं नहीं पहुँचा पाता।' (राष्ट्रभाषा: संपादक मोहन लाल भट्ट पृष्ठ-71) जाहिर है, सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से भी हिंदी कहीं ज्यादा समृद्ध और समीचीन है।

हिंदी भाषा और इसकी देवनागरी लिपि दोनों ही न केवल वैज्ञानिक है, अपितु इनमें वैज्ञानिक तत्वों को ग्रहण करने की भी पर्याप्त क्षमता है। हिंदी में विभक्तियाँ अलग से लगायी जाती हैं, अतः गह्वीत शब्दों में विकार

कम आता है। अंग्रेजी-उर्दू जैसी अन्य भाषाओं के शब्दों को भी अपने व्याकरण के अनुशासन से निबद्ध करके अपना लेने में हिंदी की क्षमता सर्वाधिक है। उच्चारण में जितनी ध्वनियों का जितना अंश प्रयोग में आता है, उतना ही लिखा भी जाता है। कोई ध्वनि न तो अनावश्यक लिखी जाती है, न ही आवश्यक ध्वनि का अभिप्रेत अंश छोड़ा जाता है। जो लिखा जाता है, वही पढ़ा भी जाता है। मात्राओं के रूप में भी स्थिरता और वैज्ञानिकता है।

यह हिंदी की देवनागरी लिपि की ही 'नैतिक शक्ति' है कि अंग्रेजी तक में अपवादों का राज है, किंतु हिंदी में अपवादों का प्रायः अभाव है। वैज्ञानिकता के साथ ही उपयोगिता की दृष्टि से भी हिंदी भाषा की लिपि सर्वाधिक उपयोगी है। इसी लिपि में संस्कृत, प्राकृत, पाली जैसी प्राचीन भाषाएँ भी लिखी गयी हैं। इसी से मिलती-जुलती लिपि में बंगला, मराठी, गुजराती, गुरुमुखी भी लिखी जाती है। यह गुण भी हिंदी को राष्ट्रभाषा के योग्य बनाता है।

हिंदी की शक्ति पर पर्याप्त विचार कर लेने के पष्ठचात् राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की कुछ सीमाओं की ओर भी ध्यान दिलाना उचित होगा। विशेष रूप से उन प्रश्न चिह्नों के रूप में जो हिंदी पर लगाये जाते रहे हैं। बहुधा ये कहते हैं कि हिंदी के माध्यम से उच्च शिक्षा एवं शोध कार्य संभव नहीं विशेषकर विज्ञान, चिकित्सा, कृषि, मनोविज्ञान, गणित और अर्थशास्त्र में। पुणे के 'गोखले इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनामिक्स' से कुछ वर्षों तक हिंदी में 'अर्थ विज्ञान' नामक पत्रिका निकाली गयी, किंतु मार्च 1969 से अब सिर्फ अंग्रेजी में ही छप रही है। इसी तरह विज्ञान एवं तकनीकी इंजीनियरिंग विषयक पत्रिकाओं की भी हिंदी में बहुत कमी है। देश में इंजीनियरिंग की पत्रिकाएँ जहाँ अंग्रेजी में ढाई सौ से ज्यादा छपती हैं, वहाँ हिंदी में दो दर्जन भी नहीं।

जाहिर है- पत्रिका ही नहीं पुस्तक-प्रकाशन की दिशा में भी अंग्रेजी भाषा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं पर हावी रहती है; किंतु इसमें दोष भाषा का तो नहीं, उपेक्षा करने वालों की मानसिकता का कहीं ज्यादा है। हिंदी में मराठी, बंगला, कन्नड़, मलयाली, तमिल, तेलुगू, पंजाबी, गुरुमुखी, गुजराती, उड़िया, नेपाली से लेकर विष्व की तमाम भाषाओं के अनुवाद कार्य भी खूब हुए हैं जो जमकर प्रकाशित होने के बाद सराहे भी गए हैं। देश में सर्वाधिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हिंदी में ही होता है। यह एक शुभ लक्षण है। अशुभ तथ्य यही है कि कई पत्र-पत्रिकाएँ काल-कवलित हो जाती हैं। यथा- धर्मयुग, सारिका, साप्ताहिक हिंदुस्तान इत्यादि

का प्रकाशन बंद हो जाना साहित्य-प्रेमियों को बहुत ही खला और अवसाद से भर गया। इसमें दोष हिंदी का ही नहीं, अंग्रेजी-परस्त मानसिकता का जरूर है। इसी क्रम में भारतीय रेलवे से संबद्ध अनेक केंद्र अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रभाषा की अप्रतिम सेवा कर रहे हैं।

अंग्रेजी-परस्त मानसिकता वालों के समक्ष जापान का उदाहरण देना उचित होगा। कई दशक तक जापान में चिकित्सा विषयक उच्च शिक्षा का एकमात्र माध्यम जर्मन भाषा थी। फिर क्रमशः जापानी भाषा में चिकित्सा विषयक शब्दावली को इस सीमा तक विकसित किया गया कि जापानी भाषा के माध्यम से भी चिकित्सा विषयक उच्च शिक्षा ग्रहण करना संभव होने लगा। यही स्थिति अन्य तकनीकी विषयों के साथ भी हुई।

अपने देश में भी काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुछ शोध छात्रों ने विज्ञान विषयक पाठ्यक्रम में शोध कार्य हिंदी में करके सातवें दशक से अब तक अनेक उपाधियाँ प्राप्त कीं। इसतरह उन्होंने सिद्ध कर दिया कि किसी भी विषय में शोध कार्य के लिए हिंदी माध्यम सीमित नहीं, वरन सक्षम और समर्थ है। संप्रति संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत तो कर लिया गया है, किंतु व्यावहारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान उसे अभी तक नहीं मिल पाया है। विचित्र विडंबना है कि लंदन तथा केंब्रिज वि.वि. से तो हिंदी की शिक्षा पायी जा सकती है, किंतु अपने ही देश के कई वि.वि. ने इस सुविधा से परीक्षार्थियों को वंचित कर रखा है। ऐसे कुल 28 वि.वि. हैं जहाँ स्नातकीय एवं स्नातकोत्तरीय परीक्षा और शिक्षा के माध्यम के लिए ऐच्छिक रूप से हिंदी माध्यम नहीं है।

वस्तुतः हिंदी को देश में ही अपरिचित बनाने वाले अपनी ही कठिनाइयों और प्रशासनिक कार्यों में सुविधा के लिए इसका विरोध करते हैं। इनका आरोप है कि प्रशासन, विज्ञान और यांत्रिक कार्यों में निष्पादन के लिए हिंदी में अभी वह क्षमता और शक्ति नहीं आ सकी है जो अंग्रेजी भाषा में है। कुछ हिंदी विरोधियों के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा जैसा पद मिल जाने से अन्य प्रदेश भाषायी रूप से पिछड़ जाएँगे, किंतु विरोधियों के इन तर्कों में अकारण आक्रांत होने का भाव मिलता है। यदि हिंदी को यथार्थतः सरकारी कामकाज की भाषा बनाने पर अमल किया जाए और सरकारी संगठनों, विभागों मंत्रालय विशेष के कार्य संचालन और नीति-निर्धारण के लिए अनिवार्यता घोषित की जाए तो हिंदी प्रगति पथ पर अग्रसर होने के साथ ही विष्वभाषा बनने की ओर कदम बढ़ाती नजर आएगी।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार करने का आग्रह वस्तुतः किसीप्रकार के प्रभुत्व अथवा श्रेष्ठता की महत्वाकांक्षा की पूर्ति करने का छल-छद्म नहीं है। अब तक हिंदी का जो विकास अथवा प्रचार-प्रसार हुआ है, वह उसकी क्षमता, सरलता और जीवनी-शक्ति के कारण ही। वह आज की राष्ट्रीयता के साथ सुविकसित हुई है। सभी प्रादेशिक और क्षेत्रीय भाषाओं का स्नेह और सहयोग पाकर वह सुविकसित और संपुष्ट हुई है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी को देष्ट-विदेष्ट के विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों साधकों, कलाकारों, मनीषियों और साहित्यकारों का आशीर्वाद मिला है। राष्ट्रीय जागरण के आलोक में बतौर राष्ट्रभाषा हिंदी ने अपना विस्तार किया है और ज्ञान-विज्ञान की सभी दिशाओं में वांड.मय का आलोक बिखेरा है। आज भी यह उसी उदारता और

पूर्ण निष्कपटता के साथ सभी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ जीवन-निर्माण की दिशा में संलग्न है।

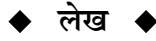
प्रश्न आज यह नहीं कि हिंदी विष्टव की भाषा बनती है अथवा नहीं; संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रतिष्ठित होती है या नहीं- बल्कि महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वह भारत और राष्ट्र के समग्र व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में भी क्या स्वीकृति होती है? जिस दिन हिंदी को राष्ट्रवासियों के द्वारा यह स्वीकृति मिल जाएगी, उसी दिन विष्टवभाषा या राष्ट्रसंघ की सर्वमान्य भाषा बन जाने से इसे कोई शक्ति रोक नहीं सकती। इसकी नैतिक, सांस्कृतिक और छाष्टवत शक्ति इस स्वीकार्यता से निस्संदेह अक्षुण्ण बन चुकी होगी। ❖

वरिष्ठ उप संपादक 'आज'
बैंक रोड, गोरखपुर-273001(उ.प्र.)

☎ संपर्क: 9451202409

रेल दावा अधिकरणों में गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के लिए मानक कार्यसूची

1. समिति के अध्यक्ष का संबोधन
2. पिछली बैठक के कार्यवष्ट की पुष्टि
3. पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों/सिफारिशों पर की गई कार्रवाई का विवरण
4. निर्धारित प्रयोजनों में हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग-
 - क) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3)
 - ख) फार्म, पत्र शीर्ष-रबड़ की मोहरें/धातु सीलें आदि,
 - ग) नाम पट्ट/सूचना-पट्ट, दीवारों/फर्नीचर/उपकरणों आदि पर अंकन,
 - घ) सामान्य आदेष्ट
5. हिंदी में दिए गए निर्णयों की स्थिति
6. सेवा पुस्तिकाओं और रजिस्ट्रों में हिंदी में प्रविष्टियाँ
7. वाद सूचियाँ हिंदी में भी जारी करना
8. पक्षों(पार्टियों) को नोटिस आदि हिंदी में जारी करना (केवल 'क' और 'ख' क्षेत्रों की पार्टियों को)
9. वार्षिक कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर विचार-
 - 9.1. फ़ैक्स संदेष्ट देवनागरी में भेजना (केवल 'क' और 'ख' क्षेत्रों के लिए)
 - 9.2. द्विभाषी इलैक्ट्रानिक उपकरणों की व्यवस्था
10. हिंदी आष्टुलिपि/टंकण में प्रशिक्षित आष्टुलिपिकों/टाइपिस्टों से हिंदी में काम लेना
11. पास/पीटीओ हिंदी में जारी करना ('क' और 'ख' क्षेत्रों के लिए)
12. अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेष्टन का विवरण तथा गोपनीय रपटें हिंदी में भरना
13. फाइलों पर नोटिंग हिंदी में जारी करना
14. अधिकारियों का दौरा कार्यक्रम हिंदी में जारी करना
15. प्रोत्साहन योजनाओं का कार्यान्वयन
16. अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषय



अपनों के बीच परायी हिंदी

नीलम प्रभा श्रीवास्तव

भाषा राष्ट्र की पहचान होती

है। यदि भाषा नहीं तो राष्ट्र भी नहीं। भाषा का विकास ही समाज और देश की सभ्यता के विकास का प्रतीक है। राष्ट्र के विकास में भाषा का बहुत बड़ा योगदान रहता है। यह बात दुनिया के कई देशों ने साबित भी किया है। चीन, जापान, कोरिया, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों ने विदेशी भाषा को उतना महत्व कभी नहीं दिया जितना कि दक्षिण एशियाई देशों जैसे- भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि ने दिया। ये ही कारण हैं कि यह देश आज भी विकासशील है। जबकि चीन, जापान, फ्रांस आदि देश जो कि अधिकतर काम अपनी भाषा में करते हैं विकसित हैं। पर यह बात हमारे देश के लोगों को समझ में नहीं आती है। अतएव तमिलनाडु के बाद अब महाराष्ट्र, असम और मणिपुर में भी हिंदी का खुलेआम विरोध हो रहा है। यदि विज्ञान और आर्थिक विकास की तुलना करें तो पाएँगे कि यहाँ पर हम पिछड़े हुए हैं क्योंकि हमने भाषा के विकास के लिए कभी भी ईमानदारी से प्रयास नहीं किया।

भारत में जो लोग हिंदी से जुड़े हैं वे भी यह मानने लगे हैं कि हिंदी का वर्तमान और भविष्य ज्यादा उज्ज्वल नहीं है। इसलिए वे अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवाने लगे हैं। सरकारी विद्यालयों में छठी क्लास से अंग्रेजी की पढ़ाई होती है किंतु अब अंग्रेजी का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि सरकार को पुनः प्रथम कक्षा से अंग्रेजी शिक्षा को प्रारंभ करने के अलावा कोई और रास्ता दिखाई नहीं पड़ता। हमारे देश में अंग्रेजी भाषा के विकास का जितना प्रयास किया गया उतना यदि हिंदी के लिए किया गया होता तो हिंदी की स्थिति कुछ और ही होती।

किसी भी भाषा को सीखने में कोई हानि नहीं है किंतु जब विदेशी भाषा आपके जीवन का पर्याय बन जाए तो यह बात चिंताजनक है और विशेषकर तब जब आपके पास अपनी भाषा हो। यदि आप अपनी भाषा को महत्व नहीं देकर अपने ही देश में एक विदेशी भाषा को विकसित करते हैं तो आप अपनी भाषा और राष्ट्र का अपमान करते हैं।

यह शब्द बार-बार दोहराया जाता है कि हिंदी किसी पर जबर्दस्ती लादी नहीं जाएगी, परंतु यदि स्वाधीनता प्राप्ति के तुरंत बाद हिंदी को पूर्णरूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया होता तो आज यह समस्या नहीं होती और राष्ट्र एकता के सूत्र में बँध जाता। इस संदर्भ में इंग्लैंड का उदाहरण हमारा मार्गदर्शक हो सकता है। 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में तब वहाँ सारा कार्य फ्रांसीसी भाषा में चलता था। ब्रिटेनवासी अंग्रेजी भाषा को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे इसलिए वहाँ के पार्लियामेंट को 1731 में यह कानून बनाने को बाध्य होना पड़ा कि जो वकील अंग्रेजी में बहस नहीं करता उसे 50 पाउंड का जुर्माना देना पड़ेगा। इसतरह से अंग्रेजों पर अंग्रेजी लादी गई। अपने देश में ऐसा कुछ नहीं हुआ है फिर यह बवंडर क्यों? सवाल यह है कि जब संपूर्ण संविधान लादा हुआ नहीं है तो संविधान का 17वाँ भाग कैसे लादा हुआ है। अगर संविधान लागू है तो हिंदी भी लागू है। संसार के अन्य देशों में उनके राजभाषा का वर्चस्व है पर हमारे देश में राजभाषा तो हिंदी को स्वीकार किया गया है लेकिन वर्चस्व अंग्रेजी भाषा का छाया हुआ है।

सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा राजनीतिक मंचों पर राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का इजहार करने वालों की कमी नहीं है, लेकिन भाषा के प्रश्न पर एक अजीब शून्यता लगभग सर्वत्र व्याप्त है। भाषा का सवाल किसी कोण पर जाकर राष्ट्रीयता से भी जुड़ता है और उससे हमारी पहचान बनती है। संभवतः इस सच्चाई का बोध जन-मन को छूता ही नहीं अथवा लोग इसे सिरे से नकार देने की स्थिति में हैं। देश का मध्य वर्ग अपना और अपने बच्चों का भविष्य अंग्रेजी में तलाश रहा है। अंग्रेजी उन्हें अब भविष्य का स्वर्णित प्रभात दिखाई देने लगी है। वे यह मानने को कतई तैयार नहीं हैं कि भाषा का संदर्भ राष्ट्रीयता से जुड़ा है। उस राष्ट्रीयता से, जो हमारी अस्मिता की पहचान बनती है। ऐसा नहीं है कि वे राष्ट्रीयता के प्रति अपना भावात्मक लगाव खो चुके हैं, राष्ट्रध्वज हो या राष्ट्रगीत, राष्ट्रीयता के लगभग सभी प्रतीकों का संदर्भ उनका राष्ट्रीय संदर्भ है। अगर नहीं है तो सिर्फ उनकी अपनी भाषा का, उस भाषा का जो

सदियों से देष्टा की संस्कृति को वहन करती रही है।

14 सितंबर को संविधान सभा में हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने का प्रस्ताव जिन दो विद्वानों ने रखा, वे थे कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी एवं गोपाल स्वामी अयंगर और यह दोनों ही अहिंदीभाषी थे। गाँधी जी के निर्देश पर हिंदी और देवनागरी लिपि अपनाने के प्रस्ताव को समर्थन भी रामास्वामी अय्यर एवं श्रीरामास्वामी अयंगर ने ही दिया था। सर टी. विजया राधास्वामी ने तो 1928 में हिंदी को प्रत्येक प्रांत में अनिवार्य विषय बना देने का प्रस्ताव दिया था जिसे राजगोपालाचारी ने 1938 में मद्रास में लागू भी किया। इतनी प्रतिबद्धता की स्वीकृति से बनी हिंदी, जब हिंदीभाषियों की ही उपेक्षा की शिकार हो रही है तो अन्य अहिंदीभाषियों के विरोध पर टिप्पणी करना उपयुक्त नहीं है।

सच मानिए हिंदी न केवल जनसंचार की दृष्टि से लोकप्रिय है अपितु जन-व्यवहार में उपयोग की दृष्टि से सशक्त माध्यम भी रही है। यह विष्टव की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से भी वह किसी से पीछे नहीं है। सदियों से भारत के जनजीवन में हिंदी का प्रचलन रहा है। पुराने संधिपत्रों, शिलालेखों, राजनीतिक, व्यापारिक एवं अदालती कागजों में इसका व्यापक प्रयोग मिलता है। हिंदी ने संस्कृत तथा भारत की अन्य भाषाओं के शब्दों को ही आत्मसात नहीं किया है अपितु अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, पुर्तगाली, तुर्की आदि विदेशी भाषाओं के भी बहुत से

शब्दों को अपनाकर अपनी शब्द संपदा को समृद्ध किया है। यह शब्द ग्राह्यता हिंदी की जीवंत शक्ति का परिचायक है। इसके अतिरिक्त हिंदी भारत के वष्टत भू-भाग में बोली ही जाती है परंतु अन्य देशों में बोलने वालों की संख्या कम नहीं है। भारत के बाहर 160 से अधिक विष्टवविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाने लगी है। रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, बुल्गारिया, चीन, त्रिनिडाड, वियतनाम, सूरीनाम, मारीशस, फिजी, नेपाल आदि देशों में हिंदी जब लोकप्रियता प्राप्त कर रही है तब अपनों के ही बीच वह परायी क्यों? इस पर विचार किया जाना चाहिए।

संघ की राजभाषा घोषित होने के पश्चात् हिंदी प्रचार के सभी स्तरों पर एक नई गति प्राप्त हुई है। आज के संदर्भ में इस तथ्य को स्वीकार करते हुए हिंदी को जन-सामान्य की भाषा बनने की आवश्यकता है। भारत के करोड़ों लोगों के पास पहुँचने के लिए हिंदी को जन-सामान्य के रूप में अपनाने की अपेक्षा है। किसी समय हिंदी का विरोध करने वाले प्रदेशों में भी हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। यदि इस प्रकार के प्रयास जारी रहे तो निश्चय ही वे दिन दूर नहीं जब हिंदी हर जुबाँ पर मुखरित होकर राजभाषा होने की सार्थकता को साकार करेगी। ❖

वरिष्ठ अनुवादक
मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा
पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर

प्रश्न- हिंदी व अहिंदीभाषी राज्यों में सूचना पट्ट/नामपट्ट आदि के लिए भाषाओं को किस क्रम से लिखा जाता है?

उत्तर- हिंदी भाषी राज्यों में सूचना पट्ट/नाम पट्ट आदि के लिए भाषाओं का क्रम है: हिंदी पहले और अंग्रेजी बाद में। अहिंदी भाषी राज्यों में स्थानीय भाषा, हिंदी और अंग्रेजी।

प्रश्न- सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग निर्धारित लक्ष्यानुसार सुनिश्चित करने के लिए चैक प्वाइंट्स कहाँ-कहाँ स्थापित किए गए हैं?

उत्तर- सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग निर्धारित लक्ष्यानुसार सुनिश्चित करने के लिए वेबसाइट, रोनियो, प्राप्ति एवं प्रेषण अनुभाग, तारघर, फैक्स केंद्र, भंडार तथा लेखा विभागों में चैक प्वाइंट्स स्थापित किए गए हैं।

◆ लेख ◆
देश को एकसूत्र में बाँधे है हिंदी
राजीव शर्मा 'मासूम'

भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी है। यह जनभाषा है। यह हमारी संपर्क भाषा है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी ही संपर्क भाषा के रूप में अहम् भूमिका निभायी थी। सच तो यह है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी ने आम-जनता को एकता के बंधन में बाँधा था। आठवें हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था- 'हिंदी को ही राष्ट्रभाषा का दर्जा मिलना चाहिए।' सही मायनों में हिंदी को राष्ट्रभाषा की पदवी तभी से ही सहज रूप से मिल गयी थी। संविधान सभा द्वारा दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। हिंदी को राजभाषा बनाने का फैसला इसलिए लिया गया क्योंकि देश में हिंदी काफी समय से संपर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल होती रही थी। साथ ही इसलिए भी कि अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या बहुत अलग थी। चूँकि 14 सितंबर 1949 को संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इसी उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है।

देश की आबादी आज लगभग सवा करोड़ के समीप है। देश के लगभग 55 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते हैं। कहना न होगा कि हिंदी देश को एकसूत्र में बाँधने का काम कर रही है। यह समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय भाषा है। पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी का आज कोई सानी नहीं है। हिंदी भाषा ने इस क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है।

हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस भाषा को आसानी से समझा जा सकता है। हिंदी भाषा समृद्ध भाषा बन गयी है। भाषा के तौर पर इसका क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। हिंदी भाषा में अनेकों भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं। इनमें से बहुत से शब्द ऐसे हैं जो पूरी तरह से इस भाषा के साथ घुल-मिल गए हैं। हिंदी की विशेषता है कि हमारे देश के अधिकांश लोग भले ही उनका ताल्लुक किसी भी प्रांत से क्यों न हो, वे हिंदी को न केवल समझते हैं बल्कि व्यवहार में भी लाते हैं।

हिंदी को एकसूत्र में बाँधने में संतों, महात्माओं

और उपदेशकों की भी अहम् भूमिका रही है। सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई के भजनों का यहाँ की जनता पर खासा प्रभाव पड़ा। इसका मूल कारण यह था कि ये अपने गाये भजनों में सरल और सहज भाषा का प्रयोग करते थे। संत महात्मा अपने प्रवचन हिंदी भाषा में देते थे। इस कारण इनके प्रवचनों को अधिक से अधिक लोग सुनते थे और उन प्रवचनों में बतायी गयी सीखों को अमल में लाते थे। पंजाब में गुरुनानक देव, राजस्थान में दादू दयाल तथा महाराष्ट्र में संत नामदेव और संत ज्ञानेश्वर ने देश की संस्कृति और उसके प्रचार के लिए हिंदी को सशक्त माध्यम बनाया था। उनके द्वारा बतायी बातों का आम-जन पर गहरा प्रभाव पड़ता था।

हिंदी पत्रकारिता ने भी हिंदी को एकसूत्र में बाँधने का कार्य किया। हिंदी पत्रकारिता ने हिंदी को जनभाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हालाँकि हिंदी की पत्रकारिता का जो रूप आज हम देखते हैं उसे पाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिर भी हिंदी पत्रकारिता अपनी दिशा से कभी नहीं भटकी। इसी का परिणाम है कि आज हिंदी का समाचार पत्र पढ़ने वाले पाठकों की संख्या अंग्रेजी पाठकों की अपेक्षा अधिक है।

कंप्यूटर के आने से भी हिंदी भाषा को नया रूप मिला है। पहले कंप्यूटर पर हिंदी में टाइप करना मुश्किल कार्य था। लेकिन अब माइक्रोसॉफ्ट और गूगल के इंडिक की-बोर्ड टूल की मदद से कंप्यूटर पर हिंदी टाइप करना बेहद आसान हो गया है। खास बात यह है कि ये टूल कुछ ही समय में इंस्टाल हो जाते हैं। इन टूल्स को भाषा इंडिया और गूगल की वेबसाइटों से आसानी से पैसा खर्च किए बिना डाउनलोड किया जा सकता है। अंत में यह कहने में गर्व महसूस होता है कि हिंदी ने देश को एकसूत्र में बाँधने में अहम् भूमिका निभायी है और आगे भी यह अपने प्रयास में सफल साबित होगी। विकसित हो रही नयी-नयी तकनीक भी हिंदी का लोहा मानने लगी है। ❖

वरिष्ठ अनुवादक

राजभाषा विभाग, उत्तर रेलवे

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

☎ संपर्क: 09810472957

ब्राह्मणत्व को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता

सुनील कुमार

सबसे अहम प्रश्न है

कि ब्राह्मण कौन है? जीव, देह, जाति, ज्ञान-धर्म इनमें ब्राह्मण कौन है? सर्वप्रथम विचारणीय है कि क्या जीवन ब्राह्मण है? ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जीवन भूतकाल से भिन्न-भिन्न देहों में निवास करता आ रहा है। वह एक रूप है, एक ही जीव को कर्मवृत्ति अनेक देह मिलती है। तो फिर देह ब्राह्मण है? नहीं, क्योंकि ब्राह्मण से चांडाल तक सभी लोगों की पंच भौतिक देह एक ही तरह की है। सब में बुढ़ापा और मृत्यु एक ही तरह आता है। देह अगर ब्राह्मण होता तो पिता के मृत्यु देह का दाह संस्कार करने पर पुत्र को ब्राह्मण हत्या का पाप लगता। तो फिर क्या जाति ब्राह्मण है? नहीं, ऐसा होता तो अन्य प्राणियों में अनेक जातियाँ होतीं। शास्त्र इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य जाति के सिवा भी अन्य जाति से अनेक महर्षियों की उत्पत्ति हुई है। जैसे- श्रृंगी ऋषि मध्वी से, कौशिक ऋषि कुश से, जांबुक ऋषि जंबुक (स्यार) से, अगस्त्य ऋषि घड़े से उत्पन्न हुए कहे जाते हैं। जाति के बिना भी अनेक ज्ञान संपन्न ऋषि हुए हैं। इसलिए जाति ब्राह्मण नहीं है। तो फिर क्या ज्ञान ब्राह्मण है? नहीं, शास्त्रों के ज्ञाता और परमार्थदर्शी अनेक क्षत्रिय भी हुए हैं। इसलिए ज्ञान ब्राह्मण नहीं है। तो फिर ब्राह्मण कौन है? वह जो अद्वितीय, जाति, गुण, क्रियाहीन, सत्य, अनंत ज्ञानस्वरूप आत्मा का साक्षात्कार प्रत्यक्ष भाव से करता है। इसकी पुष्टि स्मृति, श्रुति, पुराण और इतिहास भी करता है अन्यथा और किसी प्रकार से ब्राह्मण की सिद्धि नहीं हो सकती।

मनुष्यों के श्रेष्ठता का आधार पवित्रता, बुद्धिमत्ता, विद्या, विवेक, सदाचरण, त्याग और तपस्या माना जाता है। मनुष्यों में श्रेष्ठतम कौन है? किनमें मनुष्यत्व के सर्वोपरि गुण हैं? इन प्रश्नों के उत्तर हिंदू संस्कृति को अपनाने पर प्राप्त होती है। श्रेष्ठता का निर्णय किस आधार पर- क्या यह शारीर शक्ति है या संस्कार, विषम प्रवृत्ति, प्रेरक तत्व, कार्य संचालन या बुद्धि वैभव? शारीरिक बल में तो पशु ऊँचे माने जा सकते हैं। बुद्धि और ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण ही मनुष्य अन्य जीवों पर राज करता है। परंतु इस मानव जगत में आहार, निद्रा

और मैथुन तक ही सीमित रहने वाले अनेक मनुष्य हैं। ये पशु की श्रेणी में ही रह गए। बुद्धि का विकास न होने के कारण ये समाज का साधारण छोटा कार्य ही संपादित कर पाते हैं। कठोर दैहिक तप ही इनकी विशेषता है। कुछ मनुष्य शारीरिक श्रम के साथ-साथ बुद्धि का भी उपयोग करते हैं। उनका लक्ष्य केवल अपनी आवश्यकता की पूर्ति करना होता है। किसान खेती करके, तो वैश्य व्यापार द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर लेते हैं। कुछ मनुष्य बुद्धि और शक्ति दोनों से ही अधिक काम लेते हैं। समाज की रक्षा का उपाय सोचते और करते हैं। इन मनुष्यों में से जिनमें दो तत्वों की प्रधानता होती है अर्थात् जिनमें बुद्धि व ज्ञान का चरम विकास होता है। दूसरों की भलाई और परोपकार के लिए जो अपने ज्ञान का उपयोग करता है वही ब्राह्मण की श्रेणी में आता है। यह उस विशिष्टता को परिभाषित करता है जिसमें मानवता का चरम विकास पाया जाता है।

मनुस्मृति ने भी उद्घोषित किया है कि 'विप्राणां ज्ञानतो ज्येष्ठम्' अर्थात् ब्राह्मण की प्रतिष्ठा ज्ञान से है। ब्रह्म विद्या का अधिकारी ब्राह्मण चिंतनशील होने के साथ-साथ प्रकाश-स्तंभ का कार्य भी करता है। ब्रह्मतेज से युक्त होकर वह अपनी गतिशीलता के कारण चारों ओर की परिस्थिति को प्रभावित करता है। आर्य संस्कृति में इसे ब्राह्मी वृत्ति का संपादन कहा गया है। मनु ने इसकी प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, व्रत, हवन, त्रयी, विद्या, इज्या, सुत, महायज्ञ और यज्ञ रूप साधनों का वर्णन किया है। स्वाध्याय, अप्रमत्त होकर वेदशास्त्र आदि ज्ञान-विज्ञान के ग्रंथों के अध्ययन में निरत रहना, व्रत रखना, उपवास आदि द्वारा इंद्रिय-संयम, दैनिक अग्नि होत्र करना, ज्ञान-कर्म, उपासना रूप वेदत्रयी का आचरण, दशा पौर्णमास आदि यज्ञों का करना, गृहस्थ धर्म का पालन, संतति का प्रसव, महायज्ञ, सर्वहुत तथा पंच महायज्ञों का करना और अंततोगत्वा समग्र यज्ञ पूर्ण जीवन को यज्ञमय ही बना देना ब्राह्मणत्व प्राप्ति के साधन कहे गए हैं।

ब्राह्मण को शास्त्रों में भूसुर कहा गया है। भूसुर अर्थात् पृथ्वी का देवता। एक देवता वे होते हैं जो स्वर्ग

में रहते हैं और उद्देश्य रूप से मनुष्यों की सेवा सहायता करते हैं। उनकी कक्षा पात्र बनने के लिए लोग तरह-तरह के पूजा उपचार करते हैं ताकि वे प्रसन्न एवं परितुष्ट रहें। पृथ्वी के देवता-भूसुरों की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है। इन्हें ऊँचा माना जाता है और हमारी श्रद्धा भाव के चलते ही ये पूजनीय माने जाते हैं। समय-समय पर इन्हें दान-दक्षिणा, भोजन आदि कराया जाता है ताकि परितुष्ट होकर ये हमारा कल्याण करेंगे।

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त मंत्रों में समाज पुरुष के स्वरूप का दिग्दर्शन करते हुए ब्राह्मण को 'मुख' की उपमा दी गई है। मुख अर्थात् सिर। उसी में मस्तिष्क, जीभ, नाक, कान, आँख, वाणी, रसना जैसे महत्वपूर्ण अवयव। ब्राह्मण को मस्तिष्क ही नहीं समाज का आँख माना गया है। वह दूरदर्शितापूर्वक, सूक्ष्म दृष्टि से यह जान लेता है कि मेरी निज की विचारधारा, भावना, आकांक्षा, कार्य पद्धति एवं आदर्शवादिता में कहीं कोई त्रुटि तो नहीं आ गई है। चरित्र ही तो ब्राह्मण का धन है। उसमें दोष आ गया तो फिर उसके पास बचा ही क्या? स्वच्छ एवं सभ्य समाज के लिए भी ब्राह्मण को प्रहरी की तरह प्रयत्नशील रहना पड़ता है। जहाँ जो त्रुटियाँ दिखाई पड़ती हैं उन्हें सुधारने के लिए पूरी सामर्थ्य लगा देता है। ब्राह्मण हर संभव उपाय से अपनी और अपने समाज की स्थिति को सँधता है, सुनता है और यह जानने के लिए प्रयत्नशील रहता है कि कहाँ क्या त्रुटि या विकृति उत्पन्न हो रही है। अच्छाइयों के प्रति प्रसन्नता व्यक्त करना और उन्हें प्रोत्साहित करना ब्राह्मण का धर्म है। ब्राह्मण समाज रूपी शरीर में अवांछनीय तत्वों को घुसने नहीं देता। वह पूरी चौकीदारी करता है। दूषित विचारधाराओं और दुष्प्रवृत्तियों का अभक्ष्य कहीं जन-साधारण के मन-शरीर में प्रवेष्टा न कर जाए, उसकी सुरक्षा ब्राह्मण को ही करनी पड़ती है।

ब्राह्मण अपरिग्रही होता है। लोग उसे दान-दक्षिणा देते हैं। वह स्वयं अपनी योग्यता एवं प्रतिभा से भी कमाता है, कमा सकता है। परंतु उस उपार्जन में से शरीर निर्वाह मात्र के लिए लेकर शेष सारा किसी न किसी रूप से समाज को लौटा देता है। उसकी सारी कमाई का लाभ समाज उठाता है। जिह्वा का दूसरा काम है- बोलने का। मधुर बोलना, श्रेयस्कर बोलना, सीमित बोलना वाणी की विभूतियाँ हैं। ये विभूतियाँ जिसकी जिह्वा में है वह अपने

व्यक्तित्व का विकास तो करेगा ही दूसरों का भी मार्ग प्रशस्त करेगा। जितना उपकार किसी को धन आदि की स्थूल सहायता देने से हो सकता है उससे कई हजार गुना पुण्य-परोपकार दूसरों को सत्प्रेरणा देकर कमाया जा सकता है। ब्राह्मण अपनी सेवा-धर्म वाणी द्वारा ही निभाता है। कथा, प्रवचन, सत्संग, परामर्श, विचार-विनिमय जैसे कार्यक्रमों से अनगिनत लोगों को वह अपने ज्ञान-प्रकाशा से प्रकाशित करता रहता है।

'वयं राष्ट्रे जागृताम पुरोहितः' अर्थात् हम ब्राह्मण राष्ट्र को जीवित एवं जाग्रत रखेंगे। अपने समाज में नवजीवन का संचार करते रहना एवं उसके कर्तव्य धर्म को अपनाये रहने के लिए जाग्रत रखना ब्राह्मण का परम पवित्र जिम्मेदारी है। ब्राह्मण वस्तुतः समाज का सच्चा नेता होता है क्योंकि वह जनमानस को पथभ्रष्ट होने से बचा सकता है, रोक सकता है। इसके लिए उसे सबसे पहले अपने को कसना पड़ता है, सुधारना पड़ता है। अपने दोष, दुर्गुणों से लड़ना पड़ता है। मनन एवं चिंतन द्वारा उसे अपनी वासना और तृष्णा को परास्त करना पड़ता है। संयम की कसौटी पर अविरल कसते रहना पड़ता है। ब्राह्मणों का चरित्र एवं व्यक्तित्व ऊँचा न हो तो फिर मार्ग-दर्शन करने की प्रक्रिया ही लड़खड़ा जाएगी। ब्राह्मण घर-घर जाकर अपने यजमानों को उपदेश करते थे, स्त्रियों, बच्चों, युवकों, युवतियों, वृद्धों सभी को उनके कर्तव्य से अवगत कराते थे। जो पथभ्रष्ट हो रहा होता था, उसे संभालते थे। ब्राह्मण फैमिली डॉक्टर की तरह स्वास्थ्य रक्षा संबंधी पूछताछ और व्यवस्था का भार स्वयं उठाते थे। वे यजमानों के घरों के प्रत्येक सदस्य से अपना प्रगाढ़, आत्मीय संबंध बनाए रहते थे और उनका समुचित पथ-प्रदर्शन करते रहते थे। जहाँ सद्बुद्धि रहेगी, नीतिपूर्वक जीवन जीने की पद्धति अपनाई जाएगी, वहाँ सुख, समृद्धि की कमी रह नहीं सकती। सारी जनता फलती-फूलती थी। ब्राह्मण एक माली की तरह बगीचे को बोता, सींचता और बढ़ाता रहता था। उसका बाग-बगीचा पत्र-पुष्पों से सुरक्षित और फूलों से लदा हुआ रहता था। यजमानों के घरों पर जाकर संस्कार पर्व आदि के अवसरों पर उद्बोधन करना और अपने घर-आश्रमों पर उनके पाल्यों के लिए गुरुकुल का संचालन करने से उनके ब्रह्मचर्य को पूरा-पूरा संतोष भी मिलता था। तभी तो वह विष्टव मानव को विराट ब्रह्म की प्रत्यक्ष प्रतिमा मानकर उसका अभिषेक

ज्ञान रूपी अमल से करता रहता है। उसके ब्रह्म धर्म की आत्मा भी यही है। इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए देवता ब्राह्मण का शरीर धारण कर इस धरती पर अवतार लेते रहे हैं। धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश ही तो अवतारवाद का उद्देश्य है। ब्राह्मण का देव-अवतार भी इसीलिए हुआ है कि वह ज्ञान रूपी तलवार लेकर मैदान में उतरता है और अन्याय एवं अज्ञान के शासन को दूर करता चला जाता है। महर्षि परशुराम ने इस पृथ्वी पर ऐसा ही अज्ञानांधकार अपने कुल्हाड़े के बल पर 21 बार मिटवाया था। अज्ञानी को नहीं, अज्ञान को मारने के लिए ब्राह्मण को शूरवीर योद्धा की तरह कुल्हाड़ा निरंतर चलाते रहना होगा।

कल्पवृक्ष अपने नीचे बैठने वालों को कल्पवृक्ष नहीं बना सकता, केवल कुछ कामनाओं को पूर्ण कर सकता है। पारस लोहे को सोना बना सकता है पारस नहीं। अमल पीकर व्यक्ति अमर बन सकता है स्वयं अमल नहीं बन सकता। परंतु ब्राह्मणों में यह विशेषता है कि उसका कष्ट पात्र अपने समीप आने वाले व्यक्ति को अपने जैसा ही बना देता है। अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं। नारद जी के संपर्क में आने से रत्नाकर डाकू से महर्षि वाल्मीकि बने, ध्रुव जैसा अज्ञानी बालक विष्टव-ब्रह्माण्ड का केंद्र बिंदु भी उन्हीं की कष्ट से बने। भगवान बुद्ध के संपर्क से अंगुलिमाल डाकू ही नहीं अंबपाली सदष्ट वेष्टया जैसे पतितों का उद्धार हुआ। समर्थ गुरु रामदास ने एक साधारण से मराठा बालक को छत्रपति शिवाजी बनाकर खड़ा कर दिया। ब्रह्मर्षि विष्टवामित्र द्वारा परीक्षा में तपाया हुआ हरिश्चंद्र एक साधारण राजा से इतिहास प्रसिद्ध सत्यवादी हरिश्चंद्र बन गया। महात्मा गाँधी के संपर्क में आने वाले कितने जवाहरलालों को यष्टस्वी होने का अवसर मिला अन्यथा उन्हें पड़ोसी तक भी न जान पाते। अतएव ब्राह्मणों की कष्ट का ऐसा ही फल होता है जैसे चंदन की सुगंध शीतल होती है।

प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था 'रूसो' के मस्तिष्क की उपज थी तो विष्टव को समता का संदेश देने वाले कार्ल मार्क्स हुए जिनकी दार्शनिक विचारधाराओं से विष्टव लाभान्वित हो रहा है। गाँधी, तिलक जैसे विचारकों ने भारत को स्वतंत्रता की प्रेरणा दी। विचारों की शक्ति धन आदि स्थूल साधनों की अपेक्षा सहस्रों गुनी अधिक

होती है। ज्ञान का दान ब्रह्म-दान कहलाता है जिसका पुण्य सबसे अधिक माना गया है। इतिहास में प्रतिदिन सवा मन स्वर्ण दान करने वाला कर्ण अपनी प्रसिद्धि के लिए चर्चित है परंतु उससे भी सहस्रों गुनी प्रशंसा उनकी होनी चाहिए जो ढेरों ज्ञान का अनुदान मानव समाज को निरंतर देते रहते हैं। नरपशु से ऊँचा उठाकर पुरुष से पुरुषोत्तम बना देने वाला ब्राह्मण हर युग में पूजनीय था, है और रहेगा। उसे कर्ण से भी बढ़कर दानी मानना पड़ेगा और यही वर्तमान समय की मांग है कि ब्राह्मणत्व को पुनर्जीवित किया जाए क्योंकि कहा भी गया है कि 'परावत सिच्यते राष्ट्रं ब्रह्मणे यत्र जीयते' अर्थात् जहाँ ब्राह्मण हारते हैं वह देश खोखला हो जाता है।

भारतीय संस्कृति ने ऐसे अनेक महान ऋषि-मुनि उत्पन्न किए हैं जिन्होंने विष्टव और मानव की सेवा में ही अपना जीवन दान दिया था। विष्टवामित्र, वशिष्ठ, जमदग्नि, कश्यप, भारद्वाज, कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनी, पराशर, याज्ञवल्क्य, शंख, कात्यायन, गाभिल, पिप्लाद, शुकदेव, शंभू, लोमश, धौम्य, वैशम्पायन आदि भारतीय ऋषियों ने अपने को तिल-तिल जलाकर संसार के लिए वह प्रकाश उत्पन्न किया जिसकी आभा अभी तक बुझ नहीं सकी है। सूत और श्रौत ऋषि तो निरंतर प्राचीन काल के महापुरुषों की गाथाएँ विरुदावलियाँ, धर्म चर्चाएँ सुना-सुनाकर मानव जाति की सुप्त अंतरात्माओं को जगाया करते थे। महर्षि दधीचि ने असुरत्व से देवत्व की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ तक दान कर दी थीं। धर्म तथा मर्यादा की रक्षा के लिए बंदा वैरागी खोलते तेल की कड़ाह में कूद पड़े थे। शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट, स्वामी दयानंद सरस्वती, संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, चैतन्य महाप्रभु, संत कबीर, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ आदि असंख्य भारतीय धर्मगुरु लोक हित के लिए जीवनभर घोर परिश्रम, प्रयत्न और परिभ्रमण करते रहे। यही उनके जीवन की साधना थी। उन्होंने अपना सब कुछ देकर लोक-सेवा को एकांत मुक्ति से अधिक महत्व दिया। ❖

वरिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
☎ संपर्क: 09794840672

◆ लेख ◆
हिंदी टाइपिंग टूल: आईएमई
ष्ठ्याम बाबू शर्मा

भारत सरकार ने राजभाषा हिंदी को सर्वव्यापी बनाने तथा यूनिकोड में हिंदी टाइपिंग को प्रोत्साहित करने के लिए समय-समय पर परिपत्र आदि जारी किए हैं। हालाँकि हमारी रेल पर राजभाषा प्रयोग की स्थिति काफी अच्छी है। हमारे यहाँ अधिकांश कंप्यूटरों में हिंदी में काम करने के लिए यूनिकोड सक्रिय करा दिया गया है। कंप्यूटर पर हिंदी यूनिकोड सक्रिय करना एक बात है और कंप्यूटर प्रयोक्ताओं द्वारा उस सुविधा का उपयोग करना दूसरी बात है। हमारी रेल को ही ले लीजिए, राजभाषा विभाग ने अभियान चलाकर सभी कंप्यूटरों में हिंदी यूनिकोड सक्रिय करा दिया है। परंतु क्या कंप्यूटर प्रयोक्ता हिंदी यूनिकोड में काम कर रहे हैं? जिन प्रयोक्ताओं ने हिंदी टाइपिंग का कोई प्रशिक्षण नहीं लिया है और वे अब तक केवल अंग्रेजी में ही टाइप करके काम चला रहे हैं, उनके लिए तो हिंदी में टाइप करना मुश्किल ही नहीं बल्कि दुरुह कार्य है। जिन लोगों ने हिंदी टाइपराइटर पर टाइपिंग का बाकायदा प्रशिक्षण लिया है— जैसे कि हमारे टाइपिस्ट एवं स्टेनो आदि, वे अपने अप्रचलित हिंदी फोंट के माध्यम से ही काम चला रहे हैं। काम चलाने का आश्रय यह है कि हिंदी में टाइप किया, प्रिंटआउट लिया और हार्डकॉपी डिस्पैच कर दिया। बस काम खत्मा। परंतु यदि उन्हें यही टाइप मैटर को सॉफ्टकॉपी में किसी को मेल करना हो या सी.डी. या पेनड्राइव के माध्यम से भेजना हो तो परेशानी ही परेशानी....।

उपर्युक्त दोनों तरह के कंप्यूटर प्रयोक्ताओं के लिए एक ही समाधान है— आईएमई यानी इनपुट मैथड एडीटर। यह आपके कंप्यूटर में अलग-अलग की-बोर्ड ले-आउट का इस्तेमाल करते हुए टाइपिंग की सुविधा जोड़ देता है— जैसे कि इस्क्रिप्ट, ट्रांसलिटरेशन एवं रेमिंग्टन की-बोर्ड। अब आपकी मर्जी है कि आप इनमें से किस की-बोर्ड को चुनकर हिंदी टाइपिंग करते हैं। आईएमई ऑपरेटिंग सिस्टम का ही हिस्सा है जो कंप्यूटर प्रयोक्ताओं को मानक की-बोर्ड के जरिए जटिल वर्णों और चिह्नों को टाइप करने की सुविधा देता है। यदि हम माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस/वर्डपैड/नोटपैड के किसी अनुप्रयोग (एप्लीकेशन) में भारतीय भाषाओं, जैसे कि हिंदी, कन्नड़,

मलयालम, तमिल, गुजराती या बंगला में टाइप करना चाहते हैं तो हमें आईएमई की जरूरत होगी।

नए कंप्यूटर प्रयोक्ता, जिन्हें टाइपिंग का काफी काम करना पड़ता है, वे थोड़े से अभ्यास से इस्क्रिप्ट की-बोर्ड सीखें। इस पर काम करना आसान है और यह आदर्श की-बोर्ड ले-आउट है। जिन प्रयोक्ता को थोड़ा-बहुत हिंदी का टाइप करना हो और वे हिंदी टाइपिंग नहीं जानते हैं, ऐसे प्रयोक्ता के लिए ट्रांसलिटरेशन की-बोर्ड ठीक रहेगा तथा जो प्रयोक्ता पहले से ही हिंदी टाइपराइटर पर टाइपिंग सीखे हों, वे रेमिंग्टन की-बोर्ड का उपयोग करके हिंदी यूनिकोड में काम कर सकते हैं। फिर भी उनसे यही कहना है कि वे जितनी जल्दी हो सके इस्क्रिप्ट की-बोर्ड सीखने का प्रयास करें, क्योंकि इससे उनकी टाइपिंग गति में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हो जाएगी और गुणवत्तायुक्त टाइपिंग मैटर प्राप्त होगा।

इंटरनेट पर आईएमई के कई वर्जन उपलब्ध हैं जैसे कि <http://bhashaindia.com> पर माइक्रोसॉफ्ट आईएमई, <http://baraha.com> पर बरहा, <http://cafehindi.com> पर कैफे हिंदी आदि.... इन सभी में उपर्युक्त तीनों टाइप के की-बोर्ड उपलब्ध हैं। फिर भी हम आपको <http://bhashaindia.com> पर उपलब्ध माइक्रोसॉफ्ट आईएमई डाउनलोड करके उस पर काम करने के लिए कहेंगे, क्योंकि यह माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित ऑपरेटिंग सिस्टम विंडोज के लिए आदर्श रहेगा। माइक्रोसॉफ्ट ने विंडोज 2000 एवं एक्सपी के लिए इंडिक इनपुट 1 एवं 2 तथा विंडोज 7 एवं 8 के लिए इंडिक इनपुट 2 एवं 3 बनाया है। अब तो मार्केट में विंडोज 10 भी आ गया है, जिस पर इंडिक इनपुट 3 आसानी से काम करेगा।

विंडोज एक्सपी में इंडिक इनपुट 1 या 2 को इंस्टाल करने के लिए सबसे पहले <http://bhashaindia.com> से इंडिक इनपुट 1 या 2 को डाउनलोड करके उसकी जिप फाइल को खोलें, तत्पश्चात उसका सेटअप चलाएँ। प्रक्रिया पूरी होने पर कंट्रोल पैनल के Regional and Language ऑप्शन में language के Details.... टैब पर क्लिक करें। इससे Text services and input language

बॉक्स खुलेगा। यहाँ दिए गए Add टैब पर क्लिक करें। अब खुलने वाले Add input language बॉक्स में input language के रूप में हिंदी और उसके नीचे दिए गए Keyboard layout/IME में चेक करने पर आईएमई की सूची दिखने लगेगी। आप हिंदी इंडिक आईएमई को सेलेक्ट करके ओके बटन दबा दें। तत्पश्चात् आपका कंप्यूटर रीस्टार्ट होगा। रीस्टार्ट होने के बाद टास्कबार में लैंग्वेज बार पर क्लिक करके हिंदी सेलेक्ट कर लिया जाता है। सेलेक्ट करने पर आईएमई का टूलबार खुलेगा, इसमें तीनों टाइप के की-बोर्ड दिखाई देंगे। अब आप अपनी सुविधानुसार किसी एक की-बोर्ड का चुनाव करके हिंदी यूनिकोड में काम कर सकते हैं। इसीप्रकार विंडोज 7 एवं 8 में भी इंडिक इनपुट 2 या 3 इंस्टाल करके हिंदी यूनिकोड में काम किया जा सकता है।

सबसे महत्वपूर्ण एवं आवश्यक बात- आईएमई इंस्टाल करने के पूर्व अपने कंप्यूटर में हिंदी यूनिकोड अवश्य सक्रिय कर लें, वरना बिना हिंदी यूनिकोड सक्रिय किए यह टूल काम नहीं करेगा। एक बात और स्पष्ट कर दूँ कि यह माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के सभी प्रोग्रामों में काम कर सकता है, परंतु अभी यह एडोब के प्रोग्राम जैसे- पेजमेकर अथवा फोटोशॉप आदि को सपोर्ट नहीं करता है। इसलिए उन प्रोग्रामों पर काम नहीं करे तो परेष्ठान होने की जरूरत नहीं है। ❖

वरिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
☎ संपर्क: 09794840674

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के कुशीनगर (कसया) में 07.03.1911 को हुआ था। इनके पिता पं. हीरानंद छास्त्री पुरातत्वज्ञ थे। 1930 में क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लिया और कारावास की यातनाएँ सहیں। इन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। 'प्रतीक', 'दिनमान' तथा 'नवभारत टाइम्स' के संपादन का काम किया। 1960 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय साहित्य तथा संस्कृति के अध्यापक भी रहे। 'आँगन के पार द्वार' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 'कितनी नावों में कितनी बार' रचना पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 04 अप्रैल 1987 को इनका देहांत हुआ।

प्रसिद्ध रचनाएँ

काव्य संग्रह- भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, इंद्रधनुष रौंदे हुए ये।

उपन्यास- श्रेखर एक जीवनी (दो भाग), नदी के द्वीप।

कहानी संग्रह- विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात

निबंध- त्रिशंकु, सबरंग, आत्मने पद, लिखि कागद कोरे

यात्रा-वृत्त- अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली।

भीष्म साहनी

इनका जन्म पाकिस्तान के रावलपिंडी नामक शहर में 08.08.1915 को हुआ था। इन्होंने अंग्रेजी से एम. ए. किया। कालांतर में पी.एचडी. की उपाधि भी हासिल किया। इन्होंने आजीविका के लिए अध्यापन कार्य अपनाया। आप बहुत समय तक दिल्ली के जाकिर हुसैन कालेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। इनके बड़े भाई बलराज साहनी थे जो प्रगतिशील नाटकों और फिल्मों से जुड़े थे।

प्रसिद्ध रचनाएँ

कहानी संग्रह- भाग्यरेखा, भटकती राह, पहला पाठ, पटरियाँ, झरोखे।

उपन्यास- तमस, कड़ियाँ और वसंती। इन पर दूरदर्शन धारावाहिक भी बन चुके हैं। 'तमस' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है।

इनकी मृत्यु 11.07.2003 को हुई।

◆ लेख ◆
यूनिकोड: एक परिचय
सपना खरे

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आज के कंप्यूटरीकरण के दौर में सारे कार्य कंप्यूटरों द्वारा संपन्न कराये जा रहे हैं। ऐसे समय में हमें अपनी मातृभाषा में कंप्यूटर पर कार्य करना अनिवार्य हो जाता है। लेकिन अधिकांशतः यह देखा जा रहा है कि विभिन्न मंत्रालयों/विभागों आदि के कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने में कुछ समस्याएँ आ रही हैं। इनमें अनेक हिंदी फोंट जो कि हिंदी कार्य के लिए प्रयोग किए जा रहे हैं वे विभिन्न कंप्यूटरों/सॉफ्टवेयरों में प्रयोग किए जा रहे अन्य फोंट के साथ मेल योग्य (compatible) न होना प्रमुख कारण है। इस समस्या के कारण हम हिंदी में तैयार की गई फाइलों को अंग्रेजी में तैयार की गई फाइलों की तरह आसानी से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर अन्य उपलब्ध फोंट्स का प्रयोग करते हुए स्थानांतरण नहीं कर पाते हैं।

इसप्रकार की समस्याओं का समाधान करने के लिए भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा फोंट्स के लिए यूनिकोड इनकोडिंग को मान्यता दी गई है। अब कार्यालयों में प्रयोग किए जाने वाले कंप्यूटर विंडोज-XP ऑपरेटिंग सिस्टम या बाद के वर्जन हैं। ये ऑपरेटिंग सिस्टम यूनिकोड एनकोडिंग में कार्य करने में पूर्ण सक्षम हैं। अतः कंप्यूटरों पर हिंदी का कार्य किसी भी यूनिकोड समर्थित फोंट्स में किया जा सकता है। यद्यपि INSCRIPT की-बोर्ड को मानक के रूप में मान्यता दे दी गई है। फिर भी प्रयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार अन्य की-बोर्ड के जरिए टाइपिंग कर सकते हैं।

संक्षेप में यदि कहा जाए तो कंप्यूटरों पर हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करने के लिए हमें अपने कंप्यूटरों में यूनिकोड एनेबुल करना होगा। इस सुविधा से हिंदी के मंगल फोंट में तैयार की गयी फाइलों को विभिन्न कंप्यूटरों पर विभिन्न सॉफ्टवेयरों के साथ आसानी से हस्तांतरित/प्रयोग किया जा सकता है।

यूनिकोड क्या है

यूनिकोड एक तकनीक है। जैसाकि हमें यह मालूम है कि मूलतः कंप्यूटर 0-1 डिजिट से बनाये गए हैं। इसप्रकार की फोंट संबंधी समस्याएँ न केवल हमारी देवनागरी लिपि में नहीं बल्कि अन्य लिपियों/भाषाओं में भी सामने आईं। इनके निराकरण के लिए विष्व स्तर के विशेषज्ञों ने मिलकर एक यूनिकोड संगठन बनाया (www.unicode.org) पूरे विष्व के अधिकांश देश इसके सदस्य बने, जिसमें हमारा भारत देश भी इसका सदस्य है। यह संगठन भाषा एवं लिपि संबंधी शोध कार्य करता रहता है और समय-समय पर अपने निष्कर्ष भी जारी करता है।

यूनिकोड तकनीक विष्व की सभी लिपियों के सभी संकेतों के लिए अलग-अलग कोड बिंदु प्रदान करता है जो कि एक ही फोंट में उपलब्ध रहती है। (जैसे- एरियल यूनिकोड, मंगल, अक्षर यूनिकोड, अपराजिता आदि)। यूनिकोड तकनीक पर आधारित फोंट में टाइप किया गया मैटर हमारे सिस्टम में फोंट हो या न हो, वह उसी भाषा की लिपि में दिखायी देगा और पढ़ने योग्य भी होगा।

इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस अंक में विभिन्न वर्जन के कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने की विधि बतायी जा रही है। इसी कड़ी में आगामी अंकों में यूनिकोड से लाभ, यूनिकोड फोंट में कंप्यूटरों में कार्य करने के लिए विभिन्न की-बोर्ड सुविधाओं, फोंट कन्वर्टर एवं अन्य यूनिकोड संबंधी जिज्ञासा के बारे में जानकारीयाँ दी जाएँगी।

कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने की विधि

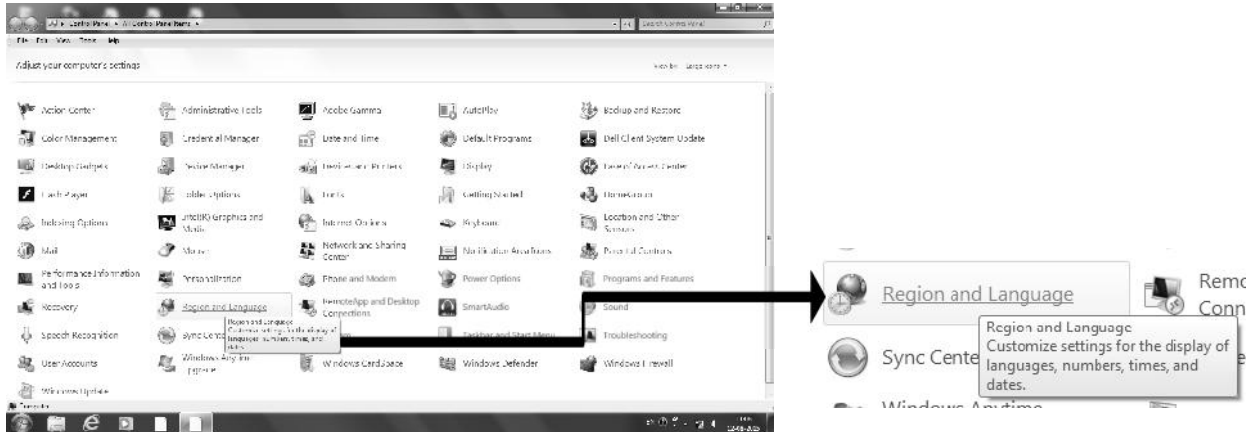
यह सुविधा विंडोज-XP और उसके बाद के वर्जन के ऑपरेटिंग सिस्टम के कंप्यूटरों में उपलब्ध रहती है। इसके लिए अलग से न तो हार्डवेयर और न ही इंटरनेट की आवश्यकता पड़ती है। विंडोज-XP वर्जन के कंप्यूटर अब कार्यालयों में न के बराबर रह गए हैं। यहाँ विंडोज-7 वर्जन के ऑपरेटिंग सिस्टम में यूनिकोड सक्रिय करने की विधि बतायी जा रही है।

1) विंडोज विस्टा/विंडोज-7 वर्जन के कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने की संक्षिप्त विधि

- ➔ कंट्रोल पैनल पर जाएँ और Regional and Language Option पर क्लिक करें। लोकेशन में India का चयन करें।
- ➔ Keyboard and Languages पर क्लिक करें और Hindi का चयन करें और Keyboard layout के लिए Devnagari-INSKRIPIT का चयन करें।

2) विंडोज-7 वर्जन के कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने की विस्तृत विधि

विंडोज-7 वर्जन के कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने के लिए सर्वप्रथम नीचे दिए गए चित्र के अनुसार कंप्यूटर को पावर-ऑन करके Start(स्टार्ट) पर क्लिक करके Control Panel (कंट्रोल पैनल) पर क्लिक किया जाए। क्लिक करते ही निम्न चित्र के अनुसार मीनू आ जाएगा।

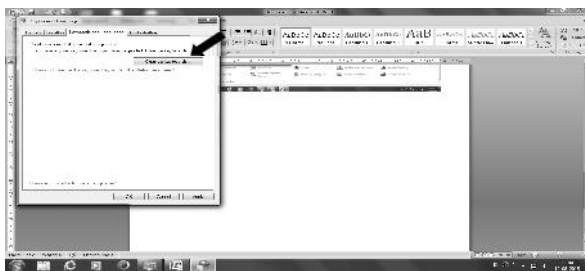


उपर्युक्त चित्र के मीनू में Region and Language टैब पर क्लिक करने पर अगले चित्र-2 के अनुसार मीनू आ जाएगा। रीजन और लैंग्वेज ऑप्शन मीनू में Format, location, Keyboard and languages तथा Administrative चार टैब मिलेंगे। इसमें लोकेशन टैब में current location में जहाँ पहले से United States पड़ा रहता है। वहाँ दाहिनी तरफ के ऐरो में क्लिक करके India का चयन करना होगा। जैसा कि चित्र-2 में स्पष्ट है—

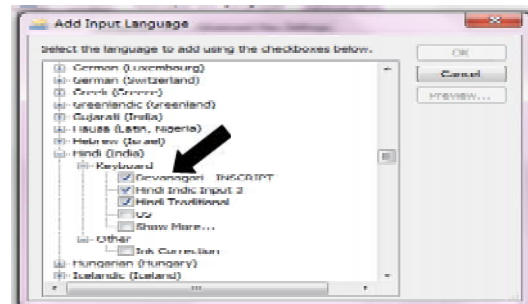
बाद की स्थिति



इसी रीजन और लैंग्वेज ऑप्शन मीनू में अब Keyboard and languages टैब में change keyboard (चित्र-3) पर क्लिक करने पर चित्र-4 के अनुसार मीनू आएगा। इसमें Hindi (India) का चयन कर लिया जाएगा और Keyboard Devnagiri INSCRIPT का चयन कर लिया जाएगा।

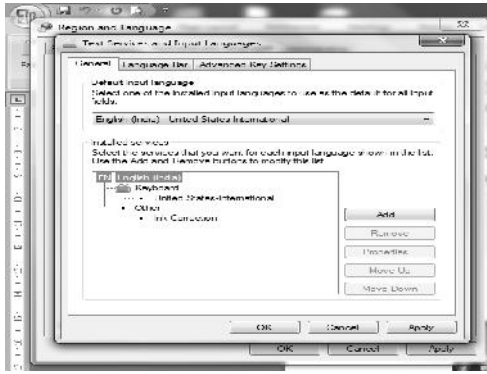


चित्र-3

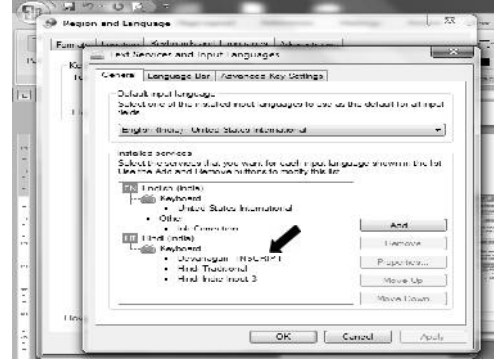


चित्र-4

पहले की स्थिति



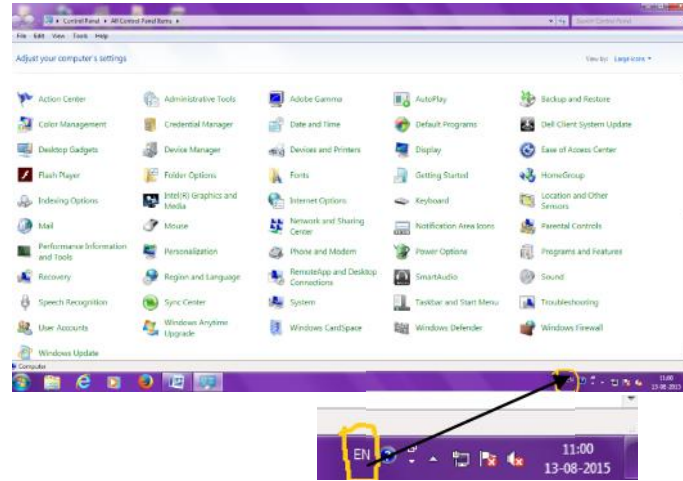
बाद की स्थिति



चित्र-5

इसके उपरांत चित्र-5 में Apply पर क्लिक करते ही चित्र-6 के अनुसार स्टेटस बार में दाहिनी ओर घड़ी के पास EN/Hi आ जाएगा। फिर OK पर क्लिक करके सारे मीनू बंद कर देंगे।

इसप्रकार विंडोज-7 वर्जन के कंप्यूटर में यूनिकोड एनेबुल हो गया। इसी के साथ भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त मानक की-बोर्ड-ईस्क्रिप्ट की-बोर्ड भी इंस्टॉल हो गया।



इसके बाद माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस की कोई भी ऐप्लीकेशन- वर्ड, एक्सेल आदि खोलेंगे। जब स्टेटस बार पर EN होगा तब अंग्रेजी फोंट में टाइप होगा। हिंदी के मंगल फोंट में टाइप करने के लिए बायीं ओर की ऑल्ट-की (ALT Key) और कोई भी शिफ्ट-की (Shift Key) साथ-साथ Apply करने पर HI यानी हिंदी का मंगल फोंट आ जाएगा। अब हम हिंदी के यूनिकोड फोंट में और भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त मानक की-बोर्ड ईस्क्रिप्ट की-बोर्ड में टाइप कर सकते हैं।

3) विंडोज-8 वर्जन के कंप्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करने की संक्षिप्त विधि

विंडोज-8 या विंडोज-8.1 वर्जन के कंप्यूटरों में यह प्रक्रिया पिछले वर्जन के कंप्यूटरों से थोड़ी भिन्न है। इसमें Control Panel पर जाएँगे फिर Clock, Language and Region आइकॉन पर क्लिक करेंगे। इसमें एक और Region का टैब होगा, उस पर क्लिक करेंगे तो Region का मीनू खुलेगा। उसमें location टैब के अंतर्गत India का चयन कर लेंगे। उसके बाद पुनः कंट्रोल पैनल में जाएँगे clock, Language and Region में Language आइकॉन के अंतर्गत Add a language पर क्लिक करके हम Hindi भाषा का चयन कर लेंगे और OK पर क्लिक करेंगे।

इसप्रकार विंडोज-8 या विंडोज-8.1 वर्जन के कंप्यूटर में यूनिकोड एनेबुल हो गया और साथ ही ईस्क्रिप्ट की-बोर्ड इंस्टॉल भी हो गया। ❖

कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

◆ लघुकथाएँ ◆
के.एल.पांडेय

धनी

धन की तृष्णा और मेरा मित्र।

मैं उससे पूछता रहता- क्या करोगे? इतने मकानों का, इतने प्लाट्स का? हर बड़े शहर में तुमने कुछ न कुछ प्रापर्टी तो ले ही रखी है।

वह कहता- देखो उस प्लाट के अच्छे पैसे मिल रहे हैं। मैं उसे निकाल दूँगा।

फिर उस पैसे का क्या करोगे?

अरे करूँगा क्या? उसे फिर इन्वेस्ट कर दूँगा दूसरी जमीन में।

मैं जानता हूँ उसके एक बेटा है और एक बेटी, दोनों की शादी हो चुकी है, दोनों का अपना करोबार है। उन्हें उसके इस धन की आवश्यकता शायद ही कभी पड़े। मैं उससे कहता रहता हूँ कि इस धन को अपने ऊपर अच्छी तरह से खर्च कर, थोड़ा घूम फिर देख-विदेख में, पर पता नहीं क्यों, उसकी बुद्धि में यह बात कभी नहीं आती।

एक बार मैं, अपने इस मित्र के साथ उसकी साधारण सी गाड़ी में कहीं जा रहा था। गाड़ी एक रेलवे फाटक पर रुकी। एक ठेले वाला चेरीज बेच रहा था। लाल, रसभरी हुई। मेरा मन किया थोड़ी ले लूँ। तब तक मेरे मित्र ने कहा- 'ऐ चेरीवाले! क्या हिसाब दी है?'

'50 रुपये की 100 ग्राम साहब' -वह बोला।

यानी 500 रुपये किलो। हद है, क्या लूट मचा रखी है, कहकर उसने गाड़ी का शीशा चढ़ा लिया।

तब तक मैंने देखा- एक साइकिल सवार ठेले वाले के पास आकर रुका। उसने ठेले वाले से कुछ पूछा, फिर 50 रुपये का नोट उसे थमाते हुए 100 ग्राम चेरीज ली और धीरे-धीरे गुटकता हुआ आगे बढ़ लिया।

ट्रेन पास हो चुकी थी, गेट खुल गया था और मैं देख रहा था उस धनी व्यक्ति को, जो अपनी साइकिल पर प्रसन्न मुद्रा में चेरी खाता हुआ अपने जीवन का आनंद ले रहा था।

स्माइल

सियाटिल की वह कड़ाके की सर्दी भरी शाम, मैं और मेरे चार साथी एक कैब में, एक कांफ्रेंस में जाने के लिए 'हाउ टू लिव ए गुड लाइफ' पर। चार डेलीगेट्स और एक मैं, एक टूर का आनंद लेने आया हुआ।

'आइ विल गेट सम गैस फिल्ड' -कैब के ड्राइवर ने कहते हुए गाड़ी एक पेट्रोल पंप पर लगा दी।

तभी एक आदमी फटे-पुराने कपड़ों में गाड़ी के पास आया, उसी तरह से जैसे अपने यहाँ ट्रैफिक सिगनल पर लोग जमा हो जाते हैं।

अरे यार, शीशा मत नीचे उतारना, ये लोग ऐसे ही घूमते रहते हैं।

नहीं यार, मुझे तो किसी अंग्रेज भिखारी को भीख देने में बड़ा मजा आता है, खूब राज किया है सालों ने हम पर, मैंने शीशा नीचे उतारा। वह एक अंग्रेज था, ऐम्स में मैला-कुचैला। उसने कैब के अंदर झाँका और फिर अपने पीले दाँतों के साथ मुस्कराता हुआ बोला- 'ओह, फाइव वंडर फुल फेसेज, ऐंड नो स्माइल ऑन एनी वन।'

फिर वह हँसा और धीरे-धीरे चलता हमारी आँखों से ओझल हो गया। मेरे सभी साथी सकते में थे। वह कौन था? उसे जीवन में कैसे अनुभव रहे होंगे? वह ऐसा क्यों कर रहा था? ऐसे कई प्रश्न मेरे मन में आ रहे थे और यह भी कि अब कांफ्रेंस में जाने की कोई जरूरत, है भी या नहीं? ❖

सदस्य (तकनीकी)

रेल दावा अधिकरण

गोरखपुर

☎ संपर्क: 9794840076

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ऐसी भाषा है।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

◆ तकनीकी ◆
दुर्घटना (Accident)
 नागेश्वर नाथ श्रीवास्तव

सन् 1853 ई. में भारतवर्ष में रेल सेवा प्रारंभ हुई इससे पूर्व काफी योजनाएँ बनी और उनका कार्यान्वयन भी किया गया। फलस्वरूप देश में मुंबई (बांबे स्टेट) से ठाणे के मध्य प्रथम रेलगाड़ी चलाई गई। कालांतर में रेल विकसित होते हुए इस देश की सबसे विष्टवसनीय एवं किफायती यातायात का साधन बन गई।

संचालन एवं संरक्षा सूत्रों का परिचय

इन दोनों सेवाओं में निम्नलिखित विभागीय योगदान है—

क) संचालन— परिचालन विभाग

ख) संरक्षा— अभियांत्रिकी विभाग

1- परिचालन के प्रमुख अंग

क) स्टेशन प्रबंधक

ख) स्टेशन मास्टर

ग) सहायक स्टेशन मास्टर

2- संरक्षा के प्रमुख अंग

क) समपार रक्षक

ख) की-मैन

ग) ट्रैकमैन या गैंगमैन

दुर्घटना

कोई भी ऐसी घटना जो रेलवे इंजन, रोलिंग स्टॉक, रेलपथ, यात्रियों, कर्मचारियों अथवा अन्य व्यक्तियों की संरक्षा पर प्रभाव डालती है या डाल सकती हो या रेलवे के नार्मल वर्किंग पर रूकावट डालती हो दुर्घटना कहलाती है। गंभीरता के आधार पर रेलवे दुर्घटनाओं को 16 वर्गों (84 उपवर्गों) में बाँटा गया है। इसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

वर्ग दुर्घटना का प्रकार

ए. क्लास— टक्कर (Collision)

बी.क्लास— गाड़ी में आग लगना (Fire on Train)

सी.क्लास— समपार फाटक दुर्घटनाएँ (L- Xing Accidents)

डी.क्लास— अवपथन (Derailment)

ई.क्लास—दूसरे ट्रेन एक्सीडेंट्स (Other train Accidents)

एफ.क्लास— टली हुई टक्कर (Averted collision)

जी.क्लास— ब्लॉक नियमों का उल्लंघन
(Breach Of Block Rules)

एच.क्लास— लाल सिगनल पार करना
(Passing signal at Danger)

जे.क्लास— लोको या रोलिंग स्टॉक विफलता

के.क्लास— रेलपथ विफलता

एल.क्लास— विद्युत उपकरण व ओ.एच.ई. विफलता

एम.क्लास— सिगनलिंग टेलीकम्युनिकेशन विफलता

एन.क्लास— ट्रेन में तोड़-फोड़ (Train wrecking)

पी.क्लास— गाड़ी में/से यात्रियों का हताहत होना (Casualties)

क्यू.क्लास— असाधारण घटनाएँ (Unusual Incidents)

आर.क्लास— विविध घटनाएँ

दुर्घटना से संबंधित कुछ अन्य जानकारियाँ इसप्रकार हैं—
परिणामी दुर्घटनाएँ

ऐसी दुर्घटनाएँ जिनके परिणाम मिले जैसे— दो गाड़ियों का टकरा जाना, गाड़ी का अवपथन तथा गाड़ी में आग लग जाना।

सांकेतिक दुर्घटनाएँ

ऐसी दुर्घटनाएँ जिनसे अभी तो कोई परिणाम नहीं निकला हो परंतु भविष्य में परिणाम निकल सकता हो जैसे— चालक का ओवर सूट हो जाना, टली हुई टक्करें, ब्लॉक नियमों का उल्लंघन, ट्रेन पार्टिंग आदि।

गंभीर दुर्घटना

ऐसी दुर्घटना जिसमें किसी व्यक्ति की जान चली जाए या गंभीर चोट लग जाए या रेल संपत्ति का गंभीर नुकसान (25 लाख रुपये से ज्यादा) हो या जिसकी जाँच सी.सी.आर.एस./सी.आर.एस. से कराना अपेक्षित हो।

जाँच के स्तर

1) जब किसी व्यक्ति की जान न गयी या गंभीर नुकसान न हुआ हो तो रेलवे अपने स्तर पर जाँच करती है।

2) जब किसी व्यक्ति की जान चली जाए या रेलवे संपत्ति का नुकसान 25 लाख रुपये से ज्यादा का हो जाए तो जाँच सी.आर.एस. करते हैं।

गंभीर चोट

1) चेहरा विकृत हो जाना।

- 2) आँख या आँखों से दिखायी देना बंद हो जाना।
- 3) कान या कानों से सुनायी देना बंद हो जाना।
- 4) नपुंसकता आ जाना।
- 5) शरीर के किसी अंग का कट जाना।
- 6) शरीर के किसी अंग की शक्ति समाप्त हो जाना।
- 7) किसी हड्डी या दाँत का टूट जाना।
- 8) कोई ऐसी चोट जिसके कारण आदमी को 20 या अधिक दिन बिस्तर पर रहना पड़े।

ये गंभीर दुर्घटना नहीं हैं

- 1) रेलवे लाइन पार करते हुए कोई व्यक्ति अपनी गलती से कट कर मर जाए।
- 2) कोई व्यक्ति छत, बफर, सीढ़ियों या फुटबोर्ड पर यात्रा करते हुए या रेलिंग स्टॉक के बाहर यात्रा करते हुए मारा जाए।
- 3) यदि कोई व्यक्ति कोच के वेस्टीब्युल में यात्रा करते हुआ मारा जाए।
- 4) यदि कोई व्यक्ति असावधानी से समपार फाटक पर कट कर मर जाए।

निम्नलिखित उपायों को अपना कर रेल संचालन व संरक्षा के मानक को उच्च-स्तरीय बनाया जा सकता है एवं भारतीय रेल को एक गौरवशाली संगठन में परिवर्तित एवं परिमार्जन किया जा सकता है-

- 1) ट्रैक-मैन व की-मैन को ऐंकिल बूट दिए जाएँ ताकि

ट्रैक में चलते समय चाल सुरक्षित रहे।

- 2) गेटमैन को मास्क और धूप चष्मा दिया जाए ताकि आती-जाती ट्रेनों के धूल-धक्कड़ से स्वास्थ्य रक्षा हो सके।
- 3) समपारों में कोई वॉकी-टॉकी सेट उपलब्ध हो ताकि एल.सी.गेट की खराबी की सूचना का टेलीफोन के खराब होने की स्थिति में आदान-प्रदान बाधित न हो।
- 4) एल.सी.गेट फोन में आई.डी.डिवाइस लगाया जाए ताकि गेटमैन की लापरवाही की स्थिति में मिथ्या दोषारोपण की स्थिति से दूर रहा जा सके।

चौकीदार वाले रेल फाटक को पार करने के पहले रुक कर देख कर चलना चाहिए लेकिन मिथ्या, निर्भीकता, दुस्साहस, कुटिलता, नष्टो का सेवन, तेज आवाज में गाना सुनना, नियमों का पालन न करना इस तरह के वीभत्स दुर्घटनाओं के मुख्य कारण हैं। दुर्घटना से बचने के लिए बिना चौकीदार वाले समपार पर पहले रुकें ध्यान से देखें, कोई गाड़ी तो नहीं आ रही है, तब ही समपार पार करें। अनावश्यक जल्दबाजी न करें एवं रेलवे के सुरक्षित संचालन में अपना सहयोग करें। ❖

कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय, गोरखपुर

☎ संपर्क: 09936342972

प्रश्न- राजभाषा नीति को लागू करने की दृष्टि से भारत को कितने क्षेत्रों में बाँटा गया है? प्रत्येक क्षेत्र में स्थित राज्यों के नाम लिखें।

उत्तर- राजभाषा नियमों के अनुपालन की दृष्टि से भारतीय भू-भाग को 3 क्षेत्रों में बाँटा गया है- 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र

(क) **क क्षेत्र-** बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, झारखंड, छत्तीसगढ़ राज्य तथा दिल्ली व अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह संघ शासित क्षेत्र।

(ख) **ख क्षेत्र-** गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य व चंडीगढ़, दादरा व नगर हवेली एवं दमण और दीव संघ शासित क्षेत्र।

(ग) **ग क्षेत्र-** शेष सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश।

प्रश्न- हिंदी सप्ताह क्यों मनाया जाता है?

उत्तर- सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रति जागरूकता तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने तथा हिंदी भाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से हिंदी सप्ताह मनाया जाता है जिसमें राजभाषा प्रदर्शनी, विचार गोष्ठी, काव्य गोष्ठी तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

◆ तकनीकी ◆
स्टील चैनल स्लीपर का निरीक्षण
ए.के.सेनगुप्ता

वर्तमान में ब्रिज टिंबर के उपलब्ध न होने के कारण गर्डर पुलों पर स्टील चैनल स्लीपर्स का उपयोग किया जा रहा है। आर.डी.एस.ओ. द्वारा इन स्लीपर्स के लिए आरेख जारी किया गया है। स्टील चैनल स्लीपर संरक्षा से संबंधित होने के कारण उसके निरीक्षण में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। स्टील चैनल स्लीपर्स के निरीक्षण के दौरान जिन बिंदुओं को देखने की आवश्यकता है इस लेख में उन मदों पर कुछ चर्चा की जा रही है।

किसी पुल पर चैनल स्लीपर्स का प्रावधान करने के लिए सर्वप्रथम उस पुल का अच्छी तरह निरीक्षण किया जाना चाहिए। निरीक्षण के दौरान निम्नलिखित मदों की जाँच की जानी चाहिए—

1. दोनों गर्डरों के सेंटर से सेंटर की दूरी।
2. गर्डरों के टॉप फ्लैज की चौड़ाई।
3. गर्डरों के टॉप फ्लैज की मोटाई।
4. यदि गर्डर के टॉप फ्लैज प्लेट में जोड़ है तो स्पलाइस जोड़ का विवरण।
5. दोनों गर्डरों के स्पलाइस जोड़ आमने-सामने हैं या नहीं।
6. गर्डर की कुल लंबाई।
7. गर्डर स्क्यू तो नहीं है।
8. रेल जोड़ों का स्थान।

इस निरीक्षण के बाद लिए गए विवरण के अनुसार स्लीपर का आकार तय किया जाता है और पूरे पुल पर स्लीपर लगाने हेतु एक आरेख बनाया जाता है। इसके उपरान्त क्यू.ए.पी. बनाकर अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया जाता है। स्टील चैनल स्लीपर में दो चैनल को 'टी' आकार के डायफ्राम से जोड़े जाते हैं। इसके ऊपर रेल सीट के रूप में बेयरिंग प्लेटों को रिबेटिंग के द्वारा लगाया जाता है। चैनलों को मजबूती प्रदान करने के लिए उसके वेब में स्टिफनर वेल्ड किया जाता है। स्लीपर तैयार हो जाने के बाद इसका गलवनाइजिंग किया जाता है।

स्टील चैनल स्लीपर का निरीक्षण:

चैनल स्लीपर का निरीक्षण निम्नलिखित तीन चरणों में किया जाता है—

रेल रश्मि

1. स्लीपर में लगने वाली सामग्री का निरीक्षण।
2. स्लीपर तैयार होने के बाद निरीक्षण।
3. गलवनाइजिंग का निरीक्षण।

स्लीपर में लगने वाली सामग्री

स्लीपर के विनिर्माण में प्रयुक्त होने वाले सभी लोहे के सेक्शन आई.एस. 2062 ग्रेड बी का होना चाहिए। निरीक्षणकर्ता द्वारा सभी स्टील सेक्शन के मिल टेस्ट सर्टिफिकेट की जाँच कर लेनी चाहिए। प्रयोग किया जाने वाला रिबेट आई.एस. 1929 के अनुरूप तथा वेल्डिंग एलेक्ट्रोड आई.आर.एस.-एम 28 के अनुरूप होना चाहिए।

गलवनाइजिंग में प्रयोग किया जाने वाला जिंक आई.एस. 209 के अनुरूप एवं 98.5 प्रतिशत शुद्ध होना चाहिए।

स्लीपर तैयार होने के बाद निरीक्षण

स्लीपर्स का निरीक्षण गलवनाइजिंग के पूर्व किया जाना चाहिए। सर्वप्रथम यह सुनिश्चित किया जाए कि स्लीपर बनाने का कार्य अनुमोदित क्यू.ए.पी. के अनुसार किया गया है तथा कार्य योग्य वेल्डरों द्वारा किया गया हो। इसके उपरान्त स्लीपर का निरीक्षण किया जाए। स्लीपर का विनिर्माण जिग एवं फिक्सचर से किया जाना चाहिए। निरीक्षण में सबसे पहले स्लीपर की सतह पर कोई खराबी तो नहीं है यह देखा जाता है, स्लीपर का मापी कर देखा जाए कि स्लीपर आरेख के अनुसार बने हैं कि नहीं। सारे छिद्रों की दूरी आरेख के अनुसार होनी चाहिए एवं वेल्ड के आकार को गेज से जाँच कर सुनिश्चित किया जाए कि सभी वेल्ड के आकार आरेख के अनुरूप हैं। स्लीपर के स्टिफनर के वेल्ड को छोड़ कर सारे वेल्ड 10 मिमी. का होना चाहिए तथा स्टिफनरों का वेल्ड 6 मिमी. का होना चाहिए। स्लीपर में महत्वपूर्ण बात यह है कि स्टिफनर का निचला सिरा चैनल के निचले फ्लैज के साथ वेल्ड नहीं होना चाहिए, इसे टाइट फिट रखा जाता है। वेल्डों का डाई पेनेट्रेशन टेस्ट कर परीक्षण किया जाए। दूसरी चीज स्लीपर पर लगे बेयरिंग प्लेट स्लीपर के साथ टैक वेल्ड नहीं होना चाहिए तथा इसे रिबेट करने के पूर्व इसके संपर्क सतहों पर ग्राइमर

पेंट लगाना आवश्यक है। बेयरिंग प्लेटों पर लगे रिबेटों की जाँच टेस्टिंग हैमर से किया जाए तथा खराब पाए गए रिबेटों को बदला जाए। स्लीपरों का सिरा चिकना होना चाहिए।

गलवनाइजिंग का निरीक्षण

आर.डी.एस.ओ. द्वारा जारी किए गए दिष्टा-निर्देश बी.एस. 45 के अनुसार स्लीपरों पर गलवनाइजिंग किया जाना है। गलवनाइजिंग आई.एस. 2629 के अनुसार किया जाता है। गलवनाइजिंग के निरीक्षण के पहले इसकी विधि के बारे में थोड़ी जानकारी होनी चाहिए। सर्वप्रथम डिग्रीजिंग किया जाता है, इसमें स्लीपर के सतह पर लगे ग्रीस, पेंट आदि को साफ किया जाता है। इसके बाद पिकलिंग जिसमें स्लीपर को तेजाब के टैंक में डुबोया जाता है और फिर बहते पानी के टैंक में डुबो कर धोया जाता है। फिर स्लीपर को फ्लक्सिंग हेतु जिंक एल्यूमिनियम क्लोराइड के घोल में डुबोया जाता है। अंत में स्लीपर के सूखने के बाद इसे जिंक के टैंक में डुबो कर निकाल लिया जाता है। जिंक टैंक के तापमान पर निरंतर निगरानी रखी जाती है और पिघले हुए जिंक का तापमान $450 \pm 10^\circ$ से. होना चाहिए। जिंक टैंक से स्लीपर को निकाल कर पुनः पानी में डुबो कर ठंडा कर क्रोमेट के घोल में डुबो कर निकाल लिया जाता है। गलवनाइजिंग के निरीक्षण में निम्नलिखित परीक्षण किए जाते हैं-

1. परत की मोटाई की जाँच।
2. परत का वजन।
3. परत का लगाव अर्थात् चिपकना।
4. सतह पर खराबी।

जिंक के परत की मोटाई एवं वजन की जाँच हेतु चुंबकीय गेजों का उपयोग किया जाता है। परत के

लगाव की परीक्षण के लिए पिवोटेड हैमर टेस्ट एवं नाइफ टेस्ट किया जाता है। गलवनाइजिंग के उपरांत स्लीपरों का हैंडलिंग एवं स्टैकिंग बहुत सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए जिससे कि गलवनाइजिंग की परत में कोई खरोच आदि न लगे। स्लीपर को पुल पर लगाते समय यदि गलवनाइजिंग की परत किसी स्थान पर खराब हो जाए तो उस स्थान पर जिंक का पेस्ट लगा देना चाहिए।

अभिलेख जो एजेंसी के पास होना चाहिए

ठेकेदार को निम्नलिखित अभिलेख रखना चाहिए-

1. जिग रजिस्टर।
2. रिबेट टेस्टिंग रजिस्टर।
3. आफर रजिस्टर।
4. सामग्री के टेस्ट रिपोर्ट।
5. वेल्डिंग प्रोसीजर डाटा रिकार्ड।
6. गलवनाइजिंग के निरीक्षण का रिकार्ड।

रेलवे में स्टील चैनल स्लीपरों का निरीक्षण सहायक मंडल इंजीनियर द्वारा किया जाता है। स्टील चैनल स्लीपर रेलपथ के संरक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण मद है। इसका निरीक्षण बहुत ध्यान एवं लगन से करने की आवश्यकता है। विशेषकर गलवनाइजिंग का निरीक्षण। स्लीपरों का गलवनाइजिंग ठीक प्रकार से किए जाने पर इनकी आयु कम से कम 20 वर्ष होगी।

हमें आशा है कि इस छोटे से लेख से फील्ड के इंजीनियर बहुत लाभान्वित होंगे। ♦

मुख्य कारखाना प्रबंधक/पुल
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

☎ संपर्क: 9794840207

प्रश्न- निर्धारित हिंदी परीक्षा पास करने पर किसी कर्मचारी को क्या-क्या प्रोत्साहन मिलते हैं?

उत्तर- हिंदी की निर्धारित परीक्षाएँ पास करने पर केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों को 12 महीने की अवधि के लिए एक वेतन-वृद्धि के बराबर राशि का वैयक्तिक वेतन दिया जाता है।

प्रश्न- क्या हिंदीभाषी कर्मचारियों को भी निर्धारित परीक्षा पास करने पर कोई प्रोत्साहन देय है?

उत्तर- नहीं।

प्रश्न- राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किस-किस स्तर पर किया गया है। इन समितियों की बैठकें कितने समय बाद होती हैं?

उत्तर- राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन मंत्रालय, मुख्यालय, मंडल, कारखानों/डिपो तथा स्टेशन स्तर पर किया गया है। इन समितियों की बैठकें प्रत्येक तिमाही में एक बार होती हैं तथा वर्ष में चार बैठकें आयोजित की जानी अपेक्षित हैं।

◆ तकनीकी ◆
पेपर लाइन क्लीयर टिकट वर्किंग
एन.के.सिन्हा

रेलवे पर गाड़ी संचालन दो माध्यमों द्वारा किया जाता है। चालक गाड़ी चलाते हैं और स्टेशन कर्मचारी गाड़ियों के चलने के लिए रास्ता बनाते हैं। स्टेशन मास्टर की वर्किंग पर तकनीकी नियंत्रण के लिए उनके कार्यालय में कुछ उपकरण लगाए जाते हैं जिसमें ब्लॉक उपकरण एक महत्वपूर्ण उपकरण होता है। यह सेक्शन में गाड़ियों के प्रवेश को नियंत्रित करता है क्योंकि एक ही सेक्शन में एक से ज्यादा गाड़ियाँ नहीं जानी चाहिए।

ये ब्लॉक उपकरण हैं-

इकहरी लाइन के लिए-

1. टोकन ब्लॉक उपकरण
2. टोकनलेस ब्लॉक उपकरण

डबल लाइन के लिए-

लॉक एंड ब्लॉक उपकरण।

जब ब्लॉक उपकरण विफल हो जाते हैं तो स्टेशन मास्टर की जिम्मेदारी अत्यधिक बढ़ जाती है। ब्लॉक उपकरण खराब होने पर स्टेशन मास्टर पेपर लाइन क्लीयर प्रणाली से गाड़ी का संचालन करते हैं, इसके लिए स्टेशन मास्टर को सबसे पहले-

1. टेलीफोन से लाइन क्लीयर प्राप्त करनी चाहिए। पहले ब्लॉक टेलीफोन से और यदि ब्लॉक टेलीफोन खराब हो तो कंट्रोल फोन सं. से लाइन क्लीयर प्राप्त करनी चाहिए।
2. ब्लॉक उपकरण की विफलता का उल्लेख तत्काल एसई-32 रजिस्टर में किया जाना चाहिए। ब्लॉक उपकरण की खराबी के संबंध में तत्काल सभी संबंधित व्यक्तियों को संदेश भी जारी किया जाना चाहिए।
3. ब्लॉक टेलीफोन पर लाइन क्लीयर संदेश भेजते समय दूसरी ओर के स्टेशन का सही नाम सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
4. यदि लाइन क्लीयर, कंट्रोल फोन पर प्राप्त किया जाता हो तो स्टेशन मास्टर को पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वह सही स्टेशन से वार्तालाप कर रहा है अथवा नहीं।

5. वीएचएफ संदेश में पेपर लाइन क्लीयर वर्किंग चालू करने का कारण एवं सामान्य वर्किंग में चलायी गई अंतिम गाड़ी का उल्लेख करते हुए पी.एल.सी. वर्किंग आरंभ करने की अनुमति मांगनी चाहिए।

6. सेक्शन कंट्रोलर को इस संबंध में सूचित किया जाना चाहिए एवं प्राइवेट नं. का उल्लेख भी संदेश में किया जाना चाहिए। सेक्शन कंट्रोलर इसे अपने रिकार्ड में अंकित करेगा।

7. पी.एल.सी. वर्किंग आरंभ करने पर स्टेशन मास्टर टी.एस.आर. में लाल स्याही से एक लाइन खींचेगा और इस लाल रेखा के नीचे 'पेपर लाइन क्लीयर प्रणाली लागू है' लिखेगा।

8. ब्लॉक उपकरण पर 'पेपर लाइन क्लीयर प्रणाली लागू है' लिखा बोर्ड पर टांग दिया जाएगा ताकि स्टेशन मास्टर को इस संबंध में याद रहे।

9. इस प्रणाली से गाड़ी संचालन में रिटेन अथॉरिटी के रूप में पेपर लाइन क्लीयर टिकट तैयार किया जाता है।

10. पेपर लाइन क्लीयर टिकट अत्यंत सावधानी से बनाया जाता है, इसमें कोई कटिंग या ओवर राइटिंग नहीं होना चाहिए। कटिंग या ओवर राइटिंग होने पर पी.एल.सी. टिकट अमान्य समझा जाएगा।

11. सभी इनक्वायरी एवं रिप्लाय संदेशों का आदान-प्रदान कर सभी संबंधित कालम भर देने के पश्चात् ही लाइन क्लीयर देने वाला स्टेशन मास्टर अपना प्राइवेट नंबर देगा।

12. ब्लॉक उपकरण ठीक हो जाने पर सामान्य वर्किंग आरंभ करने के पहले दोनों स्टेशन मास्टर संदेशों का आदान-प्रदान प्राइवेट नंबर की अदला-बदली से करेंगे और उस संदेश में पी.एल.सी. प्रणाली में चलायी गयी अंतिम गाड़ी का भी उल्लेख किया जाएगा।

13. एसई-32 रजिस्टर में पी.एल.सी. प्रणाली के अंतर्गत चलायी गयी कुल गाड़ियों का उल्लेख किया जाएगा।

14. पी.एल.सी. पर चलायी गयी अंतिम गाड़ी के उल्लेख के नीचे एक लाल रेखा खींची जाएगी और उसके नीचे 'सामान्य कार्य-प्रणाली लागू' लिखा जाएगा।

15. यदि ड्यूटी बदलते समय भी पेपर लाइन क्लीयर प्रणाली चल रही हो तो टी.एस.आर. एवं स्टेशन मास्टर डायरी में लाल स्याही से इसका उल्लेख करेंगे ताकि कार्यभार ग्रहण करने वाला स्टेशन मास्टर इस संबंध में अनिवार्य रूप से जानकारी प्राप्त कर ले।

पेपर लाइन क्लीयर प्रणाली से गाड़ी संचालन में खामी

यदि अपेक्षित सतर्कताओं का पालन न किया जाए तो एक ही ब्लॉक सेक्शन में एक से ज्यादा गाड़ियाँ प्रवेष्ट कर सकती हैं एवं गंभीर दुर्घटना हो सकती है।

रोकने के उपाय

1. यह प्रणाली खतरनाक और आपातकाल के लिए है। इस प्रणाली से गाड़ी संचालित करते समय अत्यधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है।

2. कभी भी आवश्यक संदेशों के आदान-प्रदान एवं उनकी प्रविष्टियाँ पुस्तिका में किए बिना पी.एल.सी. टिकट तैयार कर गाड़ी न चलावें।

3. ब्लॉक उपकरण विफल होने पर एस एंड टी स्टाफ से बिना पूरी लिखत-पढ़त के उपकरण को ठीक न करावें। ❖

वरिष्ठ परिचालन प्रबंधक/संरक्षा

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

☎ संपर्क: 09794840914

लेखकों/ रचनाकारों से निवेदन

‘रेल रश्मि’ में प्रकाष्ठनार्थ रेल से संबंधित तकनीकी, गैर-तकनीकी, लेख, कहानी, कविता, गज़ल, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएँ आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कष्टया नोट करें कि रचनाएँ टाइप की हुई अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई हो। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को भेजने से पूर्व एक बार पढ़कर पाठ अवश्य श्रुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आश्रय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है। रचना के साथ पिन कोड संख्या व संपर्क नंबर अवश्य उद्धृत करें।

कई रचनाएँ एक साथ न भेजें। साथ ही रचना दो से तीन फुल स्केप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा।

रचनाएँ निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-

संपादक

रेल रश्मि

केंद्रीय हिंदी अनुभाग

मुकाधि कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे

गोरखपुर-273012

ईमेल: seniorol9@gmail.com

◆ चिकित्सा ◆
बत्तीस दाँतों की सेवा
डा. प्रियंका यादव

कहते हैं कि 'जीने के लिए खाना चाहिए न कि खाने के लिए जीना चाहिए।' खैर ये अपनी व्यक्तिगत पसंद है कि हम क्या चुनते हैं। तरह-तरह के व्यंजन जब दाँतों से चबाये जाते हैं और उसके स्वाद का अनुभव करते हैं तो उस लम्हे का वर्णन सब अपनी-अपनी स्वाद की भाषा में करते हैं। लेकिन जब एक भी दाँत में दर्द उठता है तो सारे स्वाद फीके लगने लगते हैं। इसलिए 'Prevention is better than cure' पर चलते हैं और दाँतों को स्वस्थ रखने के उपायों पर विचार करते हैं।

शिशुओं में (Infants)

नवजात शिशु शुरुआती छः महीनों में केवल दूध पीते हैं और छः माह की उम्र तक उनमें दाँत नहीं होते हैं। यही सोच कर अभिभावक इन दिनों में शिशुओं के मसूड़ों (Gum Pad) की देखभाल नहीं करते हैं।

→ जब-जब शिशु को दूध पिलाएँ, उसके बाद गीली (पानी से भीगी हुई) कॉटन (रुई) से शिशु के मसूड़े साफ कर दें।

→ बच्चे में दूध के दाँत (Primary teeth) आने पर बच्चों को ब्रश करना नहीं आता है, उससे बच्चों को ब्रश करना सिखाएँ। रात में ब्रश करने की आदत डालनी चाहिए।

→ बच्चा यदि बोतल से दूध पीता है तो यह ध्यान रखना चाहिए कि वह दूध पीते-पीते सो न जाए, यदि सो जाता है, तो उसे कुल्ला करवा दें। नहीं तो दाँतों में कीड़े (Caries) लगने की संभावना बढ़ जाती है।

→ दूध के दाँतों (Primary teeth) में कीड़े लगने से, बाद के दाँत (Permanent teeth) के टेढ़े-मेढ़े होने की संभावना बढ़ जाती है।

गर्भावस्था में (Pregnancy)

गर्भावस्था में शरीर में हार्मोनल बदलाव होते हैं। इसलिए दाँतों की गंभीर समस्या पैदा हो सकती है। अतः दाँतों और मसूड़ों की सफाई पर ध्यान देना चाहिए। लापरवाही से पायरिया नामक गंभीर रोग हो सकता है।

बुजुर्गों में (Old age)

बुजुर्गों में मसूड़े दाँतों को छोड़ नीचे की ओर खिसकने लगते हैं। अतः दाँतों में ठंडा-गरम लगना (Sensitivity) की समस्या होने लगती है। परंतु, सही देखभाल और चिकित्सक के परामर्श से यह समस्या ठीक हो सकती है।

डायबिटीज (Diabetes)

मधुमेह में मसूड़ों की समस्या बढ़ जाती है। अतः समय-समय पर दाँतों की सफाई (Oral Prophylaxis) करानी चाहिए, अन्यथा दाँत कमजोर होकर गिर जाते हैं।

ब्रश कैसा लें

दाँत साफ करने का ब्रश बहुत हार्ड (Hard) नहीं होना चाहिए क्योंकि हार्ड ब्रश से दाँत घिस जाते हैं। ब्रश मीडियम सॉफ्ट (Medium Soft) होने चाहिए। रात में दाँतों की सफाई करने से कीड़े लगने की संभावना बहुत कम हो जाती है। ❖

दंत चिकित्सक
द्वारा कार्यकारी इंजीनियर/बाढ़
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

**पूर्वोत्तर रेलवे पर राजभाषा संबंधी गतिविधियों का दिन-प्रतिदिन का अपडेट
सोशल मीडिया फेसबुक <http://www.facebook.com/rajbhasha.ner>
पर आप देख सकते हैं।**

◆ कहानी ◆
औपचारिकता
सुनील श्रीवास्तव 'राज'

माँ ने सवेरे-सवेरे बाहर का दरवाजा खोला ही था कि मोबाइल की घंटी बज उठी। उधर से बड़े मामा कह रहे थे- 'कल रात बाबूजी का देहांत हो गया।' सुनते ही माँ की आँखें भर आयीं। भारी आवाज में पूछा- 'कौन-कौन लोग थे उनके साथ अंतिम समय में।'

'बस, मैं और रामू। सबको फोन कर दिया है। आज शाम तक अंत्येष्टि संस्कार हो जाएगा।' यह कहते हुए बड़े मामा ने फोन बंद कर दिया।

माँ ने तुरंत पापा को जगाया और नाना जी के देहांत की सूचना दी। फिर वे लोग विचार करने लगे किस ट्रेन से चला जाए। दूरी देखते हुए अंत्येष्टि संस्कार में शामिल हो पाना संभव नहीं था लेकिन यह तय हुआ कि जितनी जल्दी हो सके ट्रेन पकड़ कर निकल लिया जाए।

नाना जी के चार बेटे थे- प्रभुनाथ, विष्णुनाथ, दीनानाथ और रामनाथ। इनमें सबसे बड़े प्रभुनाथ थे। यही हमारे बड़े मामा थे जो पटना में नाना जी के साथ रहते थे। नानी का देहांत बहुत पहले हो चुका था। उस समय मेरी माँ दो वर्ष की थी। नाना जी की सबसे छोटी संतान। बड़े मामा मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव का काम करते थे। वे अविवाहित थे। बाकी तीनों मामा अपने-अपने परिवारों के साथ अलग-अलग शहरों में रहते थे।

बड़े मामा से छोटे विष्णुनाथ मामा आकाशवाणी में नौकरी करते थे। वे दिल्ली में रहते थे। उनसे छोटे दीनानाथ मामा प्रशासनिक अधिकारी थे। वे चंडीगढ़ में अपने सरकारी बंगले में रहते थे। सबसे छोटे मामा भोपाल में रेलवे में सुपरवाइजर थे।

पूरी रात की यात्रा के बाद जब हमलोग पटना पहुँचे तो सुबह के आठ बज चुके थे। नाना जी के घर पहुँचते-पहुँचते नौ बज गए। आटो के दरवाजे पर रुकते ही माँ जल्दी से उतर कर दौड़ती हुई नाना जी के कमरे में पहुँच गई और उनके खाली बिस्तर को देख फूट-फूट कर रोने लगी। मैं सहमते हुए उनके पीछे कमरे में घुसा। बिस्तर पर सफेद चादर बिछी हुई थी और कोने में एक कुर्सी पर

नाना जी की फोटो रखी थी जिसे माला पहनायी गयी थी। बगल में कुर्सी के नीचे अगरबत्तियाँ जल रही थीं।

नवंबर का महीना समाप्त होने को था। हवा में ठंड घुल रही थी। धूप की तपिष्ठा अच्छी लगने लगी थी। आँगन में मुहल्ले के लोग धीरे-धीरे इकट्ठे हो रहे थे। आगे का कार्यक्रम कैसे किया जाय, इस पर विचार हो रहा था। बड़े मामा ने बातचीत में बताया कि विष्णुनाथ मामा और दीनानाथ मामा कल ही फ्लाइट से आ चुके थे और पास ही के होटल में सपरिवार ठहरे थे। नाना जी के दो कमरों के मकान में जगह ही कितनी थी कि चारों भाई सपरिवार रह सकें। सबसे छोटे मामा रामनाथ अपने एक दोस्त के घर पर टिके थे। दिन में सभी यहाँ इकट्ठे होते और रात में अपने-अपने स्थान पर सोने चले जाते। बड़े मामा के साथ बाल-बच्चों तथा परिवार का कोई झंझट नहीं था, इसलिए उन्हें कोई समस्या नहीं थी। माँ ने एक बार बताया था कि शुरु-शुरु में बड़े मामा के विवाह के लिए कई रिश्ते आये लेकिन उन्होंने कोई खास रुचि नहीं ली। इसी बीच उनसे छोटे मामा की नौकरी आकाशवाणी में लग गई और उनके लिए भी रिश्ते आने लगे। उन्होंने छादी के लिए हामी भर दी। विष्णुनाथ मामा की छादी के बाद बड़े मामा ने छादी करने से ही मना कर दिया।

नाना जी पिछले दो सालों से बीमार चल रहे थे। उनकी आयु भी नब्बे के लगभग हो गयी थी। उठना-बैठना मुश्किल हो रहा था। दैनिक क्रिया-कर्म के लिए दूसरों पर निर्भर थे।

नाना जी के शिथिल होने पर बड़े मामा ने अपने अनुज विष्णुनाथ मामा को फोन किया था कि कुछ दिन बाबूजी को अपने यहाँ बुला लें ताकि इनकी देखभाल ठीक से होती रहे। बड़े मामा ने कहा था कि मेरा परिवार तो है नहीं, अकेले में इनकी देखभाल कितनी कर पाऊँगा। लेकिन विष्णुनाथ मामा ने नाना जी को अपने साथ रखने में असमर्थता प्रकट की। कहने लगे- 'आप तो जानते हैं भइया, दिल्ली जैसे शहर में ऑफिस के लिए मुझे सबेरे सात बजे ही निकलना पड़ता है, फिर नौ

बजे तक दोनों बच्चे स्कूल चले जाते हैं और मीरा एन. जी.ओ. में काम करने चली जाती है। दिन में घर पर कोई नहीं रहता। ऐसी स्थिति में दिनभर बाबूजी को अकेले कैसे छोड़ा जा सकता है?’

बड़े मामा ने वहाँ से निराशा होकर दीनानाथ मामा का मन टटोला था। पर दीनानाथ मामा की अलग समस्या थी। प्रशासनिक व्यस्तता के चलते बाबूजी के लिए समय निकाल पाना मुश्किल था। राजनीतिक हलकों में उनके कई दोस्त थे तो कई दुश्मन भी थे। कब कहाँ स्थानांतरण हो जाय इसका कोई ठिकाना नहीं था। मामी किसी बड़े अधिकारी की बेटी थी। क्लबों तथा किटी पार्टियों से उन्हें फुर्सत नहीं मिल पाती थी। ऐसी स्थिति में बाबूजी की देखभाल वहाँ कौन करता?

छोटे मामा नाना जी को अपने पास रखने को तैयार थे लेकिन उनके दो छोटे-छोटे बच्चे थे। मामी दिनभर उन्हीं को संभालने में व्यस्त रहती थी। इसके अलावा उनके लड़के की तबियत ठीक नहीं रहती थी। उनका इलाज दिल्ली के डॉक्टर से कराया जा रहा था जिसके कारण उन्हें साल में चार-पाँच बार भोपाल से दिल्ली का चक्कर लगाना पड़ता था। नाना जी के देखभाल की कोई गुंजाइश नहीं थी।

थक-हार कर बड़े मामा ने नाना जी को अपने ही पास रखने का निर्णय लिया। रामू उनके यहाँ बचपन से ही नौकर था। वही दिनभर नाना जी की देखभाल करता। बड़े मामा तैयार होकर दस बजे अपने काम पर निकल जाते थे। दवाइयाँ कब-कब और कैसे खिलानी है यह रामू को पता था। बड़े मामा ने रामू की तनख्वाह भी दो सौ रुपये बढ़ा दी थी। नाना जी को श्रौचादि कराना तथा साफ-सफाई करने का काम भी उसी के जिम्मे था।

आँगन में सारे संबंधी, मित्र, शुभचिंतक आदि इकट्ठे हो गये थे। महिलाएँ बरामदे में नीचे बिछी दरी पर बैठी थीं और यहाँ पहुँचने के दौरान रास्ते में उन्हें क्या-क्या कठिनाइयाँ हुई, यही उनके बीच चर्चा का विषय था। बच्चे दौड़-दौड़ कर खेलने में मग्नगूल थे। आँगन में इकट्ठे पुरुषों में इस बात पर बहस हो रही थी कि नाना जी का श्राद्ध कर्म किस विधि से संपन्न किया जाय। घर में तेरहवीं की परंपरा थी। बाहर से आये लोगों में तेरह दिन तक रुकने का समय किसी के पास नहीं था। दीनानाथ मामा के बेटे को अगले सप्ताह स्कूल के

टेस्ट में शामिल होना था तो छोटे मामा को अपने बच्चे को दिखाने दिल्ली जाना था। विष्णुनाथ मामा की छुट्टी स्वीकृत ही नहीं हुई थी और उनके ऑफिस से लगातार फोन आ रहे थे। आधुनिक जीवन शैली ने संबंधों की ऊर्जा के मानक बदल दिए थे। यह उनका दोष नहीं था। कालवाह्य हो चुके परंपराओं को ढोने की मजबूरी को फिर से पारिभाषित किए जाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही थी।

सबकी दृष्टि बड़े मामा पर टिकी थी। घर में बड़े होने के नाते यह निर्णय उन्हीं को लेना था। यद्यपि उस भीड़ में परंपरा की दुहाई देने वाले भी कम नहीं थे, लेकिन कुछ लोगों का विचार था कि समय की मांग को देखते हुए सुविधाजनक मार्ग अपनाया जाना अनुचित नहीं होगा।

आखिर विचारों की ऊहा-पोह में सामयिकता की विजय हुई और बड़े मामा ने आँगन में खड़े होकर तेरहवीं की जगह तीन दिन के कार्यक्रम की घोषणा कर डाली। उन्होंने यह भी बताया कि इस संबंध में पंडित जी से उनकी वार्ता हो चुकी है और आज सायंकाल वैदिक रीति से हवन-यज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है। परसों श्रांति-यज्ञ संपन्न होगा और हलवे का वितरण किया जाएगा। ब्रह्म-भोज की औपचारिकता भी उसी दिन पूरी कर ली जाएगी।

बड़े मामा की इस घोषणा के बाद सभी के चेहरे का तनाव छूट चुका था। वातावरण हल्का हो चला था। ऊपर आसमान में दोपहर का सूरज मंद गति से पश्चिम दिशा की ओर बढ़ रहा था।

ग्राम को विद्वान पंडितों की टोली ने विधिवत शुद्धि-यज्ञ कराया। श्राद्ध-कर्म के नाम पर समाज में फैले अंधविश्वासों पर एक लंबा प्रवचन भी दिया। प्रवचन में यह बताया गया कि मष्ट्यु के बाद जीव को उसके कर्मों के अनुसार ही फल की प्राप्ति होती है। इसलिए उसे सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए। तीसरे दिन श्रांति-यज्ञ संपन्न हुआ।

अगली सुबह होते ही कई लोग अपने-अपने साधनों से गंतव्य की ओर निकल पड़े। भागने की जल्दी हर किसी की थी। बड़े मामा माँ से कह रहे थे- ‘चाहो तो दो दिन और रुक जाओ। अब तो मैं भी अकेला हो गया हूँ। इतने दिनों तक बाबूजी की छत्रछाया मेरे सिर पर

थी। अब वह भी खत्म हो गयी। भगवान जाने मेरा बुढ़ापा कैसे कटेगा।' बड़े मामा कहते-कहते आसमान की तरफ देखने लगे।

‘आप चिंता न करें भइया।’- माँ ने आश्वस्त किया-‘मैं एक हफ्ते रुक कर जाऊँगी। अभी घर में कितना काम पड़ा है। सभी को जाने की जल्दी है। फिर आप अकेले यह सब कैसे करेंगे। मैंने विक्की के पापा से बात कर ली है। वे एक हफ्ते बाद आकर हमें ले जाएँगे।’

अगले एक हफ्ते माँ ने रामू के साथ मिलकर सारा घर व्यवस्थित कर लिया था। सारे सगे-संबंधी जा चुके थे। बड़े मामा ने भी काम पर जाना प्रारंभ कर दिया था।

आज हमलागों के लौटने का दिन था। पापा ने सुबह ही एक ऑटोवाले को बुला लिया था। आठ बजे की ट्रेन थी। धीरे-धीरे सारा सामान ऑटो के पीछे लाद दिया गया। सबके बैठने के बाद ऑटोवाले ने गाड़ी स्टार्ट कर दी। मैंने देखा, बड़े मामा हाथ हिलाकर हमें विदा कर रहे थे। ऑटो की गति बढ़ने के साथ-साथ उनकी आकृति छोटी होती जा रही थी।

माँ अभी भी आँचल से अपनी आँखों को बार-बार पोंछ रही थी। दिसंबर का महीना प्रारंभ हो गया था। हवा और भी ठंडी हो चली थी। ❖

क्वार्टर नं. 772/ए
कौवाबाग रेलवे कालोनी
गोरखपुर-273012

☎ संपर्क: 9794840189

माखनलाल चतुर्वेदी

इनका जन्म सन् 04.04.1889 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के ‘बाबई’ नामक ग्राम में हुआ। प्रारंभ में इन्होंने अध्यापन का कार्य किया। स्व. गणेश छांकर विद्यार्थी जी के संपर्क में आने तथा प्रेरणा से साहित्य-सेवा और देश-सेवा का पवित्र व्रत धारण किया। सन् 1921-22 में असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इन्होंने ‘एक भारतीय आत्मा’ के उपनाम से ओजपूर्ण, राष्ट्रीय कविताएँ लिखी थीं। बाद में ‘प्रभा’ के संपादकीय विभाग में कार्य किया। फिर ‘कर्मवीर’ के संपादक रहे। साहित्य सेवा के लिए सागर विष्टविविद्यालय ने इन्हें डी.लिट्. की उपाधि तथा भारत सरकार ने ‘पद्म भूषण’ से अलंकृत किया। 1943 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हुए।

प्रसिद्ध रचनाएँ

काव्य- हिमकिरीटनी, हिमतरंगिणी, युगचरण, समर्पण तथा माता।

गद्य- ‘साहित्य देवता’ प्रसिद्ध हैं।

इनका देहांत 30.01.1968 को हुआ था।

रामवृक्ष बेनीपुरी

इनका जन्म सन् 1899 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ था। हाईस्कूल के बाद ही ये गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए। कई बार जेल गए। छोटी उम्र से ही अखबारों में लिखने लग गए थे। आगे चल कर आप पत्रकार बन गए। इन्होंने ‘तरुण भारत’, ‘किसान मित्र’, ‘बालक’, ‘युवक’, ‘कर्मवीर’, ‘हिमालय’, ‘नई धारा’ जैसी पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया।

ललित निबंधों के क्षेत्र में आपको विशेष ख्याति मिली।

प्रसिद्ध रचनाएँ

गद्य- माटी की मूर्तें, लाल तारा, गेहूँ और गुलाब, मशाल, जंजीर, दीवारें, पैरों में पंख बाँधकर। ‘बेनीपुरी ग्रंथावली’ में इनकी समस्त रचनाएँ प्रकाशित हैं।

इनका देहांत 1968 ई. को हुआ।

रहस्यमयी कड़ाही

श्रीरीं नियाजी

बहुत पुरानी बात है,

एक गाँव में एक गरीब बुढ़िया अपने पोते बब्बू के साथ रहती थी। बुढ़िया का बेटा और बहू दोनों गाँव के मोटे बनिये के खेत में काम करते थे। मोटा बनिया उनसे और दूसरे कई गाँव के गरीब लोगों से बहुत सख्त काम लेता था। बदले में थोड़ा सा अनाज दे दिया करता था। दिन भर कड़ी धूप में मेहनत का उतना कम मुआवजा (पारिश्रमिक) पाने वाले लोगों को गुस्सा तो जरूर आता था, लेकिन वह मजबूर थे क्योंकि उनके पास और कोई ज़रिया नहीं था।

मोटे बनिये ने उन लोगों की जमीन भी हेराफेरी करके हड़प ली थी। काम न करते तो क्या करते?

उसकी माँ को बनिये के खेत में धान रोपते वक्त किसी साँप ने काट लिया था और उसका बापू बनिये का कुआँ खोदते वक्त मिट्टी के नीचे दब कर मर गया था।

बनिया उन लोगों को मुआवज़ा तो क्या देता, उल्टे उसकी एक बीघा जमीन ही हड़प ली।

तब से ये दोनों बड़ी गरीबी में अपना दिन गुजार रहे थे। बुढ़िया अड़ोस-पड़ोस के कुछ लोगों का झाड़ू-बर्तन कर देती थी जिससे किसी तरह दोनों दादी-पोता प्याज-चटनी से रोटी खा लेते थे।

इधर कई दिनों से बुढ़िया बीमार थी। इसलिए काम पर नहीं जा सकी थी। बब्बू अभी सिर्फ सात साल का था। पहले कई दिनों तक वह दादी की खिदमत में लगा रहा, लेकिन एक दिन जब घर में कुछ भी न बचा तो वह पड़ोस की एक औरत के पास गया। उसने उसे अपनी बकरी चराने का काम दे दिया। दिन भर उसने बकरी की खूब रखवाली की लेकिन खुद भूखा रह गया। शाम को उस औरत ने बकरी चराने के बदले उसे एक मुट्ठी आटा दे दिया। बब्बू ने घर आकर दादी के हवाले किया और खुद झोंपड़ी के पिछवाड़े सूखी लकड़ियाँ खोजने चला गया।

बड़ी मुश्किल से दादी ने उठकर लकड़ी जलायी और आटा गूँथकर एक रोटी पका ली। आटा इतना ही था कि उससे एक मोटी रोटी बन सके।

ये बब्बू की मेहनत की कमाई थी, इसलिए दादी ने सोचा वह इस रोटी के चार टुकड़े करेगी और

तीन टुकड़े बब्बू को देकर एक टुकड़ा खुद खा लेगी।

बिना दूध की काली चाय और तीन टुकड़ा रोटी का उसने बब्बू की थाली में रख दिया और मिर्च के एक टुकड़े के साथ पहला कौर उठाया ही था कि दरवाजे पर किसी ने आवाज लगायी।

तीन दिन से भूखा हूँ। है कोई जो रोटी का एक टुकड़ा दे दे? बुढ़िया के हाथ रुक गए। अपनी रोटी लिए-लिए ही वह दरवाजे तक आ गई। वह आदमी बहुत बूढ़ा और कमजोर था और सचमुच बहुत भूखा मालूम हो रहा था। बुढ़िया ने कुछ सोचा और अपनी रोटी उसकी तरफ बढ़ा दी।

बूढ़े ने रोटी लपक ली और जल्दी से मुँह में डाल कर मुँह चलाने लगा। लेकिन सूखे गले में रोटी अटक गई और वह ओक-ओक करने लगा। उसकी आँखों में आँसू आ गए।

बब्बू जल्दी से पानी ले आया। बूढ़े की हालत देखकर उसे बहुत दुःख हुआ और उसने अपनी रोटी भी बूढ़े को दे दी। बूढ़ा जल्दी-जल्दी तमाम टुकड़े खा गया।

थोड़ी देर बाद लाठी के सहारे खड़े होकर बूढ़ा चलने को हुआ और उन दोनों का शुक्रिया अदा करते हुए अपने थैले में से लोहे की एक छोटी सी कड़ाही निकाल कर बब्बू को देते हुए बोला- 'मैं अब बहुत कमजोर हो गया हूँ और मुझे आगे जाना है। ये कड़ाही मुझे भारी लगती है। इसे लेकर चलने में परेशानी होती है। इसलिए तुम इसे अपने पास रख लो।'

'लेकिन, हम इस कड़ाही का क्या करेंगे बाबा? वैसे भी हमारी झोंपड़ी बरसातों में टपकती है। पानी पड़ने से इसमें जंग लग सकती है। खराब हो जाएगी।'

'कोई भी चीज बेकार नहीं होती। हो सकता है ये कभी तुम्हारे किसी काम ही आ जाए।' -बूढ़े ने कहा और कड़ाही बब्बू को थमाकर अपने रास्ते चल दिया।

अब शाम ढल गई थी और रात ने अपने पैर फैला दिए थे। उन लोगों के पास अब खाने को कुछ भी नहीं बचा था। इसलिए एक-एक कटोरी पानी पीकर वह सोने के लिए अंदर कोठरी में पुआल के बिस्तर पर लेट गए।

आधी रात बीत गई होगी जब बब्बू के पेट में

जोर की ऐंठन होने लगी। वह उठकर बैठ गया। उसे मालूम था कि ऐसा भूख की वजह से हो रहा है, लेकिन दादी को उठाना बेकार था। वह बेचारी उठकर भी क्या करेगी? घर में चुटकी भर भी अनाज होता तो वह बब्बू की भूख मिटाने का इंतजाम कर देती। बब्बू ने सोचा— एक कटोरी और पानी ही पी लें।

घड़े के पास जाकर उसने धीरे से पानी निकाला और घूँट-घूँट कर पीने लगा। खाली पानी भी गले में अटक जाता है। सो उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। उसे खाँसी आ गई और उठते वक्त घड़े के पास ही रखी बूढ़े की कड़ाही से उसका पैर टकड़ा गया।

पैर के टकराते ही कड़ाही गोल-गोल घूमने लगी और जूँ... जूँ की आवाज के साथ ऊपर उठने लगी। बब्बू का डर के मारे बुरा हाल होने लगा। वह चिल्ला उठा— ‘दादी....’

दादी तो पहले ही जग चुकी थी और आवाज को समझने की कोशिश कर रही थी। बब्बू की आवाज सुनकर वह दौड़कर बब्बू के पास गई। उसने उसे सीने से चिमटा लिया। कड़ाही को घूमते देख वह भी घबरा गई थी। उसके माथे पर पसीना आ गया। वह बौखलाहट में चिल्ला उठी— ‘अरी ओ कड़ाही! ये क्या तमाशा कर रही है तू?’

उसके जवाब में कड़ाही गुनगुनाने लगी। ‘मैं चली, मैं चली मोटे बनिए की गली, दादी रोको न मुझे, बब्बू टोको न मुझे। मैं तो पीटूँगी उसे, धुन-धुन धुनकूँगी उसे। उसने लूटा है सबको, मैं तो लूटूँगी उसे।’

गाते-गाते कड़ाही बाहर निकल गई। दादी और बब्बू हैरान खड़े ये सब देखते रह गए। उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। उन दोनों की नींद उचट गई थी। दादी बब्बू को गोद में लेकर वहीं बैठ गई।

अभी कुछ ही मिनट हुए थे कि कड़ाही वापस आती दिखाई दी। अब उसके अंदर खाने-पीने की चीजें भरी हुई थीं। नीचे उतर कर वह दादी और बब्बू के सामने बैठ गई और बोली— ‘खाना खा लो।’

लेकिन डर के मारे दोनों में से किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी खाने की तरफ हाथ बढ़ाने की। ‘खाना खा लो बब्बू’ —कड़ाही बड़े प्यार से बोली। ये सारा सामान मैं मोटे बनिये के घर से लाई हूँ। ये सब कुछ तुम्हारे खेत का है। इन चीजों पर तुम्हारा हक

है। तुम्हारे अलावा मैं उन सबको उनकी चीजें लौटाऊँगी, जिन्हें मोटे बनिये ने लूट कर अपना घर भरा है।

उस रात के बाद कड़ाही हर रात घर से निकलती और खाने-पीने की चीजें ले आती। इस बीच उसने ये भी पता कर लिया कि कितने लोग बनिये के जुल्म के शिकार हैं।

इधर मोटे बनिये ने अपने जासूस छोड़ रखे थे। इस बात का पता करने के लिए कि कौन उसके घर से खाने की चीजें चुरा ले जाता है। एक रात उसके एक जासूस ने कड़ाही को देख लिया और चिल्लाता हुआ उसके पीछे दौड़ने लगा— ‘चोर.... चोर....।’

बहुत सारे लोग उसके पीछे दौड़े। कड़ाही उनके सर के ऊपर से उड़ रही थी। झोंपड़ी के करीब पहुँचते ही कड़ाही एक आदमी के सर पर कूद गई। वह चकरा कर गिर गया। उसके पीछे आने वाले उसे उठाने को झुके तो कड़ाही नाच-नाच कर सब की धुनाई करने लगी। सब एक-दूसरे पर गिर कर बेहोश हो गए। शोर सुनकर सारा मुहल्ला जाग उठा था। उन सबको झोंपड़ी में बंद करने को कहा और खुद उड़ कर बनिये के घर पहुँची और सोये हुए बनिये को सर पर खूब-खूब कूदी और उसके सिरहाने से चाबी निकाल कर तिजोरी खोलकर तमाम गाँव वालों के कर्जे के झूठे कागजात उठा ले आई। और सबके सामने ही रखकर उन्हीं कागजों से सबके चूल्हे जलवा दिए। सबने मिल कर खाना पकाया और खा-पीकर अपने-अपने खेतों की तरफ चल दिए।

बूढ़ा फकीर गाँव के सबसे ऊँचे पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर बैठा ये सब देख रहा था।

‘अब मेरा काम खत्म हुआ, मैं जाती हूँ।’ —कड़ाही बोली तो बब्बू रोने लगा।

‘नहीं, नहीं प्यारी कड़ाही तुम हमें छोड़ कर मत जाओ।’

‘मुझे तो जाना ही पड़ेगा प्यारे बच्चे, इस गाँव की तरह और भी गाँव हैं जहाँ इस मोटे बनिये की तरह के लोगों के जुल्म के शिकार गरीब लोग मौजूद हैं। मुझे उन्हें भी इन जुल्मों से मुक्ति दिलाना होगा।’

—कहकर कड़ाही उड़ी और बूढ़े फकीर के थैले में समा गई। ❖

टीचर्स कालोनी, रीवर साइड, भुरकुंडा
जिला-रामगढ़-829135(झारखंड)

☎ संपर्क: 09234033364

असली शेर

डा.जाकिर अली 'रजनीष्ठा'

मुगल बादशाह औरंगजेब के दरबार में उस रोज आम जलसा था। दीवाने-आम लोगों से खचाखच भर चुका था। वहाँ पर तिल रखने की भी जगह नहीं बची थी। तभी औरंगजेब ने दरबार में प्रवेश किया। कुछ रस्मी कार्यवाही हुई और दरबार की कार्यवाही प्रारंभ कर दी गयी।

चोबदार ने अपनी बुलंद आवाज में बादशाह से पूछा- 'शाहंशाहे हिंदुस्तान! सूरतपुरा के इलाके का आदमखोर शेर जिंदा पकड़ा जा चुका है। अगर आप इजाजत दें, तो उसे दरबार में पेक्षा किया जाए।'

'इजाजत है।' - हाथ उठाकर औरंगजेब ने जवाब दिया। बादशाह का हुक्म पाते ही चोबदार ने धीरे से ताली बजायी। सभी लोगों की निगाहें दरवाजे की ओर उठ गई। कुछ ही पलों में पिंजरे में कैद एक बब्बर शेर वहाँ लाया गया। लोहे के मोटे सींखचों में कैद शेर उत्सुकतापूर्वक इधर-उधर देख रहा था। पूरे दरबार पर एक नजर मारने के बाद उसने एक जोरदार दहाड़ लगाई। उसे देखकर समस्त दरबारियों के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई।

दहाड़ सुनकर सारा दरबार थर्रा गया। बादशाह के होठों पर एक हल्की-सी मुस्कान दौड़ गई। वह बोला- 'मैंने अपनी जिंदगी में ऐसा बाँका शेर नहीं देखा। इसे किसने पकड़ा है?'

'मैंने व मेरे साथियों ने।' - पिंजरे के पास खड़े शिकारी ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया।

'तुम्हारी तारीफ?'

'नाचीज़ को अफजाल कहते हैं। अब तक मैं पचासों आदमखोरों का शिकार कर चुका हूँ।'

'बहुत खूब। तुमने वाकई बहादुरी का काम किया है। ये रहा मेरी तरफ से एक छोटा-सा नजराना।' - कहते हुए औरंगजेब ने अपने गले से एक हार उतार कर शिकारी की तरफ उछाल दिया। इनाम पाकर अफजाल बहुत खुश हुआ। वह बादशाह को दुआएँ देता हुआ वहाँ से चला गया।

दरबार में उपस्थित सभी लोगों की निगाहें बब्बर शेर पर लगी हुई थीं। औरंगजेब पर तो जैसे शेर ने जादू-सा कर दिया। वह एकदम से बोल उठा- 'वाकई कितना सजीला और फुर्तीला शेर है यह। अच्छा, क्या इसे हमारा कोई दरबारी पकड़ सकता था?'

बादशाह की बात सुनकर सभी दरबारी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। दरबार में एकदम सन्नाटा छा गया। औरंगजेब

ने सभी लोगों पर एक सरसरी-सी नजर मारी और बोला- 'खैर छोड़ो, शेर तो पकड़ा जा चुका है। पर क्या इसकी टक्कर का दूसरा शेर मिल सकता है?'

यह सुनकर एक चाटुकार बोला- 'क्यों नहीं जहाँपनाह, आपके दरबार में भी बहुत से सिंह मौजूद हैं।' कहते हुए उसने राजपूत राजा यशवंत सिंह की तरफ व्यंग्यपूर्वक देखा।

औरंगजेब की नजरें भी वहीं जा पहुँची। यशवंत सिंह और औरंगजेब की नजरें आपस में टकरायीं। यशवंत सिंह के मुँह से कोई शब्द न फूटा। बात औरंगजेब ने ही आगे बढ़ायी। वह बोला- 'क्यों यशवंत सिंह, राजपूत भी तो अपने को सिंह कहते हैं? क्या कोई ऐसा सिंह है, जो इस शेर को पछाड़ सके?'

सारे दरबारियों की निगाहें यशवंत सिंह पर जम गईं। वह सोच में पड़ गया। उसे लगा कि बादशाह उसे चुनौती दे रहे हैं। यदि उसने इस चुनौती को स्वीकारने में जरा भी देरी की, तो सारी राजपूताना छान मिट्टी में मिल जाएगी। वह बोला- 'मेरे पास एक ऐसा सिंह है जहाँपनाह, जो इस शेर को भी धूल चटा देगा।'

'अच्छा?' - औरंगजेब ने गौर से यशवंत सिंह को देखा- 'लेकिन मुकाबला निहत्थे होगा।'

'राजपूत मुकाबला हमेशा बराबरी वाले से ही करते हैं। इसलिए जब शेर निहत्था होगा, तो सिंह के पास किसी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र के होने का सवाल ही नहीं उठता।'

'अगर सिंह हार गया, तो?'

'तो आप मेरा सर कलम करवा दीजिएगा।' - यशवंत सिंह ने गर्व से छाती फुलाते हुए कहा।

'ठीक है, तो फिर कल होगा यह मुकाबला। देखते हैं, कौन जीतता है इसे।' - कहते हुए औरंगजेब ने दरबार की समाप्ति की घोषणा कर दी।

घर पहुँचने पर यशवंत सिंह ने अपने परिवार को सारी बात कह सुनाई। मुकाबले की बात सुनकर उनकी पत्नी बोल पड़ी- 'ये क्या किया अपने? आपने मासूम पुत्र को खूनी शेर से लड़वाएँगे?'

'नहीं-नहीं, मैं ऐसा हरगिज नहीं होने दूँगी। मैं जानबूझ कर अपने लाल को मौत के मुँह में नहीं झोंक सकती।'

'तो तुम क्या चाहती हो कि भरे दरबार में मेरा अपमान हो?' - यशवंत सिंह का अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रहा- 'और लोग कहें कि यशवंत सिंह का राजपूताना खून सड़ गया है। वह राजपूत होकर भी अपने वचन को पूरा नहीं

कर सका।’

‘नहीं पिताजी, ऐसा नहीं हो सकता। आपका प्रण अवश्य पूर्ण होगा।’ – राजपूती खून की बात सुनकर यशवंत सिंह का पुत्र पञ्चवी सिंह अपने को रोक न पाया- ‘आपका सिंह बादशाह के शेर को अवश्य धूल चटाएगा। यह मेरा वादा है।’

‘लेकिन बेटा.... ।’ – माँ ने कुछ कहना चाहा।

पर पञ्चवी सिंह ने उसकी बात बीच में ही काट दी- ‘नहीं माँ, ये राजपूतानी श्रान का सवाल है। मुझे आशीर्वाद दो माँ कि मैं आपके दूध और राजपूती खून की लाज रख सकूँ।’

लेकिन माँ ने कोई जवाब नहीं दिया। पञ्चवी सिंह अपनी माँ की चरणों को थाम कर बोला- ‘आशीर्वाद दो माँ।’

‘विजयी भव वत्स!’ – कहते हुए माँ ने अपने बेटे को सीने से लगा लिया और मन ही मन उसे हजारों दुआएँ देने लगीं। लेकिन ममता तो ममता होती है। मन में आशंका तो थी ही। पलकों की कोरों ने बहुत कोशिश की, लेकिन दो बूँद आँसू निकल ही पड़े।

अगले दिन दरबार में अच्छी-खासी भीड़ थी। दूर-दूर से लोग शेर और सिंह का मुकाबला देखने के लिए आए हुए थे। बादशाह के आने पर यशवंत सिंह ने अपने पुत्र को आगे करते हुए कहा- ‘शहंशाहेआलम, ये रहा मेरा सिंह। आप मुकाबले का प्रबंध कीजिए।’

‘पर ये तो अभी बहुत छोटा है।’ – पञ्चवीसिंह को देखते हुए औरंगजेब बोला- ‘यशवंत सिंह, तुम पागल तो नहीं हो गए हो, जो इस बच्चे को मौत के मुँह में ढकेल रहे हो?’

‘ये तो वक्त ही बताएगा आलमपनाह कि कौन किसको मौत के मुँह में ढकेल रहा है।’ – यशवंत सिंह ने अपना सीना फुलाते हुए कहा- ‘आप यकीन रखिए, ये राजपूत का बेटा है। और छोटे-से-छोटा राजपूत भी किसी शेर से कम नहीं होता।’

‘ठीक है, मुकाबला शुरू किया जाए।’ – बादशाह ने आज्ञा दी।

कुछ ही क्षणों में दरबार में शेर हाजिर कर दिया गया। वह एक बड़े-से पिंजरे में कैद था। शिकारी ने पिंजरे का दरवाजा खोला और पञ्चवी सिंह को अंदर धकेल दिया। शेर ने पञ्चवी सिंह पर उपेक्षा भरी एक नजर डाली और चुपचाप बैठा रहा। यह देखकर शिकारी ने शेर के पीछे से एक भाला चुभाया। भाला चुभाने से शेर उत्तेजित हो गया। उसने एक जोरदार दहाड़ लगाई और पञ्चवी सिंह पर झपट पड़ा।

पञ्चवी सिंह इसके लिए पहले से ही तैयार था। वह तुरंत दौड़ ओर झुक गया। शेर का वार खाली चला गया। शेर

इसके लिए कतई तैयार नहीं था। उसका क्रोध सातवें आसमान पर जा पहुँचा। वह पलटा और दुबारा पञ्चवी सिंह पर झपटा। इस बार पञ्चवी सिंह ने शेर को अपने हाथों पर रोक लिया। लेकिन शेर का वजन ज्यादा होने के कारण वह खुद को संभाल नहीं पाया और जमीन पर गिर पड़ा। शेर का पंजा उसके दायें गाल पर लगा और वहाँ से खून की धार फूट पड़ी।

लोगों की साँसें जहाँ की तहाँ रुक गईं। उन्हें लगा कि बस अब खेल खत्म। पर होना तो शायद कुछ और ही था। धरती पर गिरने के बाद भी पञ्चवी सिंह ने अपना संतुलन नहीं खोया। उसने अपने दोनों हाथों से शेर के जबड़े पकड़ लिए और पूरी ताकत लगाकर उसे चीर दिया।

शेर बुरी तरह से कराह उठा। अभी उसमें बहुत जान बाकी थी। उसने अपने पंजों को जमाया और पञ्चवी सिंह पर धावा बोल दिया। पञ्चवी सिंह पहले से ही तैयार था। वह सावधानी से एक ओर हट गया और फुर्ती के साथ शेर के पिछले पंजों को अपने हाथों से जकड़ लिया। शेर ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह अपने को छुड़ा नहीं सका। देखते-ही-देखते शेर की दोनों जाँघें बीच के दो भागों में बँट गईं।

सारा दरबार हतप्रभ रह गया। यह एक अभूतपूर्व दृश्य था। उम्मीद के विपरीत और कल्पना से परे। तालियों के शेर से सारा दरबार गूँज उठा। यशवंत सिंह स्वयं को रोक नहीं पाया। लगभग दौड़ते हुए वह पिंजरे के पास पहुँचा। तब तक पञ्चवी सिंह पिंजरे से बाहर निकल आया था। उसका चेहरा खून से बुरी तरह लथपथ हो चुका था। आगे बढ़कर यशवंत सिंह ने अपने सिंह को अपनी बाँहों में भींच लिया।

पञ्चवी सिंह की पीठ पर हाथ फेरता हुआ वह बोला- ‘तुमने आज मेरी लाज रख ली, बेटे! आज तुमने साबित कर दिया कि राजपूत अपने नाम के आगे यूँ ही सिंह नहीं लगाते। वे वास्तव में सिंह होते हैं।’ – कहते-कहते यशवंत सिंह की आँखों में आँसू आ गए।

औरंगजेब को जैसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। वह अपने सिंहासन से उतरा और पिंजरे के पास जा पहुँचा। उसने पञ्चवी सिंह के खून की परवाह नहीं की और उसे अपने गले से लगा लिया। उस सिंह के सम्मान में दरबार एक बार फिर तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। ❖ (ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित)

7ए/55, वंशवाचन योजना

रायबरेली रोड, लखनऊ-226029 (उ.प्र.)

☎ संपर्क: 09935923334

◆ व्यंग्य ◆
दूसरे कलाम की खोज
रण विजय सिंह

घटना, आज से लगभग डेढ़ मजे के मूड में था।

माह पहले की है। भावी राष्ट्रपति की खोज बड़े जोर-शोर से की जा रही थी। कभी किसी का नाम उछल कर सामने आ रहा था तो कभी किसी का। 'भावी' की दौड़ में सम्मिलित होने के लिए कई लोग उछल-कूद मार रहे थे। संभवतः दौड़ में शामिल होने से पूर्व वे 'वार्म अप' हो रहे थे। लोगों को वार्म अप करते हुए देखकर मुझ जैसे दर्शकों को संभावित विजेताओं का पूर्वानुमान हो जाता है। समाचार पत्रों में रामभरोसे, जुम्न मियाँ, सरदार सुखबीर सिंह से लेकर पीटर परेरा तक के नाम भावी राष्ट्रपति के रूप उछल चुके थे।

देश की लगभग आधी जनसंख्या अब तक राष्ट्रपति बनने का सपना देख चुकी थी। इनमें से कुछ की आँखें खुल चुकी थीं, लेकिन कुछ अभी तक सपने देखने में ही व्यस्त थे। ऐसे ही समय में एक रात साढ़े बारह बजे, मेरा फोन बजा। रेलवे में काम करने के कारण, मैं दूरभाष की समय-असमय तथा अक्सर कुसमय पुकारों का अभ्यस्त हो गया हूँ। रात की इस प्रहर जो टेलीफोन, गुहार लगाता है वह विष्णु रेलवे-फोन है तथा अक्सर अनहोनी घटनाओं की सूचना के लिए बजा था, वह दूसरे किस्म का था। इस पर बाहरी लोग ही बात करते थे। इसे बेसमय बजने की आदत नहीं थी। अतः इसका रात के इस प्रहर में बजना एक असामान्य घटना थी।

मैंने टेलीफोन उठाया। दूसरी तरफ से मेरा नंबर दुहराया गया। मेरे द्वारा यह बताने पर कि नंबर सही है, प्रश्न हुआ-

-अविजित जी से बात हो सकती है, क्या?

नींद में व्यवधान से मैंने खीजते हुए कहा- बोल रहा हूँ।

उधर से आवाज आयी- सर होल्ड कीजिए, माननीय प्रधानमंत्री जी बात करेंगे।

-किस संस्था के प्रधानमंत्री? -मेरा सवाल था।

-सर प्रधानमंत्री, भारत सरकार। -उधर से कहा गया।

-ठीक है बात कराइये। -मैंने निरपेक्ष भाव से कहा। मैं समझा कि कोई मजाक कर रहा है, पर मैं भी

थोड़ी देर की संगीत के बाद प्रधानमंत्री जी लाइन पर आये। परस्पर अभिवादन हुआ। उन्होंने किसी भूमिका के बगैर अपना मंतव्य जाहिर किया-

-अविजित जी! हमलोग आपको भारतीय गणतंत्र का राष्ट्रपति बनाना चाहते हैं। कृपया अपनी सहमति प्रदान करें।

पिछले दिनों की संभावित राष्ट्रपतियों की संख्या को देखते हुए मैं इस प्रकार के प्रस्ताव के लिए तैयार था और ऐसी स्थिति में अपने बचाव के लिए तर्क भी गढ़ चुका था। इसके बावजूद प्रधानमंत्री जी के मर्यादा रखने हेतु सीधा मना नहीं करना चाहता था। अतः बात को लंबा खींचने के लिए प्रश्न किया-

-आप लोग मुझे ही क्यों बनाना चाहते हैं, राष्ट्रपति? प्रधानमंत्री जी ने मेरे प्रश्न का बड़ी बेबाकी से उत्तर दिया- हम लोगों ने भावी राष्ट्रपति के चयन हेतु लाटरी के माध्यम से कुछ टेलीफोन नंबर निकाले हैं। उनमें से पहला नंबर आपका है। हमारी सूचना के अनुसार आपको न तो सोनिया जी जानती हैं न ही मुलायम सिंह जी और सुरजीत जी। मैं भी आपको नहीं जानता हूँ। ऐसी स्थिति में किसी के द्वारा आपके विरोध का प्रश्न नहीं उठता है। आप सर्वमान्य होंगे, अविजित जी! मेरा अनुरोध स्वीकार कर देश को इस संकट से उबार लीजिए-

छिप्टाचार के अनुसार प्रधानमंत्री जी के अनुरोध को ठुकराना तत्काल संभव नहीं था। मैं उनके प्रति इतना निष्ठुर नहीं हो सकता था कि रात के इस समय अपनी असहमति के बारे में बता कर उनकी नींद में व्यवधान डालूँ।

सुबह उत्तर देने का आग्रह देकर उन्हें 'शुभरात्रि' कह मैं निश्चित सो गया।

सोचने को कुछ था नहीं, इसलिए तुरंत नींद आ गयी। उत्तर तो पहले से ही तैयार था।

सुबह साढ़े आठ बजे फोन आया। प्रधानमंत्री जी द्वारा बात करने की बात कही गयी। इतनी सुबह फोन करना प्रधानमंत्री जी की व्यग्रता को दर्शाता था। मेरा नाम जानने के बाद उन्हें टेलीफोन पर लिया गया।

-अविजित जी! अपनी सहमति के बारे में आप क्या कह रहे हैं? -प्रधानमंत्री जी ने पूछा।

मैं अभी तो नहीं पर देश के इस सर्वोच्च पद पर सारी घरेलू जिम्मेदारियाँ समाप्त करने के बाद अवश्य जाना चाहता था। इतिहास में नाम दर्ज कराने की मेरी भी चाह है जो इस प्रकार से पूरी हो सकती है। अतः मैंने पूरी विनम्रता से उत्तर दिया-

-मुझे अभी राष्ट्रपति नहीं बनना है।

-लेकिन क्यों? -प्रधानमंत्री जी ने सवाल किया।

-क्योंकि मुझे अभी बहुत काम करने हैं लिखना-पढ़ना है। बच्चों की पढ़ाई पूरी करानी है। अतः अभी गृहस्थ आश्रम में रहना चाहता हूँ। मेरा, निकट भविष्य में संन्यास को कोई इरादा नहीं है।

-मेरे तर्क का प्रधानमंत्री जी के पास कोई उत्तर नहीं था।

उन्होंने हथियार डालते हुए कहा- जैसी आपकी इच्छा। यदि आप राष्ट्रपति बनने के लिए तैयार हो जाते तो हमारी एक बड़ी समस्या का समाधान हो जाता। अब हमें अपनी खोज नये सिरे से प्रारंभ करनी पड़ेगी।

-आप अपनी खोज जारी रखें। आपको मुझसे भी अच्छा व्यक्ति इस पद हेतु मिल जाएगा। वैसे आपके अनुरोध को, मैं वचन मान रहा हूँ। भारतीय परंपरा के अनुसार, अवसर एवं इच्छा होने पर आप अथवा आपके उत्तराधिकारी से राष्ट्रपति-पद मांग लूँगा। मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि एक देश-भक्त नागरिक के कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र को अपने जैसे सुयोग्य राष्ट्रपति से वंचित नहीं होने दूँगा, किंतु इससे पहले मुझे ढेर सारे आवश्यक काम निपटाने हैं। इनसे निपटते ही मैं राष्ट्र को आप द्वारा दिए गए वचन की याद दिलाऊँगा। तब तक आपकी खोज हेतु मेरी शुभकामनायें। -मैंने अपना विकल्प खुला रखते हुए कहा।

-धन्यवाद! कहकर प्रधानमंत्री जी ने फोन रख दिया। मैं भी फोन रखकर निश्चित हो गया। सोचा चलो इस बार तो बच गया। आगे यदि ऐसी परिस्थिति आयी तो देखा जाएगा।

एक सप्ताह बीत गया। आठवें दिन अखबारों में ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का नाम आया। उनके नाम पर लगभग आम सहमति बन गयी थी।

मेरे पड़ोसी ने रात्रि-भ्रमण के समय कलाम साहब के राष्ट्रपति बनाये जाने पर मेरी प्रतिक्रिया जाननी

चाही। मैंने छूटते ही कहा- उन्हें राष्ट्रपति नहीं बनना चाहिए।

‘पर क्यों?’ -पड़ोसी ने कारण जानना चाहा।

क्योंकि वे एक वैज्ञानिक हैं। पाकिस्तानी मिसाइलों के जवाब में मिसाइलें बनाते हैं। गौरी, गजनवी और अब्दाली जैसी मिसाइलों के जवाब में तो उन्होंने पृथ्वी, आकाश और अग्नि बना दिया है, किंतु पाकिस्तान, यदि भविष्य में तैमूर और नादिरशाह लेकर आया तो जल और वायु कौन बनायेगा।

पाक मिसाइलें-आक्रमण के लिए हैं। वे आक्रमणकारियों के नाम पर बनायी गयी हैं। हमारी मिसाइलें रक्षात्मक तथा सर्जनात्मक हैं। अतः उनका नाम समस्त चराचर के जीवनदायी पंच तत्वों, क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर पर रखा जा रहा है। भारतीय मान्यता के आधार पर इन्हीं से तो हमारा अधम शरीर भी बना है।

कलाम साहब को अभी बहुत काम करने हैं। राष्ट्रपति बनकर वे, वह सब नहीं कर पाएँगे। आइंस्टाइन ने भी इजरायल का राष्ट्रपति बनना स्वीकार नहीं किया था। कलाम साहब को वैज्ञानिक का अनुसरण करना चाहिए न कि राजनीतिज्ञ का। -मैंने तर्क समाप्त करते हुए कहा।

पड़ोसी जी मौन थे। कलाम के प्रति उनके समर्थन को देखते हुए मैंने मजाक में कहा- भारत में सम्माननीय लोगों का नाम नहीं लिया जाता है। राष्ट्रपति देश का प्रथम नागरिक होता है। उनका भी नाम नहीं लिया जाना चाहिए। कलाम साहब का नाम इतना टेढ़ा है कि देश के अधिकांश लोग उनका पूरा नाम न तो जान पाएँगे और न ही उसे याद रख सकेंगे। आप भी तो उनका पूरा नाम नहीं जानते होंगे, यही हाल देश की अधिकांश जनसंख्या का है। इस तर्क के अनुसार उनका राष्ट्रपति बनना ठीक है। लोग चाहकर भी उनका नाम लेकर उनकी श्रान में गुस्ताखी नहीं कर सकेंगे। -मैंने हँसते हुए अपनी बात समाप्त की।

भ्रमण पूरा हो चुका था। हमलोग अपने-अपने घरों को चले गये।

पता नहीं मेरे तर्कों से प्रभावित होकर या अन्य किसी कारण से, दूसरे ही दिन वामपंथियों ने कलाम साहब को राष्ट्रपति बनाने का विरोध करने का निर्णय किया। बीस बार फोन करने के बाद उनसे बात हो पायी।

मैंने भी प्रधानमंत्री जी को अपनी राय से अवगत कराने का निर्णय किया। बीस बार फोन करने के बाद

उनसे बात हो पायी।

-सर दुनिया जानती है कि तैमूर और नादिरशाह, हमलावरों में गोरी, गजनवी और अब्दाली से अधिक खतरनाक थे। उनके कत्लेआम गजनवी और अब्दाली से अधिक खतरनाक थे। उनके कत्लेआम की कहानियाँ आज भी रोंगटे खड़े कर देती हैं। निश्चित ही अपने गोरी, गजनवी और अब्दाली का जवाब पाकर पाकिस्तान अब तैमूर और नादिरशाह लेकर आएगा। कलाम साहब को राष्ट्रपति बनाने के बाद हम पाकिस्तान द्वारा फैलायी गयी युद्ध की आग को शीतल करने के लिए जल और वायु कैसे पाएँगे।

आप भारतीय संस्कृति के पुरोधा हैं। कष्टया पंच तत्वों को पूरा हो लेने दीजिए। जब अग्नि, पृथ्वी और आकाश से जल और वायु मिलेंगे। तभी सरचना और सुरक्षा हेतु आवश्यक पंच तत्वों का संगठन पूरा होगा। वे शरीर ही नहीं राष्ट्र के निर्माण और रक्षा के लिए भी आवश्यक हैं। इनके पूरा हो जाने के बाद आप कलाम

साहब को राष्ट्रपति बना दीजिएगा। मैंने प्रधानमंत्री जी से अनुरोध किया।

-अविजित जी! मेरी राष्ट्रपति की कठिन खोज पूरी हुयी। जल और वायु के निर्माणकर्ता की खोज अब आप लोग करिए- उधर से उत्तर मिला।

प्रधानमंत्री जी ने टेलीफोन रख दिया। तब से दूसरे कलाम की खोज को लेकर मेरी नींद उड़ गयी है।

-तैमूर और नादिरशाह के मुकाबले जल और वायु को खड़ा कर सकने वाले कलाम की खोज! आपसे इस संबंध में सहयोग का निवेदन है। दूसरे कलाम की झलक पाते ही मुझे सूचित करने का कष्ट कर राष्ट्र और मेरे प्रति अपना कर्तव्य निभाएँ। मैं, इस संबंध आपके फोन का समय-असमय-कुसमय इंतजार करता रहूँगा। ❖

भूतपूर्व मुख्य परिचालन प्रबंधक

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

☎ संपर्क: 09794849749

हिंदी पुस्तकालयों का निरीक्षण प्रपत्र

- | | |
|---|--|
| 1. पुस्तकपाल का नाम और फोन नं.: | 18. इष्टू की गई पुस्तकों का दैनिक औसत: |
| 2. पुस्तकपाल अंशकालिक है या पूर्णकालिक: | 19. कितने सदस्यों ने पिछली तिमाही के दौरान पुस्तकें इष्टू कराईं: |
| 3. वाचनालय के लिए अलग से सुविधा: है / नहीं | 20. पुस्तकें इष्टू कराने वाले सदस्यों की दैनिक औसत सं.: |
| 4. फर्नीचर का विवरण: | 21. पिछली तिमाही के दौरान कौन-कौन सी पुस्तकें सबसे अधिक इष्टू की गईं: |
| 5. फर्नीचर पर्याप्त:आलमारियाँ- कुर्सियाँ- मेज- | 22. पत्र-पत्रिकाएँ इष्टू कराने वाले सदस्यों की दैनिक औसत सं.: |
| 6. मँगाई जाने वाली पत्र-पत्रिकाएँ दैनिक पत्र सहित | 23. पिछली तिमाही के दौरान कौन-कौन सी पत्रिकाएँ सबसे अधिक इष्टू की गईं: |
| 7. सफाई की नियमित व्यवस्था: है / नहीं | 24. किन-किन लेखकों की पुस्तकें सबसे अधिक इष्टू की गईं: |
| 8. पुस्तकालय खुलने का निर्धारित समय: है / नहीं | 25. पाठक मंच अर्थात् सदस्यों की पिछली बैठक कब हुई: |
| 9. क्या पुस्तकालय नियमित समय पर खोला जाता है: है/नहीं | 26. कोई अन्य टिप्पणी: |
| 10. उपस्थिति पंजिका: है / नहीं | |
| 11. दैनिक औसत उपस्थिति संख्या दें: | |
| 12. स्टॉक रजिस्टर अद्यतन: है / नहीं | |
| 13. स्टॉक रजिस्टर का सत्यापन अंतिम बार कब किया गया: है / नहीं | |
| 14. सदस्यों की सूची अद्यतन कब की गई: | |
| 15. पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के आदान-प्रदान का रजिस्टर: है / नहीं | |
| 16. क्या पुस्तकालय/वाचनालय में साहित्यकारों के चित्र लगाए गए हैं: है / नहीं | |
| 17. पिछली तिमाही के दौरान कुल कितनी पुस्तकें इष्टू की गईं: है / नहीं | |

हस्ताक्षर.....
निरीक्षणकर्ता अधिकारी का नाम.....
पदनाम.....
कार्यालय.....

◆ कविताएँ ◆

ई. गोविंद प्रसाद शुक्ल 'धुनी'

मर्मस्पर्शी हिंदी

हिंदी माँ के परम दुलारे,
आपसे मेरी विनती है।
बोली, भाषा, गणित की-
गणना से ही हिंदी गिनती॥1॥
हिंदी बनती हिंद की ताकत,
अभ्यागत की वाणी में।
हिंदी कभी न अंतर करती,
रंक रहे या रानी में॥2॥
हिंदी है संपर्क की भाषा,
हिंदी का उच्चार मधुर।
गीतों की रानी हिंदी है,
हिंदी में व्यवहार प्रचुर॥3॥
हिंदी फिल्में देखा करते,
सभी देश में बढ़-चढ़कर।
कृष्ण-राम के चरित में डूबे,
चित्र सजाए मढ़-मढ़कर॥4॥
हिंदी में संस्कार प्रबल है,
हिंदी का स्वीकार सबल।
हिंदी में जीने की रंगत,
सुर, लय, ताल से नेत्र सजल॥5॥
ऐसी मर्मस्पर्शी हिंदी में,
कर व्यवहार बढ़ाएँ पग।
हाथों-हाथ सभी हिंदी,
सोते से हम जाएँ जाग॥6॥
'धुनी' है परिचित नाम सभी का,
हिंदी का सम्मान करें।
हिंदी में सत्कार सभी का,
जन-मन का गुणगान करें॥7॥

हिंदी का उच्चारण मधुर

हिंदी बढ़ती जा रही, जर्मन व जापान।
अमरीका में पढ़ें सब, जानें चतुर सुजान॥1॥
नार्वे में हैं पढ़ रहे, हिंदी सब मन लाया।
आस्ट्रेलिया में सोचते, सबको देय पढ़ाया॥2॥
हिंदी उच्चारण मधुर, हिंदी में रसराज।
हिंदी-संस्कृत मिल बढ़ें, सुसंस्कृत बने समाज॥3॥
कुछ नकचढ़े दिखा रहे, बनावटी है भाव।
अंग्रेजी के लग रहे, कुछ अनबूझे दाँव॥4॥
फिर भी अपनी राह में, रोड़े पड़े अनेक।

हिंदी अपनी चाल में, चलती रहती देख॥5॥
'धुनी' निवेदन कर रहा, हिंदी का उत्थान।
ऐसा कुछ प्रयास हो, सिल पर बने निष्ठान॥6॥
वैज्ञानिक शब्दावली, तकनीकी साहित्य।
जोड़-जोड़कर ज्ञानकण, सादर करें प्रयुक्त॥7॥
जीवन के उत्पाद सब, उपयोगी कर लें।
कुछ मांगें अपने लिए, अपना सबको देय॥8॥
भारत में संपर्क का, हिंदी बनती राह।
गेय, द्वंद्व से युक्त है, सबकी बनती चाह॥9॥
यह (हिंदी) तो बड़े प्रेम की भाषा
यह तो बड़े प्रेम की भाषा,
यह तो बड़े स्नेह की भाषा,
यह भाषा हिंदी कहलाती॥1॥
बड़े बुजुर्ग मान हैं पाते,
सभी नागरिक ज्ञान हैं पाते,
यह बोली बन करके आती॥2॥
शुभ संगीत आन की भाषा,
बच्चों को आशीष की भाषा
मधु मिश्री सी यह घुल जाती॥3॥
सबके यह सम्मान की भाषा,
मेरे यह प्रणाम की भाषा
करने यह संपर्क सभी के घर है जाती॥4॥
मेरे यह उद्यान की भाषा
बोलचाल व ज्ञान की भाषा
यह सबको रहना सिखलाती॥5॥
संस्कृति व संस्कार की भाषा
बच्चों के दुलार की भाषा,
सत्य मार्ग की राह बताती॥6॥
सबके है यह प्यार की भाषा,
युवकों के व्यवहार की भाषा,
प्रियतम की पाती बन जाती॥7॥
'धुनी' ध्यान अध्यात्म की भाषा,
कर्मयोग-निष्काम की भाषा,
सबसे यह सम्मान है पाती॥8॥

सहा. मं. यां. इंजी. (पावर)

डीजल लॉबी, छपरा जं., छपरा-841301

पूर्वोत्तर रेलवे, वाराणसी मंडल

☎ संपर्क: 09771443276

◆ गज़लें ◆
प्रवीण कुमार सिंह

एक

आइने से शिकायत करोगे, चाहने वाला कोई न मिलेगा।
वक्त की मार तुम भी सहोगे, तब तुम्हारा कोई न मिलेगा।

सब भ्रम टूट जाएगा, तेरा तन्हा जब तुम गुजारा करोगे।
हसरतें सब रहेंगी अधूरी, तब दीवाना कोई न मिलेगा।

गम से बोझिल हुए ख्वाहिशों को बज़्म में ले अकेले फिरोगे।
अष्टक आँखों में तेरी रहेंगे, मिलने वाला कोई न मिलेगा।

अपने हाथों से चेहरा छुपाकर तुम अकेले ही आहें भरोगे।
बेबसी तुमको जीने न देगी, तब दुबारा कोई न मिलेगा।

दो

बहती हवाएँ खुशबू तेरी, दिल तक मेरे ले आती है।
मैं भी सावन हो जाता हूँ, याद तुम्हारी जब आती है।

जब आँखों से अष्टक निकलते घुमड़-घुमड़ बादल ज्यों बरसते।
आसमान में चमके बिजली, बिंदिया तेरी चमक जाती है।

बूँद-बूँद धरती को सींचे हरे-भरे सब बाग बगीचे
इठलाती-झरमाती जैसे, दर तक मेरे तू आती है।

तिमिर घना जब हो जाता है, आलम सारा सो जाता है।
दरवाजे पर होती दस्तक, मिलने जैसे तू आती है।

तितली और भौरें मँडराते, फूलों को हैं गीत सुनाते।
कुहूके कोयल, पिहूके मोर, गीत सुरीले तू गाती है।

जनसंपर्क कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
☎ संपर्क: 09935757146

◆ गज़लें ◆
सत्यनारायण त्रिपाठी

एक

गर तबीयत से तूने बनायी होती
तो आज ये और ही खुदाई होती।

न टूटते अगर प्यार के खिलौने दिल
तो जुदाई होती, न विदाई होती।

आज ये इंसान गर इंसान होता-
तो बुराई होती, न लड़ाई होती।

अगर रंग बदलते मुखौटे न दीखते
तो रुलाई होती, न हँसाई होती।

भला होता ये अजीब दुनिया तूने-
न बनाई होती, न दिखाई होती।

दो

नील गगन से बरसता छाबाब तू
इन चमकते सितारों की आब तू।

रूप की मिसाल कहाँ हकीकत में
खुली आँखों का नशीला ख्वाब तू।

छेड़ कर देखे तुझे कोई कहीं-
हर हाल है अब भी लाजवाब तू।

नूर से तेरे जहान रौशान है-
है इसी जमीन का आफताब तू।

खिले जलवे के हसीन गुलशान में
हुस्न तेरा कमल, मंदिर गुलाब तू।

नवलायन
बेतियाहाता, गोरखपुर (उ.प्र.)
☎ संपर्क: 9936293667

◆ कविताएँ ◆
अनिल कुमार दत्ता

हिंदी हिंदुस्तान

एक परी जो देवनगर से
उतरी इस सीवान में
वर्णों के आभूषण पहने
देवनागरी परिधान में
जिसके माथे पर सदियों से
अमर सुहाग की बिंदी है
भारत माता की वाणी वह
चिर सौभाग्यवती हिंदी है
गद्य-पद्य और कथा-काव्य
मेंहदी वाले इसके दो हाथ
पाँव महावर के मुहाबरे
सिर सिंदूरी विधाएँ साथ
चौपाई की चमक चूड़ियाँ
ष्ठलोक, सोरठे बाजूबंद
दोहों की पाजेब है रुनझुन
नथ-टीकों के सुंदर छंद
कानों में कंचन कुंडलियाँ
अधरों पर नौ रस की फुहार
गालों पर रूपक की लाली
अलकों पर ज्यों अलंकार
मुखरे पर सूरज की आभा
जूड़े में चंदा का गजरा
मांग सितारे टँके हजार
कर पूरे सोलह श्रृंगार
बहनें कन्नड़, तमिल, तेलुगू
असमी, गुजराती प्यारी है
बंगला, भोजपुरी, मैथिली
सिंधी, मराठी न्यारी है
पूरब से पश्चिम, उत्तर से
दक्षिण तक को गहती हिंदी
विविधता को एक सूत्र में
खूब पिरो कर रहती हिंदी
हिंदी खुद एक दर्शन है
हिंदी सकल विज्ञान है

हिंदी मूल है विकास का
हिंदी हिंदुस्तान है
माथे 'मानस' मुकुट मचलता
कर 'साखी' पद 'गीत गोविंद'
छात-छात मेरा नमन तुम्हें है
जय हिंदी.... जय हिंद....!

शुभागमन

नये सूरज का होने को है आगमन
मेरी माता तुझे मेरा छात-छात नमन
आने वाला है फिर से वतन में अमन
फिर मगन हो बहेगी ये गंगो जमन
हर तरफ होंगी खुशियाँ यहाँ नाचतीं
फिर से गुलजार होगा यह अपना चमन
मेरी माता तुझे मेरा....
कुछ कपूतों ने मिल कर है तुझ को छला
फिर सपूतों ने मर कर है टाली बला
आये तुझ पर कभी जो कोई आँच फिर
मेरे खूँ से तू माता करे आचमन
मेरी माता तुझे मेरा....
मिली अब तक आजादी अधूरी हमें
जान देकर भी पा लेनी पूरी हमें
वही जज़्बा अभी तक मेरे दिल में है
अब तलक भी है मुझ में वही बाँकपन
मेरी माता तुझे मेरा....
तुझ पर कुर्बान होना ही अपना धरम
गा रहा अब हर इक दिल वंदे मातरम
बन उठेगा मञ्जाल आरती का दीया
जब भी संकट में होगा यह अपना वतन
मेरी माता तुझे मेरा छात-छात नमन।

कार्याधी/विधि अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
☎ संपर्क: 09005092337

◆ कविताएँ ◆

तारकेष्टवर शर्मा 'विकास' की कविताएँ

कैसा नष्टा पकड़ लिया हूँ
कभी शब्द का वजन बढ़ाकर
कभी शब्द का वजन घटाकर।
नित शब्दों से खेला करता,
गीत-कवित्त गज़ल बनाकर।
कैसा नष्टा पकड़ लिया हूँ?
कैसे बताऊँ जकड़ लिया हूँ?
कैसा नष्टा....

श्रीतलता को पाने खातिर
तप्त-मार्ग पर चलने खातिर
करते हुए कठिन परिश्रम
कितने जूते बदल चुका हूँ
कैसा नष्टा....

हर अंक की दायीं ओर
कितने शून्य बिठा चुका हूँ
ढाई आखर प्रेम का पढ़कर
जाने कितना तड़प लिया हूँ
कैसा नष्टा....

पता नहीं डेसी, मिली,
किलो, मेगा किसको कहते।
गुणा-भाग की बातें छोड़ें
जोड़-घटाव भी पता नहीं है।
पर खुद मैं कितने बच्चों को
उच्च गणित तक पढ़ा चुका हूँ
कैसा नष्टा....

अष्टव-शक्ति में, या न्यूटन में
मेरी ताकत कितनी होगी।
गर कोई वैज्ञानिक हो तो
उसको भी मैं पढ़ा चुका हूँ।
पर अब तक अनपढ़ हूँ भैया,
जान न पाया मूक की भाषा
आँखों की भाषा से आहत,
किसके दिल में समा चुका हूँ?
कैसा नष्टा....

वही सुनाए, वही बताए,
अपनी कहानी, अपना गीत।
अपने दिल के दोनों बल्बों का,
जिगर में वोल्टेज बढ़ा चुका हूँ।
सावन के अंधे को कब का,
प्रेम-पाठ मैं पढ़ा चुका हूँ।
कैसा नष्टा पकड़ लिया हूँ।

गज़ल

असल को सदा मैं असल ही कहूँगा
जो करते नकल हैं, नकलची कहूँगा
जो बढ़-चढ़के कहते कि तू है या मैं हूँ
तो ऐसों को मैं भीगी बिल्ली कहूँगा।
करूँगा खुशामद खिलाफत समय पर
नज़र भाँप कर मैं फिदाई कहूँगा
फिरासत इसी में कि सबकी सुनूँ मैं
नफ़ीरी जो होंगे, नफ़ीरी कहूँगा
बजाना जिन्हें जब नगाड़ा न आए
तो ऐसों का क्या मैं तबलची कहूँगा
किसी को खटाई, किसी को मिठाई
ढीठों के बूतों को ढिठाई कहूँगा
कटाए जवानी जो घी-दूध पीके
ऐसों को क्या मैं घर-जमाई कहूँगा
मैं करता रहूँगा फ़ऊलुन फ़ऊलुन
गज़ल-गीत-कविता-रुबाई कहूँगा।

बाबा विकास के हाय-हायकु

एक

गीतों के कवि
लिख रहे हायकु
बाप रे बाप।

दो

जो हैं छा़इर
जो कुछ भी कहते
वही ग़ज़ल?

तीन

तीन-पाँच में
जो पड़े रहते हैं
क्या सुधरेंगे?

चार

पांडव के पाँच
तो साँच को आँच क्यों
बोलो पांचाली।

पाँच

खेल-खेल में
ग़ज़ल-हज़ल क्या
कविताई है?

कोटिष्ठा: प्रणाम

नमन है उन कवियों को
जो अपने भावों, विचारों और तनावों को
कागज पर शब्दबद्ध कर
उतारते हैं स्वर्णिम कविता।
कभी दौड़ लगाते हैं
साहित्यिक-मैराथन में
दुरुह.... पथरीले.... ऊबड़-खाबड़....
सँकरीली गली से,
तो कभी गगनचुंबी टीले के
आजू-बाजू से
बिखेरते हैं ज्योतिपुंज।
कुछ भरते हैं....
कल्पना की उड़ान
तो कुछ....
मात्र डोरा, पतंग और लटाय से
पतंगबाजी की परीक्षा
दे बैठते हैं
गगनचुंबी दूसरे पतंग को
बिना मंझा लगाए काटते हुए।
कुछ कविता की विधा में
अनजान भी हैं
पर पहचान बनाना चाहते हैं
सर्वदा एकाग्रता का मूर्तरूप देकर
एक नई कविता देते हुए
गतिमान लिए क्रम में।
लेकिन कविता के संतप्त घोल में
कूटकर, पीसकर और छानकर
कोई-कोई ही
मात्रा के अनुरूप
घोलक और घुल्य के नाम पर
बना पाता है रसना।
उन कवियों को भी यथा उचित श्रिष्टाचार
जो सड़कों एवं चौराहों पर
गुज़लों के छंद, टुक व टेक को
किंचित तोड़-मरोड़कर
बना लेते हैं
कुंकुम के नाम पर कविता।
लेकिन सद्भावना के नाम पर
सीमित कवि ही बचे हैं
जो मन में प्रेम, सौंदर्य
और प्रकृति के त्रिकोण-मिलन से
लगातार नीरव कवि की भाँति

मस्तियों में निराला बनकर
महादेवी की कक्षा से
चिंतन-मनन और मंथन से
समता का भाषा दे
बना पाते हैं....
हिंदी समकालीन कविता।
ऐसे कवियों को कोटिष्ठा: प्रणाम।
यह फिर भी कविता नहीं है
जिसे कविता के पंडित
नहीं मानते कविता
कभी-कभी वही
हो जाती है कविता।
कविता में नहीं है काफी
सिर्फ कवि के हृदयोद्गार
लय-यति-गति में
साजो-सिंगार
भाषाई चमत्कार।
कविता में यदि
कभी उतरे भड़ास
तो...
जिसे न कहते हैं कविता
वह भी हो जाती है
सदाबहार-उत्कृष्ट कविता।
क्या पढ़ें हैं आप?
नर-निराला-नाहर की,
छामशेर बहादुर की,
.... और
बाबा नागार्जुन की
वैसी कविताएँ
जिसमें हैं हुंकार के साथ
ललकार, व्यभिचार पर दुत्कार
और जब हुए हैं.... ये मर्माहत
तो निकली हैं....
दिल की पीड़ाएँ,
बरसाए हैं अंगार
और उगले हैं भड़ास।
कौन कहता है?
कविता में न उतरे
कवि की भड़ास
न बरसें अंगार।

कार्यालय मुख्य कार्य प्रबंधक, खड़गपुर कारखाना
दक्षिण पूर्व रेलवे, खड़गपुर-721301(प.बं.)

☎ संपर्क: 09933615074

◆ कविताएँ ◆
दीनानाथ तिवारी

गीत

कालजयी भारत के प्रहरी
अमर वीर बलिदानी
हम हैं हिंदुस्तानी
सत्य अहिंसा धर्म हमारा
करें शक्ति का अर्चन
शौर्य वंदना भक्ति हमारी
राष्ट्र धर्म देवार्चन
सुनो हवा से, गुनगुन गाती
हम शूरों की शौर्य कहानी
हम हैं....
बाधाओं तूफानों से
हँस, हाथ मिलाया करते
अंधकार का वक्ष चीर
नव सूर्य उगाया करते
सबसे पहले जगकर हमने
की सबकी अगुवानी
हम हैं....
आतंकी क्या? क्रूर काल से
दो-दो हाथ हैं करते
अमन राग गाते हँस-हँस
हम अंगारों पर चलते
संघर्षों से व्योम कँपाते
हम ऐसे हैं तूफानी
हम हैं....
क्रूर 'कंस' के लिए 'कष्ट' हम
'रावण' हित 'श्रीराम'
दानवता की लंक फूँकने
बन जाते हनुमान
दनुज विहीन नहीं करने को
फिर हमने है ठानी
हम हैं....
'विष्टव श्रान्ति' हित भोले-भाले
विषपायी शिवश्रान्कर
मातश्रूमि की आन-बान पर
बन जाते प्रलयंकर
भष्मासुर सा भष्म हुआ
जिसने भी भष्मटि तानी
हम हैं....
पाँव हमारे कभी न बढ़ते
अन्यायों की ओर
मानवता संयम संस्कृति की

बँधे हुए हम डोर
'सत्यमेव जयते' जीवे
दुनिया को क्या हैरानी
हम हैं....
कोटि नमन निज मातश्रूमि को
जहाँ जन्म लिया है
बड़े हुए जिसका अन्न खाकर
क्षीर समीर पिया है
उसके उस अनमोल दूध की
लाज रखने को ठानी
हम हैं हिंदुस्तानी

भारत वंदना

जय जय भारत देश
जाति-पाँति धर्मों से न्यारा
सत्य धुला संकल्प सँवारा
अपना प्यारा देश
जय जय भारत देश
मलय पवन नित
चँवर डोलाये
सागर चरन पखारे
प्रकृति नित नवरंगों से
तेरा रूप सँवारे
कुंकुम रोली सजी दिशाये
कचनारी परिवेष्ट
जय जय भारत देश
गंगा-यमुना श्रुचि सुपुत्रियाँ
पावन पिता हिमालय
रोम-रोम 'रामायण' 'गीता'
अंग-अंग देवालय
सत्य शौर्य का मंत्र गूँजता
राम-कष्ट का देश
जय जय भारत देश
षट् ऋतुएँ अभिषेक करें नित
चंद्र किरण नहलाये
सूर्य चंद्रमा करें आरती
चंदन गंध लुटाये
नव वसंत मधु घट छलकाये
तू अनुपम सर्वेष्ट
जय जय भारत देश

1/8, लेबर कालोनी
मोहदीपुर, गोरखपुर

◆ कविताएँ ◆
चाँद 'छेरी' के मुक्तक

1

मैं गीता बाईबिल कुरआन रखता हूँ।
सभी धर्मों का मैं सम्मान रखता हूँ।
ये मेरे पुरखों की जागीर है लोगों।
मैं अपने दिल में हिंदुस्तान रखता हूँ।

2

ये तुलसी, ये मीरा, ये रसखान की मिट्टी है।
ये गाँधी, ये बिस्मिल के बलिदान की मिट्टी है।
यहीं गूँजती हैं सदाएँ, अमन चैन की।
यही मेरे प्यारे हिंदुस्तान की मिट्टी है।

3

मैं ही गंगा, मैं ही जमना, मैं ही चंबल का पानी हूँ।
मैं ही दुर्गा, मैं ही रजिया, मैं ही झाँसी की रानी हूँ।
मेरे सीने में रहती है नमाजें और पूजा भी।
मेरी भाषा तो हिंदी है, मैं तो हिंदुस्तानी हूँ।

4

नहीं तू इस कदर धनवान बाबा।
खरीदे जो मेरा ईमान बाबा।
ये छोड़ अब मंदिरों मस्जिद के झगड़े।
अरे छोड़ एकता की तान बाबा।

5

नादान न बन कोई तेरा यार नहीं है।
जुल्मत में तो साया भी वफादार नहीं है।
वो सिख है, ना ईसाई, ना हिंदु ना मुस्लिम।
जिस धर्म में इंसान का किरदार नहीं है।

6

हम कभी मिट्टी से बगावत नहीं करते।
हम कभी लाशों की तिजारात नहीं करते।
हम वतन के खातिर बहा देते हैं अपना खून।
रहबरो जैसी हम सियासत नहीं करते।

7

जब परिंदा उड़ान पर होगा।
तीर कोई कमान पर होगा।
देख की एकता का सूर एक दिन।
देखना हर ज़बान पर होगा।

8

रहनुमा थे जो मदारी हो गये।
लुट गये राही भिखारी हो गये।
एकता की नींव के दुश्मन सभी।
फावड़े-गैती, तगारी हो गये।

9

लोग किसको ताज पहनाने चले।
हाथ अपने खुद ही बँधवाने चले।
राम तेरी सरज़मी पर लोग अब।
नफ़रतों की आग फैलाने चले।

10

आतंक देश से जो मिटाया न जायेगा।
बरबादियों से इसको बचाया न जायेगा।
बिगड़े हों चाहे कितने ही हालात दोस्तों।
उम्मीद का चिराग़ बुझाया न जायेगा।

11

इरादे की अटल चट्टान देगा।
हमें खुद हौसला तूफान देगा।
उसे हम अमन का पैग़ाम देंगे।
हमें जो जंग का मैदान देगा।

12

तू न अमन का पियाला दे हमें।
सिर्फ़ रोटी का निवाला दे हमें।
सीख पाएँ हम जहाँ इंसानियत।
कोई ऐसी पाठशाला दे हमें।

13

वहाँ पर अमन क्या होगा, सुकून की बात क्या होगी।
जहाँ बारिष्ठा लहू की हो वहाँ बरसात क्या होगी।
गरीबों को मयस्सर अब न रोटी है न कपड़ा है।
ऐ आजादी तेरी इससे बड़ी सौगात क्या होगी।

14

आज का राँझा हीर बेच गया।
हीरे जैसा ज़मीर बेच गया।
इक कबाड़ी को वो निरा जाहिल।
मीर- तुलसी- कबीर बेच गया।

निवास: के-30, आई.पी.आई.ए.
रोड नं. 1, कोटा-324005(राज.)

☎ संपर्क: 09829098530

◆ कविताएँ ◆

उमेश कुमार पटेल 'श्रीष्ठा'

बिकने की इच्छा
अपनी ओर
उठती हुई नज़र
एक आस बाँधती
अपने बिकने की
उम्मीद में।
किंतु....
आँखें जब उसके
जीर्ण-छीर्ण
कष्टाकाया को
पलभर देख
आगे बढ़ जातीं
तो-
निराशा पुनः
आ घेरती
जो-
पिछले कई दिनों से
साथ थी।
बुखार की तपिष्ठा
अब भी है यथावत
बदन का पोर-पोर
दुख रहा
आँखों के आगे
अंधेरा छाने सा लगता
उठने की
हिम्मत नहीं
सोचता कि
आज भी आराम होगा
परंतु
भूखे पेट आराम....
भला कैसे हो सकेगा?
छोटे का-
बीमार चेहरा,
बड़े का-
कष्टाकाय
नंगा बदन,
पत्नी की-
चीथड़ों से झाँकते

सुकोमल अंगों को ढकती
आते समय
न चाहते हुए भी
कातर और प्रत्याशा भरी
सूनी आँखें,
तीन दिन से-
बूझा चूल्हा,
सब कुछ....
आँखों के सामने
आते ही
उसे रोककर
अपने
बिकने की इच्छा को
दबड़ करते हैं।
आया मौसम
आया मौसम कैसा सुहाना
हर कोई बनके फिरता दीवाना।
धरती का कण-कण खुशी से हर्षाये
जीवन की बगिया में बहार छाये।
हर कली फूल बनके महके चहुँओर,
हुलस उठे मस्ती से मन का पोर-पोर।
टेसू के फूल से रंग उठे जमाना!!

आया मौसम....

जाति-पाँति, भेद-भाव की गिरी दीवार
राग-द्वेष, ऊँच-नीच सभी हुए बेकार।
हिंदू मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी हुए समान,
हाथों में हाथ लिए करते एकता का ऐलान।
दिखे समानता का कैसा नज़राना!!

आया मौसम....

बरसे प्यार असीम गगन से बरसे अमल धारा
सराबोर हों प्रेम के रंग में फैले भाई-चारा।
गली-गली धूम मचे आयी है होली
घूँघट की ओट लिए बुढ़िया भी करे ठिठोली।
प्रेम रंग 'श्रीष्ठा' सबके चेहरे पर लगाना!!
आया मौसम कैसा सुहाना।

ग्राम-घोठही, करमहा

महाराजगंज-273303(उ.प्र.)

☎ संपर्क: 09450882123

◆ गतिविधियाँ ◆

मुख्यालय

महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र की अध्यक्षता में 23.07.15 को क्षेत्रीय रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, मंडलों एवं कारखानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इस अवसर पर वर्ष 2014 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने हेतु इंजीनियरिंग विभाग, लखनऊ मंडल एवं यांत्रिक कारखाना/गोरखपुर को क्रमशः ₹ 9000/-, ₹ 6000/-, ₹ 4000/- का सामूहिक पुरस्कार प्रदान किया गया।

महाप्रबंधक श्री राजीव मिश्र की अध्यक्षता में 21.07.15 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें गोरखपुर नगर स्थित विभिन्न केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों एवं निगमों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई।

मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री ओ.पी.अग्रवाल की अध्यक्षता में 10.07.15 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें रेलवे के विभिन्न विभागों, विभागेतर इकाइयों, कारखानों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा की गई। इस अवसर पर अंतर्विभागीय राजभाषा चल ट्राफी भंडार विभाग तथा निर्माण संगठन को प्रदान किया गया।

मुख्यालय के वाणिज्य, परिचालन, भंडार, संरक्षा, यांत्रिक व सिगनल विभागों में समीक्षा बैठकें तथा निर्माण संगठन व चिकित्सालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया। साथ ही 23.06.15 को इंजीनियरिंग विभाग द्वारा हिंदी कार्यशाला व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कंप्यूटर में हिंदी यूनिकोड सक्रिय करने और उन पर सरलतापूर्वक काम करने के बारे में जानकारी दी गई। 24.06.15 को सिगनल विभाग द्वारा 'वेबसाइट के अनुरक्षण' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

14.08.15 को निर्माण संगठन में गोस्वामी तुलसीदास जी की जयंती व यूनिकोड की सक्रियता विषय पर विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र में 04.07.15 को ब्रेक बाइंडिंग के कारण एवं निवारण, 25.07.15 को डब्ल्यूडीजी-4 एवं डब्ल्यूडीपी-4 लोको में लगे सेप्टी डिवाइस विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

11.06.15 को यांत्रिक कारखाना में महान क्रांतिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल की जयंती मनाई गई।

श्री वी. डुंगडुंग, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा 10.08.15 को छपरा जं. स्थित विभिन्न कार्यालयों का निरीक्षण किया गया।

श्री ध्रुव कुमार श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी द्वारा 01.07.15 को गोमतीनगर स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालय एवं 02.07.15 को आरक्षण कार्यालय एवं मुख्य चिकित्सालय अधीक्षक/बादशाहनगर व लखनऊ मंडल स्थित कार्यालय व हिंदी ग्रंथालय का निरीक्षण किया गया। साथ ही 04.09.15 को पीपीगंज एवं मानीराम स्टेशनों का निरीक्षण किया गया।

इज्जतनगर

02.06.15 को डीजल श्रेड/इज्जतनगर, 11.06.15 को काठगोदाम एवं 15.06.15 को पीलीभीत स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 'अंग्रेजी के सभी पत्रों का उत्तर हिंदी में देना', 'राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3)' एवं 'राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987' विषय पर विस्तृत जानकारी दी गई। 07.07.15 को कासगंज स्टेशन पर, 11.07.15 को काशीपुर स्टेशन पर, 20.07.15 को मथुरा छावनी स्टेशन पर एवं 23.07.15 को बरेली सिटी स्टेशन पर कर्मचारियों के लाभार्थ हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा नियम, अधिनियम एवं संवैधानिक प्रावधानों की जानकारी दी गई।

यांत्रिक कारखाना, इज्जतनगर में 02.07.15 को मुख्य कारखाना प्रबंधक श्री ए.सी.वेसरा की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

सचल प्रशिक्षण यान के द्वारा 16.07.15 को डीजल लॉबी, पीलीभीत में फायर फाइटिंग तथा स्पैड विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

02.06.15 को डीजल श्रेड/इज्जतनगर, 11.06.15 को काठगोदाम, 15.06.15 को पीलीभीत एवं बदाऊँ, 07.07.15 को कासगंज, 11.07.15 को काशीपुर, 20.07.15 को मथुरा छावनी, 23.07.15 को बरेली सिटी स्टेशनों की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री चंद्र मोहन जिंदल ने 31.07.15 को कासगंज एवं हाथरस सिटी स्टेशनों का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी निरीक्षण के लिए निर्धारित चेक लिस्ट पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की भी जाँच की।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री संजीव नंदन ने 02.07.15 को लालकुआ, 07.07.15 को कासगंज स्टेशन पर किलाबंदी टिकट जाँच, 13.07.15 को मंडल कार्मिक कार्यालय, 14.07.15 को डीजल श्रेड/इज्जतनगर, 15.07.15 को फर्रुखाबाद स्टेशन किलाबंदी टिकट जाँच, 31.07.15 को कासगंज एवं मथुरा छावनी स्थित रनिंग रूम का निरीक्षण किया। उक्त निरीक्षणों के दौरान निर्धारित चेक लिस्ट

पर हिंदी प्रयोग की जाँच की एवं उक्त निरीक्षणों में हिंदी पैरा को भी सम्मिलित किया।

राजभाषा अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार द्वारा 07.07.15 को कासगंज स्थित विभिन्न कार्यालयों, 11.07.15 को काशीपुर स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों एवं 20.07.15 को मथुरा छावनी स्थित सहा. मंडल इंजी. कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का गहन निरीक्षण किया गया।

लखनऊ

16.06.15 को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के तत्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक में पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल कार्यालय को हिंदी का अधिकाधिक एवं प्रशंसनीय प्रयोग के साथ ही त्रैमासिक पत्रिका 'प्रगति' के नियमित प्रकाशन के लिए द्वितीय पुरस्कार के रूप में शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

18.06.15 को लखनऊ मंडल के मैलानी स्टेशन पर महान साहित्यकार बाबू देवकीनंदन खत्री जी की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर श्री श्रीकांत शुक्ल, पूर्व प्राचार्य, बलदेव वैदिक इंटर कालेज, पलिया ने खत्री जी के व्यक्तित्व व कक्षित्व पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर 'रेलपथ अनुरक्षण' विषय पर एक तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री वी.एन.पांडेय, सहा. मंडल इंजीनियर/मैलानी ने व्याख्यान दिया।

19.06.15 को लखीमपुर स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों को सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया गया।

22.07.15 को लखनऊ मंडल के सीतापुर स्टेशन पर महान साहित्यकार कृष्ण बिहारी मिश्र जी की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर आर.एम.पी.पी.जी. कालेज/सीतापुर के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डा. अरुण त्रिवेदी ने श्री मिश्र जी के व्यक्तित्व व कक्षित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला। साथ ही 'रेलवे ट्रैक की पेट्रोलिंग' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री सुरेंद्र कुमार, सहा. मंडल इंजीनियर/सीतापुर ने ट्रैक पेट्रोलिंग की महत्ता पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

29.07.15 को पॉलीक्लिनिक ऐंठबाग तथा 30.07.15 को लखनऊ जं. स्टेशन पर कर्मचारियों के लाभार्थ हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कर्मचारियों को सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया।

19.06.15 को लखीमपुर, 18.06.15 को मैलानी, 27.06.15 को बलरामपुर, 26.06.15 को आनंदनगर, 23.06.15

को बहराइच व नानपारा, 25.06.15 को नौतनवा, 08.07.15 को बादशाहनगर, 22.07.15 को सीतापुर, 23.07.15 को गोरखपुर पश्चिम, 29.07.15 को ऐंठबाग एवं 30.07.15 को लखनऊ जं. स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुराधि श्री एस.के. सपरा ने 04.06.15 को बहराइच स्टेशन, 25.06.15 को डीजल छेड व संयुक्त कार्यालय, गोंडा स्थित हिंदी ग्रंथालय का निरीक्षण किया।

राजभाषा अधिकारी श्री छैलेष्ठ कुमार मिश्र द्वारा 18.06.15 को मैलानी स्टेशन स्थित हिंदी पुस्तकालय, टिकट घर/ पार्सल कार्यालय, 19.06.15 को लखीमपुर स्टेशन स्थित से. इ. कार्यालय व हिंदी पुस्तकालय का गहन निरीक्षण किया गया।

वाराणसी

मंडल रेल प्रबंधक श्री एस. के. कृष्णप की अध्यक्षता में 24.06.15 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों तथा प्रशिक्षण केंद्र में हिंदी कार्यों के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई।

08.06.15 को गोरखपुर पूर्व, 18.06.15 को मंडल प्रशिक्ष. केंद्र, मंडुवाडीह, 20.06.15 को देवरिया सदर, 26.06.15 को कप्तानगंज, 29.06.15 को सीवान जं., 03.07.15 को मंडुवाडीह, 24.07.15 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र मंडुवाडीह, 31.07.15 को मऊ जं. पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा नीति एवं पुरस्कार योजनाओं के विषय में जानकारी दी गई।

29.07.15 को मंडल समाधि प्रशिक्षण केंद्र, मंडुवाडीह में 'फायर फाइटिंग तथा ब्रेक बाइंडिंग' विषय पर व्याख्यान दिया गया।

10.06.15 को इलाहाबाद सिटी, 29.06.15 को सीवान, 09.06.15 को छपरा, 08.06.15 को के.या.नि./गोरखपुर, 26.06.15 को कप्तानगंज, 20.06.15 को देवरिया सदर, 11.06.15 को औड़िहार, 03.07.15 को मंडुवाडीह, 10.07.15 को वाराणसी सिटी, 16.07.15 को गाजीपुर सिटी, 24.07.15 को आजमगढ़ तथा 31.07.15 को मऊ जं. स्टेशनों की स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा 29.06.15 को मंडल स्थित सी.से.इं./विद्युत ऊर्जा कार्यालय, 25.07.15 को सरायरानी, 30.07.15 को जखनियाँ तथा 31.07.15 को मऊ जं. में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रतियोगिताएँ/पुरस्कार/प्रोत्साहन योजनाएँ

1. हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

ये तीनों अलग-अलग प्रतियोगिताएँ होती हैं। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया जाता है और योग्यता क्रम में तीन कर्मचारियों को सांवना (प्रोत्साहन) पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत निर्धारित पुरस्कार राशि का एक चौथाई पुस्तक के रूप में और शेष नकद देने का प्रावधान है। पुरस्कार राशि निम्नवत है-

	क्षेत्रीय स्तर	अखिल रेल स्तर
प्रथम पुरस्कार	₹ 2000/-	₹ 3000/-
द्वितीय पुरस्कार	₹ 1600/-	₹ 2500/-
तृतीय पुरस्कार	₹ 1200/-	₹ 2000/-
सांवना/प्रोत्साहन पुरस्कार	₹ 800/-(तीन)	₹ 1500/-(पाँच)

- इन तीनों प्रतियोगिताओं में हिंदी और अहिंदी भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकेंगे। केवल 'ग' क्षेत्र के अहिंदी भाषी प्रतियोगियों को प्राप्तांक के 5 प्रतिशत अंक अधिमान अंक के रूप में दिए जाएँगे।
- टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में कार्यालयों में नित किए जाने वाले कार्यों जैसे- पत्राचार के मसौदे, टिप्पणी की प्रस्तुति, पदनाम संक्षिप्तियाँ, अंग्रेजी/हिंदी शब्दों के पर्याय, अनुवाद आदि पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

2. रेलवे बोर्ड की व्यक्तिगत नकद पुरस्कार

अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपना संपूर्ण कार्यालयी कार्य श्रुत-प्रतिश्रुत हिंदी में ही निष्पादित करने पर उनका नाम विभागाध्यक्ष द्वारा रेलवे बोर्ड स्तर पर पुरस्कार हेतु अनुशंसित किया जाता है। उन्हें अखिल रेल स्तर पर ₹ 1500/- का नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इस प्रयोजनार्थ प्रत्येक रेलवे का कोटा निर्धारित है। पूर्वोत्तर रेल के लिए कुल 4 (चार) पुरस्कार प्रत्येक मंडल से एक-एक एवं मुख्यालय से एक अधिकारी/कर्मचारी को दिया जाता है।

3. सरकारी कामकाज (टिप्पण आलेखन) मूलरूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना (20/10 हजार शब्दों वाली योजना)

इस योजना के अंतर्गत रेल कार्यालयों में हिंदी और हिंदीतर अधिकारियों/कर्मचारियों को क्रमशः 20/10 हजार शब्द हिंदी में फाइलों पर टिप्पणी, प्रारूप आदि के रूप में लिखने के आधार पर नकद पुरस्कार की व्यवस्था है। इस योजना के अंतर्गत केवल उन्हीं अधिकारियों/कर्मचारियों के नामों पर विचार किया जाता है जो रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रपत्र पर अपना रिकार्ड रखते हैं। जो कर्मचारी वर्ष में 20/10 हजार शब्दों से अधिक हिंदी में लिखते हैं उन्हें निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किया जाता है-

	अधीनस्थ कार्यालयों के लिए	मंत्रालय/विभाग के लिए
प्रथम पुरस्कार(दो)	₹ 1600/-	₹ 2000/-
द्वितीय पुरस्कार(तीन)	₹ 800/-	₹ 1200/-
तृतीय पुरस्कार(पाँच)	₹ 600/-	₹ 800/-

4. अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने संबंधी पुरस्कार योजना

1) रेल कार्यालयों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अधिकारियों को हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इस योजना को बोर्ड द्वारा लागू किया गया है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष प्रत्येक रेल कार्यालय से रेल अधिकारियों को ₹ 2000-2000/- का नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

2) इस योजना की अवधि कैलेंडर वर्ष है।

3) योजना में भाग लेने वाले अधिकारी बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रपत्र में रिकार्ड रखेंगे। यह रिकार्ड उनके स्टेनो/निजी सहायक भी रख सकते हैं।

4) केवल वे अधिकारी इस पुरस्कार के पात्र होंगे जो वर्ष कम से कम 20,000 शब्द डिक्टेशन देंगे। अहिंदी भाषी अधिकारी के लिए यह मात्र 10,000 शब्दों की प्रतिवर्ष होगी।

5. सामूहिक नकद पुरस्कार योजना

रेलवे बोर्ड द्वारा रेल कार्यालयों में हिंदी के सर्वाधिक प्रयोग के लिए सामूहिक पुरस्कार योजना प्रचारित की गई है, जिसके अंतर्गत प्रतिवर्ष श्रेष्ठ प्रथम 03 स्थान पाने वाले विभाग/मंडल/कारखाना को निम्न पुरस्कार प्रदान किया जाता है:

	पुरस्कार राशि एवं प्राप्तकर्ताओं की संख्या
प्रथम पुरस्कार (विभाग के लिए)	₹9000 x 6
द्वितीय पुरस्कार (मंडल के लिए)	₹6000 x 5
तृतीय पुरस्कार (कारखाने के लिए)	₹4000 x 5

6. रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता

- 1) इस प्रतियोगिता में सभी राजपत्रित अधिकारी/अराजपत्रित कर्मचारी भाग ले सकते हैं।
- 2) निबंध 'रेल कार्य संचलन एवं प्रबंधन' से संबंधित किसी विषय पर होना चाहिए और 5000 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।
- 3) निबंध प्रत्येक वर्ष दिसंबर माह में कार्मिकों से आमंत्रित किया जाता है।
- 4) इसमें राजपत्रित के लिए 02 एवं अराजपत्रित के लिए 02 पुरस्कार दिए जाते हैं-

	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार
राजपत्रित अधिकारी	₹ 6000/-	₹ 4000/-
अराजपत्रित कर्मचारी	₹ 6000/-	₹ 4000/-

7. मौलिक लेखन पुरस्कार योजना

7.1 इंदिरा गाँधी पुरस्कार योजना-इस योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार सहित बैंकों, सरकारी उपक्रमों, वित्तीय संस्थानों, विष्वविद्यालयों, शैक्षिक व प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत कार्मिकों द्वारा हिंदी में लिखी गई मौलिक पुस्तकों के लेखन के लिए इंदिरा गाँधी पुरस्कार दिए जाते हैं। अनूदित पुस्तकें/ पूर्व पुरस्कृत पुस्तकें स्वीकार्य/पात्र नहीं होंगी।

पुरस्कार	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार	₹ 60,000/-
द्वितीय पुरस्कार	₹ 45,000/-
तृतीय पुरस्कार	₹ 30,000/-
प्रोत्साहन पुरस्कार	₹ 15,000/-

7.2 मैथिलीछरण गुप्त पुरस्कार योजना

यह पुरस्कार मौलिक रूप से काव्य/गजल संग्रह के लिखने के लिए प्रदान किया जाता है। इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित पुरस्कार रेलवे बोर्ड द्वारा प्रदान किया जाता है-

पुरस्कार	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार	₹15,000/-
द्वितीय पुरस्कार	₹ 7,000/-
तृतीय पुरस्कार	₹ 3,300/-

इस योजना के अंतर्गत पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए।

7.3 प्रेमचंद पुरस्कार योजना

कथा संग्रह एवं उपन्यास के लिए प्रेमचंद पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार के अंतर्गत निम्नलिखित पुरस्कार बोर्ड द्वारा प्रदान किया जाता है-

पुरस्कार	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार	₹15,000/-
द्वितीय पुरस्कार	₹ 7,000/-
तृतीय पुरस्कार	₹ 3,300/-

इस योजना के अंतर्गत पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए।

7.4 लालबहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना

इस योजना के अंतर्गत रेलों से संबंधित तकनीकी विषयों पर मूल रूप से हिंदी में पुस्तक लिखने पर रेलवे बोर्ड द्वारा निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किया जाता है-

पुरस्कार	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार	₹15,000/-
द्वितीय पुरस्कार	₹ 7,000/-
तृतीय पुरस्कार	₹ 3,300/-

इस योजना के अंतर्गत पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए।

7.5 रेल यात्रा-वर्षांत पुरस्कार

रेलकर्मियों सहित जनसाधारण के रेल यात्रा संबंधी अनुभव प्राप्त करने और उन अनुभवों के आधार पर रेलों द्वारा अपनी छवि को बेहतर बनाने के उद्देश्य से, रेल मंत्रालय की रेल यात्रा-वर्षांतों पर पुरस्कार योजना अखिल भारतीय स्तर पर प्रचलित है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक वर्ष सर्वोत्तम प्रथम तीन वर्षांतों के विजेता को निम्नलिखित नकद पुरस्कार दिए जाने का प्रावधान है-

पुरस्कार	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार	₹ 4,000/-
द्वितीय पुरस्कार	₹ 3,000/-
तृतीय पुरस्कार	₹ 2,000/-

8. अधिकारियों को हिंदी पदक से सम्मानित करना

क्षेत्रीय रेलवे में कैलेंडर वर्ष के दौरान महाप्रबंधक तथा वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड या इससे ऊपर के अधिकारियों को जिनका अपने कार्यक्षेत्र में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने में उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय योगदान रहा हो तथा जो स्वयं तो छात-प्रतिष्ठात हिंदी में कार्य करते हों साथ ही अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करते हों, उन्हें क्रमशः 'कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक' तथा 'रेल मंत्री राजभाषा पदक' से सम्मानित किया जाता है।

9. राजभाषा शील्ड/ट्राफी

राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड द्वारा सर्वाधिक हिंदी का प्रयोग करने वाले 'क' 'ख' क्षेत्र के क्षेत्रीय रेल को एवं मंडल को रेलमंत्री राजभाषा शील्ड/ट्राफी प्रदान किया जाता है।

ये पुरस्कार आदर्श रेल, आदर्श मंडल, आदर्श स्टेशन एवं आदर्श कारखाने के लिए दिए जाते हैं।

10. हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रोत्साहन भत्ता

ऐसे अंग्रेजी के आशुलिपिकों व टंककों को जो

अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी में भी निर्धारित मात्रा में सरकारी काम-काज करते हैं, को हिंदी प्रोत्साहन भत्ता स्वरूप निम्नलिखित राशि प्रति माह प्रदान किए जाते हैं-

आशुलिपिकों को	-	₹ 240/-
टंककों को	-	₹ 160/-

साथ ही हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त/पास करने पर एकमुष्ट पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त इन्हें एक वर्ष तक वैयक्तिक वेतन भी प्रदान किया जाता है।

11. अंशकालिक हिंदी ग्रंथालयी को मानदेय

रेलों पर स्थापित हिंदी पुस्तकालयों में कार्यरत अंशकालिक ग्रंथालयी को पारिश्रमिक स्वरूप (मानदेय) ₹ 500/- की राशि दी जाती है।

12. राजीव गाँधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना

पुरस्कार	पुरस्कार राशि
प्रथम पुरस्कार (एक)	₹ 2,00,000/- (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न)
द्वितीय पुरस्कार (एक)	₹ 1,50,000/- (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न)
तृतीय पुरस्कार (एक)	₹ 75,000/- (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न)
सांत्वना पुरस्कार (दस)	₹ 10,000/- (प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न)

नोट- पुस्तक आधुनिक तकनीकी/विज्ञान की किसी विधा पर हो सकती है, जैसे-

- (I) इंजीनियरी, इलेक्ट्रानिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, भौतिकी, जैव विज्ञान, ऊर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान, आयुर्विज्ञान, रसायन विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, मनोविज्ञान आदि।
- (II) सम-सामयिक विषय जैसे- उदारीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, मानवाधिकार, प्रदूषण आदि।

इस योजना के अंतर्गत पुस्तक सामान्यतः 100 पृष्ठ से कम नहीं होनी चाहिए।

13. हिंदी शिक्षण योजना के अधीन हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाले प्रोत्साहन नकद पुरस्कार की राशि तथा निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर मिलने वाले एकमुष्ट पुरस्कार निम्नलिखित हैं-

13.1 हिंदी भाषा प्रशिक्षण

एकमुष्ट पुरस्कार की राशि

प्रबोध

- (क) 70% या इससे अधिक अंक $\bar{\text{र 1600/-}}$
प्राप्त करने पर
- (ख) 60% या इससे अधिक परंतु 70% $\bar{\text{र 800/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर
- (ग) 55% या इससे अधिक परंतु 60% $\bar{\text{र 400/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर

प्रवीण

- (क) 70% या इससे अधिक अंक $\bar{\text{र 1800/-}}$
प्राप्त करने पर
- (ख) 60% या इससे अधिक परंतु 70% $\bar{\text{र 1200/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर
- (ग) 55% या इससे अधिक परंतु 60% $\bar{\text{र 600/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर?

प्राज्ञ

- (क) 70% या इससे अधिक अंक $\bar{\text{र 2,400/-}}$
प्राप्त करने पर
- (ख) 60% या इससे अधिक परंतु 70% $\bar{\text{र 1,600/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर
- (ग) 55% या इससे अधिक परंतु 60% $\bar{\text{र 800/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर

13.2 हिंदी टंकण

- (क) 97% या इससे अधिक अंक $\bar{\text{र 2,400/-}}$
प्राप्त करने पर
- (ख) 95% या इससे अधिक परंतु 97% $\bar{\text{र 1,600/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर
- (ग) 90% या इससे अधिक परंतु 95% $\bar{\text{र 800/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर

13.3 हिंदी आशुलिपि

- (क) 95% या इससे अधिक अंक $\bar{\text{र 2,400/-}}$
प्राप्त करने पर
- (ख) 92% या इससे अधिक परंतु 95% $\bar{\text{र 1,600/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर
- (ग) 88% या इससे अधिक परंतु 92% $\bar{\text{र 8,00/-}}$
से कम अंक प्राप्त करने पर

13.4 निजी प्रयत्नों से हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि की परीक्षाएँ पास करने पर एकमुष्ट पुरस्कार-

एकमुष्ट पुरस्कार की राशि

1. हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध परीक्षा $\bar{\text{र 1,600/-}}$
2. हिंदी शिक्षण योजना की प्रवीण परीक्षा $\bar{\text{र 1,500/-}}$
3. हिंदी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा $\bar{\text{र 2,400/-}}$
4. हिंदी शिक्षण योजना की टंकण परीक्षा $\bar{\text{र 1,600/-}}$
5. हिंदी शिक्षण योजना की आशुलिपि परीक्षा $\bar{\text{र 2,400/-}}$

वासंती हवा का एक झोंका आया और राहगीर के तन-मन को शीतल सुगंध से भरकर चला गया। राहगीर उसके पीछे कहता हुआ दौड़ा- 'ओ शीतल समीर! मुझे भी अपने साथ ले चलो। मुझे भी तुम्हारे जैसा बनना है।' हवा बोली- 'सोचने से इस संसार में किसी को कुछ नहीं मिलता। पुरुषार्थ करो तो तुम अपने भीतर सब कुछ पा लोगे।'



14.08.15 को निर्माण संगठन/गोरखपुर में आयोजित गोमवासी तुलसीदास जी की जयंती के अवसर पर स्वागत उद्घोषण करने श्री एस.एस.बर्मा, मुरादा/निर्माण व अन्य अधिकारीगण



14.08.15 को निर्माण संगठन/गोरखपुर में आयोजित गोमवासी तुलसीदास जी की जयंती के अवसर पर गोमवासी जी के बारे में विस्तृत व्याख्यान देने श्री जी. के राय, उप म.इ./निर्माण



22.05.15 को इन्जनियर गेंडल में राजभाषा प्रशिक्षण प्रतिष्ठान के विदेशी टीम को धारभाषा प्रदान करने अपर वरिधि श्री संजीव गेंदल साथ में श्री राजेंद्र कुमार, राधि



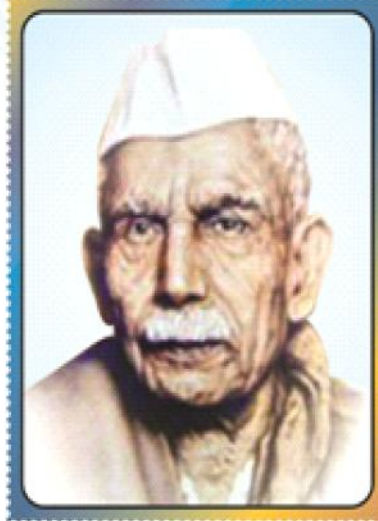
22.07.15 को सखनर गेंडल के कोलपुर जे, पर श्री कृष्ण बिहारी मिश्र जी की जयंती के अवसर पर प्रो.अमन बिहारी, पूर्व अध्यक्ष, आर.एस.पी.पी.जी.कालेज/कोलपुर का स्वागत करने श्री सुरेंद्र कुमार, सहा. बॉर्ड, कोलपुर



12.08.15 को कारागारी गेंडल के कलरा जे, पर आचार्य शिवपूजन सहाय अध्यक्ष व कृत्रिय विचार गोष्ठी में स्टेशन कर्मचारीको को संबोधित करने डा. संजय कुमार सिंह, राधि



04.08.15 को कारागारी गेंडल के गेंडल प्रतिष्ठान केंद्र मंदुवाडीह में विदेशी हिंदी कार्यपालन में व्याख्यान देने डा. संजय कुमार सिंह, राधि व कर्मचारीगण



माखनलाल चतुर्वेदी
04.04.1889ई. - 30.01.1968ई.
बाघई, होशंगाबाद (म.प्र.)



सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
07.03.1911ई. - 04.04.1987ई.
कुशीनगर/कसबा (उ.प्र.)



भीष्म साहनी
08.08.1915ई. - 11.07.2003ई.
रावलपिंडी (पाकिस्तान)



रामवृक्ष बेनीपुरी
1899ई. - 1968ई.
बेनीपुरी/मुजफ्फरपुर (बिहार)

श्री ओ. पी. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित एवं
श्री नानी चुंदूरी, वरि. प्रबंधक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा मुद्रित